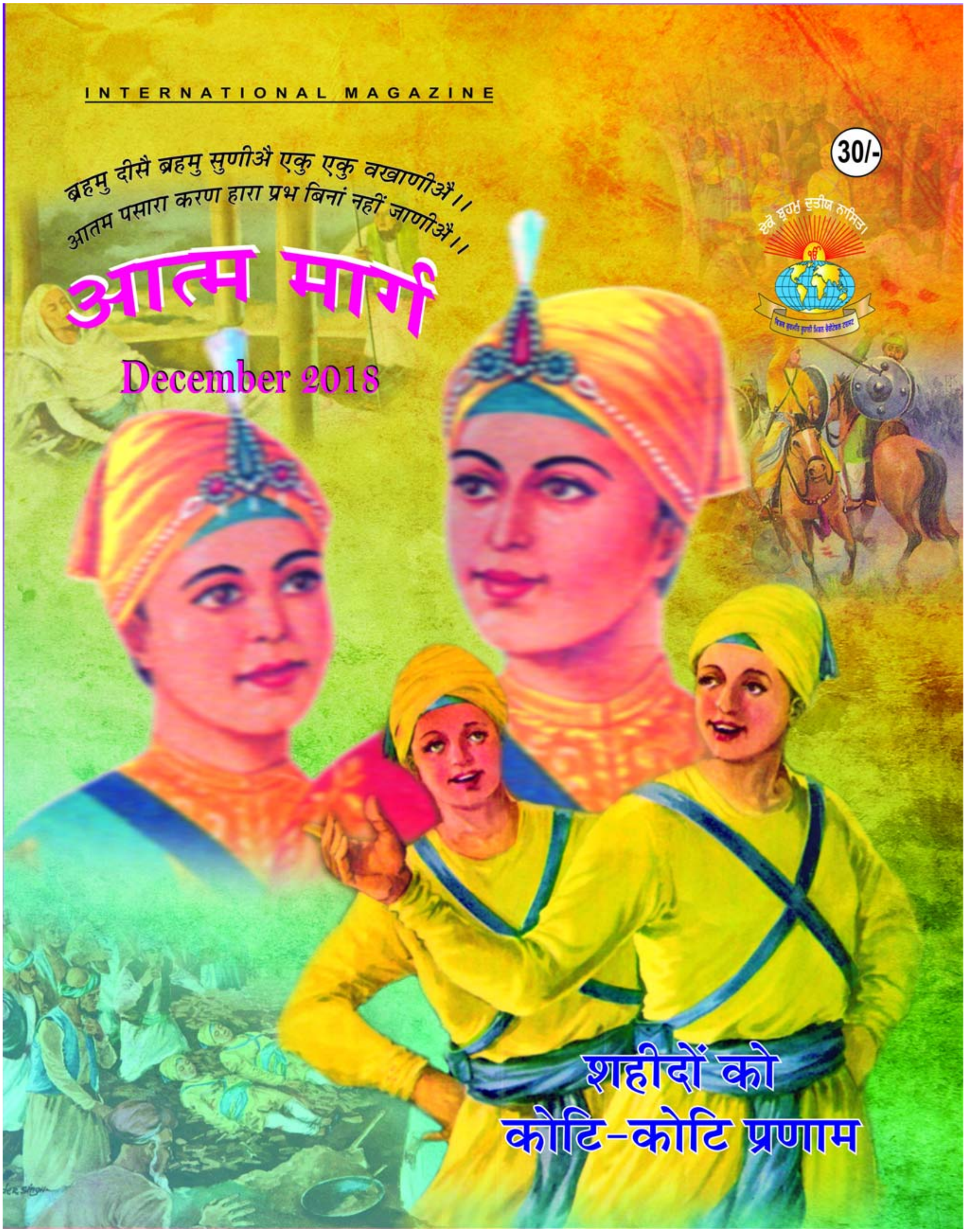
INTERNATIONAL MAGAZINE
30/-
ब्रहमु दीसै ब्रहमु सुणीअै एकु एकु वखाणीअै।।
आतम पसारा करण हारा प्रभ बिनां नहीं जाणीअै।।
आत्म मार्ग
December 2018
शहीदों को
कोटि-कोटि प्रणाम

30-31 अक्टूबर, 1-2 नवम्बर को रतवाड़ा साहिब में आयोजित किए गए महान गुरमति समागम के दौरान सन्त, महापुरुष, कवीशरी, रागी व ढाडी जत्थे, कथावाचक विद्वानजन, स्कूलों के बच्चे संगत को कथा-कीर्तन द्वारा कृतार्थ करते हुए

आत्म मार्ग

वर्ष तेइसवां - अंक ग्याहरवां, दिसम्बर 2018

गुरुद्वारा ईशर प्रकाश रतवाड़ा साहिब

संचालक

श्रीमान सन्त बाबा वरियाम सिंह जी महाराज (ब्रह्मलीन)
तथा संत माता (बीजी) रणजीत कौर जी (ब्रह्मलीन)

चेयरमैन	एडिटर-इन-चीफ
सन्त बाबा लखबीर सिंह जी	सन्त बाबा हरपाल सिंह जी
प्रबन्ध सम्पादक	मुख्य सम्पादक
भाई (डा.) सुखविंदर सिंह	डा. जगजीत सिंह (97798 16909)

मासिक पत्रिका न पहुँचने सम्बन्धी पूछताछ

यदि आपको माह की 15 तारीख तक आत्म मार्ग पत्रिका प्राप्त नहीं हो पाती है तो आप कृप्या निम्नलिखित सम्पर्क नम्बरों पर कार्यलय समय प्रातः 10.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक सम्पर्क करने की कृपा करें -

सम्पर्क न. - **84378-12900, 94172-14391, 94172-14379**

Email : atammarg1@yahoo.co.in

Postal Address for any Enquiry, Money Order's :

'ATAM MARG' MAGAZINE
Gurdwara Ishar Parkash, Ratwara Sahib (New Chandigarh) P.O. Mullanpur Garibdas, Teh. Kharar, Distt. S.A.S. Nagar (MOHALI) - 140901, Pb. India

SUBSCRIPTION - शुल्क (देश)

वार्षिक	आजीवन सदस्यता	प्रति कापी
300/-	3000/-	30/-
320/-	3020/-	(For outstation cheques)

SUBSCRIPTION FOREIGN (विदेश)

	Annual	Life
U.S.A.	60 US$	600 US$
U.K.	40 £	400 £
Canada	80 Can $	800 Can $
Australia	80 Aus $	800 Aus $

प्रकाशन के समस्त अधिकार सुरक्षित हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक सन्त बाबा हरपाल सिंह जी ने 'आत्म मार्ग' जै आफ सैट प्रिंटर्ज, 905 इन्डस्ट्रियल एरिया, फेज़-2, चण्डीगढ़ से छपवा कर मुख्य कार्यालय 'आत्म मार्ग' रतवाड़ा साहिब, डाकखाना मुल्लांपुर, तहसील खरड़, एस.ए.एस. नगर (मोहाली), पंजाब से प्रकाशित किया।

Please visit us on internet at :-
For Atam Marg Email : atammarg1@yahoo.co.in,
Website & Live video -

www.ratwarasahib.in
www.ratwarasahib.org } **(Every sunday)**

Email: sratwarasahib.in@gmail.com

विदेशों में आत्म मार्ग की शाखाएँ

अमेरिका - बाबा सतनाम सिंह अटवाल
फोन तथा फैक्स : 001-408-263-1844

कैनेडा - भाई सरमुख सिंह पंनू, वैनकूवर
फोन : 001-604-433-0408

भाई तरसेम सिंह बैंस - मोबाइल 001-604-862-9525
फोन : 001-604-288-5000

भाई जसबीर सिंह राणू - फोन : 001-604-589-9189

इंगलैंड - बीबी गुरबख्श कौर तथा भाई जगतार सिंह जग्गी
फोन:0044-121-200-2818 फैक्स :0044-121-200-2879,

भाई अरविंदर सिंह (राज) मोबाइल:0044-7968734058

आस्ट्रेलिया : बीबी जस्प्रीत कौर: मोबाइल-0061-406619858

रतवाड़ा साहिब की संस्थाओं के सम्पर्क नम्बर

* आत्म मार्ग मैगज़ीन (पंजाबी, हिन्दी तथा अंग्रेजी)
9417214391, 9417214379, 8437812900

* गुरू गोबिंद सिंह विद्या मन्दिर सीनियर सैकण्डरी स्कूल **(CBSE) - 0160-2255003**

* माता साहिब कौर मुफ्त सिलाई सैंटर - **96461-01996**

* सन्त वरियाम सिंह मैमोरियल पब्लिक सीनियर सैकण्डरी स्कूल **(PSEB)** अंग्रेज़ी माध्यम - **95920-55581**

* सन्त वरियाम सिंह चैरिटेबल अस्पताल (मुफ्त)
98786-95178, 92176-93845

* इंटरनैशनल डिवाइन स्कूल आफ़ नर्सिंग -
94172-14382

* इंटरनैशनल डिवाइन कालेज आफ़ ऐजूकेशन (बी. एड.)
94172-14382

* अकाल वृद्ध आश्रम (मुफ्त) **98157-28220**

विशेष जानकारी के लिए

श्री मान जी	-	98551-32009
श्री आखण्ड पाठ साहिब बुकिंग	-	94647-12900
आडियो-वीडियो लाईब्रेरी	-	98728-14385, 98555-28517
केवल टी.वी. नेटवर्क	-	94172-14385

अन्य सम्पर्क नम्बर

98889-10777, 96461-01996, 9417214381

विषय-सूची

1. सम्पादकीय 5
   भाई (डा.) सुखविन्दर सिंह

2. बारहमाहा 7
   डा. जगजीत सिंह

3. छोटे साहिबजादों की बिलक्षण कथा 11
   सन्त बाबा वरियाम सिंह जी

4. बाबाणियाँ कहानियाँ 24
   सन्त बाबा वरियाम सिंह जी

5. श्री गुरू तेग बहादुर जी 28
   सन्त बाबा वरियाम सिंह जी

6. आत्म ज्ञान 35
   सन्त बाबा वरियाम सिंह जी

7. ब्रहम गिआनी सद जीवै नहीं मरता 38
   सन्त बाबा हरपाल सिंह जी

8. प्यारे महापुरुष सन्त बाबा वरियाम सिंह जी तथा माता रणजीत कौर जी की मधुर स्मृति में आयोजित महान गुरमति समागम 43

9. गुरबाणी अर्थ भण्डार 47
   सन्त हरी सिंह जी 'रन्धावे वाले'

10. नूरानी मिलाप 51
    भाई (डा.) सुखविन्दर सिंह

11. स्वामी राम जी के प्रेरणात्मक विचार 52
    डा. स्वामी राम जी

12. विशेष जानकारी - बैंक खाता, आत्म मार्ग मैगजीन सदस्यता प्रारूप, अस्पताल जानकारी, तथा पुस्तक सूची 54

सम्पादकीय

(डा.) भाई सुखविन्दर सिंह

बोलीऐ सचु धरमु झूठु न बोलीऐ ॥
जो गुरु दसै वाट मुरीदा जोलीऐ ॥ अंग - 488

धर्म के दो रूप इस संसार में देखने को मिलते हैं। एक है इसका आन्तरिक रूप और दूसरा है बाह्य रूप। बाह्य रूप बाड़ के सदृश्य है जबकि आन्तरिक रूप फसल के सदृश्य है। बाह्य रूप, आन्तरिक रूप का व्यवहारिक रूप है जबकि आन्तरिक रूप, बाह्य रूप का सैद्धान्तिक रूप है। मनुष्य के अन्दर धर्म किस मात्रा में विद्यमान है, यह उसकी बाहरी क्रियाओं से ज्ञान हो जाता है। बाहरी चिन्हों का जो सिद्धान्त है उसकी रूपमानता अन्दर से होती है। गुरसिक्खी के अन्दर पाँच ककार धार्मिक चिन्ह हैं यानि कि जो पहरावा या वेश भूषा है वह गुरसिक्खी का बाहरी स्वरूप है लेकिन गुरसिक्ख के अन्दर ये धार्मिक चिन्ह सैद्धान्तिक रूप में बिराजमान हैं। इन धार्मिक चिन्हों का सैद्धान्तिक महत्व उसके अन्दर बिराजमान है। हाथों के द्वारा बुरे काम नहीं करने, विकारों को अपने अन्दर से समाप्त करना, ब्रह्मचर्य में पूरे रहना, सद्‌गुणों का धारणी बनना, इत्यादि सैद्धान्तिक गुणों पर गुरसिक्ख श्वास-श्वास पहरा देता है। आन्तरिक बुराइयों पर नियन्त्रण स्थापित करके, बाहरी तौर पर धार्मिक चिन्ह धारण करने की तागीद है और बाहरी रूप परम्परागत है तथा आन्तरिक रूप शाश्वत है। केवल बाहरी रूप में ही सज्जन ठग का व्यवहार ठग वाला होता लेकिन जब आन्तरिक तौर पर वह धर्म का धारणी बनता है तो वह भाई सज्जन बन जाता है और यहीं बस नहीं बल्कि उसे प्रचार की मंजी भी प्रदान कर दी जाती है।

यह खेल उसी समय घटित होता है जिस समय समर्थ सतगुरू की कृपा हो जाती है। कृपा से पहले उसका बाहरी रूप तो धार्मिक लोगों वाला था जबकि आन्तरिक तौर पर धर्म उसके आस पास भी नहीं था। आन्तरिक तौर पर तो वह राक्षस था, कसाई था जबकि बाहरी तौर पर वह धर्म का अलम्बरदार बना हुआ था। उसने धर्म के बाहरी चिन्ह तो धारण किए हुए थे लेकिन आन्तरिक तौर पर वह कसाई का ही रूप था। धन्य गुरू नानक साहिब ने उसके ऊपर कृपा की फलस्वरूप वह आन्तरिक तौर पर हिल गया तथा असली सज्जन या भाई सज्जन बन गया।

केवल बाहरी रूप तो धोखा भी हो सकता है। 80 प्रतिशत पाप तो भेष के नीचे ढके जा सकते हैं, ऐसा महापुरुषों का विचार है। पाखण्ड को भेष के नीचे किसी सीमा तक तो दबाया जा सकता है लेकिन हमेशा के लिए नहीं।

कूड़ निखुटे नानका ओड़कि सचि रही ॥ अंग - 953

सच ने तो एक दिन प्रकट होना ही है, सत्य बुलबुले की तरह से नहीं होता है बल्कि यह तो चट्टान की तरह से सख्त होता है। यह क्षणिक नहीं अपितु शाश्वत होता है। जब अधार्मिक व्यक्ति भेष का आश्रय लेता है तो 'उलटी बाड़ खेत कउ खाई' वाली स्थिति बन जाती है। बाड़ का काम तो खेत की रखवाली करना था लेकिन जब बाड़ ही खेत को या फसल को खाने लग जाए तो फिर खेत या फसल का क्या बनेगा? राजे का धर्म है न्याय करना, 'राजे चुली निआव की' लेकिन यदि राजा धर्म का केवल बाहरी रूप धारण करके धर्म का प्रयोग अपने लोभ या लालच वश ही करने लग पड़े तो फिर सार्थक परिणामों का निकल पाना अत्यन्त कठिन है। धर्म से रहित राजा कसाई का रूप धारण कर जाता है। यदि राजा बाग में से एक फल तोड़ता है तो उसके अनुयाई बाग को ही उखाड़ कर ले जाएँगे, ऐसा अनुभवी विद्धानों का कथन है।

राजे सीह मुकदम कुते ॥ जाइ जगाईन्‍ बैठे सुते ॥
अंग - 1288

इस विचार की पुष्टि गुरवाणी के माध्यम से भी होती है। इसी प्रकार की हालत तमाम राजाओं की श्री गुरू नानक देव जी के समय में थी। बाबा व बाबर के बीच धार्मिक स्वरूप का संघर्ष है। 'दराउल इस्लाम' तथा 'दराउ हरब' की पूर्णता का संघर्ष है। श्री गुरू नानक देव महाराज जी ने बाबर को चुनौती दी, तत्कालीन राजाओं को उच्च स्वर में उनके कर्तव्यों के प्रति जागरुक किया। बाबा नानक के अनुयाइयों के अन्दर धर्म का असली रूप है। बाह्य प्रकटीकरण भी उनमें तथा उनके अनुयाइयों में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई पड़ता है। 'संगत तथा पंगत' का सिद्धान्त 'नानक के घरि केवल नामु।।' (अंग - 1136) भाईचारा, ऊंच-नीच, बिना किसी भेदभाव से सबको परमात्मा की अंश समझ कर समानता का सिद्धान्त

चल रहा है -

दूखु न देई किसै जीअ पति सिउ घरि जावउ ॥
अंग - 322

के सिद्धान्त की पूर्णता है।

सभे साझीवाल सदाईन
तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ ॥ अंग - 97

सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥ अंग - 13

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥
अंग - 1350

उपर्युक्त सिद्धान्तों पर गुरू जी ने स्वयं पहरा दिया तथा सिक्खों को भी इन पर चलने की ताकीद की लेकिन समय के हाकिमों को सच्चे धर्म का यह रूप पसन्द नहीं आया।

बाबर के बाद अकबर तथा उसके बाद जहाँगीर, हिन्दोस्तान के तख्त पर बैठता है। जहाँगीर धार्मिक कट्टरतावश, गुरू घर के साथ झगड़ा करने लग पड़ा। वह सत्य के बोलबाले को बन्द करना चाहता था लेकिन हमेशा के लिए तो सत्य को समाप्त नहीं किया जा सकता है। फलस्वरूप पाँचवें महाराज जी की शहीदी हुई तथा छठे महाराज जी मीरी तथा पीरी (सन्त व सिपाही) की दो तलवारों को धारण करते हैं। चार धर्मयुद्ध लड़े जाते हैं और चारों में ही सच्चे धर्म की जीत होती है। जहाँगीर के बाद शाहजहाँ बादशाह, तख्त पर बैठता है और उसके बाद औरंगजेब। औरंगजेब ने दराउल इस्लाम के संघर्ष को आरम्भ किया कि सारे हिन्दोस्तान को मैं इस्लाम में ले आऊँ। इस्लाम को मानने वाला मोमन और अन्य सभी को वह काफिर समझता था। उसके अनुसार काफिरों को इस धरती पर रहने का कोई हक नहीं है। इसी संघर्ष में नौवें पातशाह तथा तीन गुरसिक्खों की शहीदी होती है। इस शहीदी के फलस्वरूप हिन्दू धर्म व मानवीय अधिकारों की रक्षा हुई। यथा -

तिलक जंञू राखा प्रभ ताका॥
कीनो बडो कलू महि साका॥

धन्य श्री गुरू तेग बहादर महाराज जी ने अपनी शहादत देकर मानवीय अधिकारों की रक्षा की तथा हिन्दू धर्म की डूबती हुई नौका को पार लगाया। लेकिन औरंगजेब के रक्तरंजित हृदय को अभी भी ठंडक प्राप्त नहीं हो सकी थी और इसी श्रृंखला में उसने दसवें महाराज जी की को भी अपने निशाने पर ले लिया। वास्तव में यह धर्म व अधर्म का संघर्ष था। एक तरफ धर्मयुद्ध का चाव था और दूसरी तरफ दराउल इस्लाम का बोलबाला था। उसने अन्य धर्म वालों को बलातपूर्वक अपने धर्म में प्रवेश करने का बीड़ा उठा लिया था। धर्म की व्याख्या गलत तरीके से की गई। कुरान की कसमें खाकर कुरान के सिद्धान्तों की धज्जियाँ उड़ाई गईं। उसने पावन कुरान को दराउल इस्लाम के रूप में देखना शुरू कर दिया। लाखों बेदोष लोगों का खून बहाकर अल्लाह की खुशी के पात्र बनने का भ्रम खड़ा किया गया। संघर्ष के परिणाम स्वरूप फिर साहिबजादों की शहीदियाँ अनेकानेक गुरसिक्खों की शहीदियाँ, जगत माता गुजर कौर जी की शहीदी, हमारे सामने आ जाती है। यह था धर्म का आन्तरिक रूप। बाह्य रूप में आन्तरिक स्वरूप की तर्जमानी करते हुए अनेकों गुरसिक्खों ने शहादतों के जाम पिए। उनके आन्तरिक व बाह्य रूप में एक समानता थी। यथा -

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ अंग - 1412

सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत ॥
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ॥
अंग - 1105

के सिद्धान्तों के व्यवहारिक रूप में खालसे ने शहादतों को अन्जाम दिया। क्या आज औरंगजेब के उस रवैये की कोई सार्थकता है? क्या कोई उसकी तर्जमानी करने वाला है? इसका जवाब नकारात्मक ही आएगा। आज औरंगाबाद के अन्दर उसकी कब्र पर घास-फूस व झाड़ियाँ उगी हुई हैं और उनकी पूछ पड़ताल करने वाला कोई नहीं है। यह दशा उस अधार्मिक राजा की हुई जिसने झूठ का सहारा लेकर धर्म का गलत अर्थों में प्रयोग किया। गुरू कलगीधर महाराज जी ने जफरनामे के अन्दर उसके द्वारा किए गए पापों की तस्वीर प्रस्तुत की जिन्हें पढ़कर वह शर्मसार हुआ, किए गए गुनाहों की तस्वीर उसके सामने आई फलस्वरूप उसने खूब पाश्चाताप भी किया, लेकिन तब तक समय बीत चुका था। उसके पापों के द्वारा भरा हुआ बर्तन फूट गया और पाश्चाताप करता हुआ वह परलोक सिधार गया। उसकी बसीयत के अन्तिम शब्द जो कि इतिहासकारों के अनुसार उसकी कब्र पर अंकित हैं, 'लम्हा आया था, जिन्दगी में बहुत गुनाह किए हैं, अकेला जा रहा हूँ, पता नहीं किस गुनाह की क्या सजा मिलेगी।' इतना कहकर उसके प्राण पंखेरू उड़ गए। ये उसके अन्तिम शब्द थे। यह दशा उस अत्याचारी व जालिम बादशाह की हुई। दूसरी तरफ 'शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले' श्री फतहगढ़ साहिब तथा चमकौर साहिब की उस पावन धरती पर लाखों श्रद्धालुजन आकर नतमस्तक होते हैं और

(शेष पृष्ठ 10 पर)

पोखि

(मार्गशीष माह की संक्रान्ति - 15 दिसम्बर, 2017 दिन शुक्रवार)

(डा.) जगजीत सिंह

बारह माहा माँझ महला ५ घरू ४

पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलआि हरि नाहु ॥
मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा साहु ॥
ओट गोविंद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु ॥
बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥
जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ।
करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ीआहु ॥
बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥
सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥
पोखु सोहंदा सरब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु ॥

अंग - 134

शब्दार्थ - पोखि = पूस माह में, तुखारु = कोहरा, न विआपई = प्रभाव नहीं डाल पाता है, कंठि = गले में, नाहु = नाथ, पति, बेधिआ = वेध दिया जाता है, चरनारबिंद = चरण-कमल, दरसनि = दीदार, दर्शन, साहु = एक-एक श्वास, वृत्ति, लाहु = लाभ, बिखिआ = माया, साधु = गुरु, गुण गाहु = गुणों की विचार, गुणों में डुबकी, जह ते = जिस प्रभु जी से, समाहु = लिव, करु = हाथ, गहि = पकड़ कर, बारि जाउ = मैं उस पर बलिहार जाती हूँ, बेरीआ = बारी, अगम = अगम्य, जहाँ तक पहुँचा न जा सके, अगाहु = अथाह, गहरे हृदय वाला, सरम = लाज, सरम पई = इज्जत रखनी पड़ी, दरि = द्वार पर, सोहंदा = सुन्दर लगता है।

पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलआि हरि नाहु ॥
मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा साहु ॥

सरल अर्थ - पूस के माह में अत्यन्त कड़ी ठंडक लगती है, कोहरा प्रभावित करता है तथा इससे बचने के लिए साधन ढूँढ़े जाते हैं, पौधों को कोहरे से बचाने के लिए यह मनुष्य कई उपाय किए जाते हैं, पूस से बचने के लिए कई प्रकार से यत्नशील होता है। गुरू जी का विचार है कि जो जीव प्रभु जी के प्यार में लीन रहते हैं, उन्हें न तो ज्येष्ठ व अषाढ़ की तपिश तंग कर सकती है और न उन्हें पूस माह की सर्दी ही तंग कर सकती है। उनकी सुरति तो सदैव ही प्रभु चरणों में जुड़ी रहती है और वे सदैव ही आत्मिक आनन्द में मग्न रहते हैं, अर्थात प्रभु जी की याद में प्रत्येक ऋतु उनके लिए सुहावनी होती है।

गुरू महाराज जी पूस माह के माध्यम से उपदेश करते हैं कि पूस माह की ठंडक व कोहरा उस जीव रूपी स्त्री को तंग नहीं करता है जिसके गले के साथ प्रभु-पति लगा हुआ है यानि कि जिसके हृदय में सदैव प्रभु जी का प्यार व्याप्त रहता है। (पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु।।) कारण यह है कि गर्मी व सर्दी के प्रभाव को मन कबूल करता है। जिसके मन की वृत्ति सांसारिक है, उसे गर्मी व सर्दी का गहरा अहसास होना स्वाभाविक ही है लेकिन जिसकी वृत्ति प्रभु-दीदार में जुड़ी रहती है, जिसका मन प्रभु जी के चरण कमलों में जुड़ा रहता है उसे पूस माह का पाला तनिक भी तंग नहीं कर सकता है यानि कि उसके ऊपर उस भयंकर ठंडक का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। (मन बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा साहु।)

जिस जीव रूपी स्त्री ने गोबिंद गोपाल का सहारा लिया है, सृष्टि के पालक का सहारा लिया है तथा प्रभु पति जी की सेवा को ही जीवन का धुरा बनाया है, लाभार्जन किया है (ओट गोविंद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु) तथा जिसने गुरु जनों व गुरु के प्यारों के साथ मिलकर, उनकी संगत में स्वयं को जोड़ा है, उन्हें न तो विषय-वासनाओं का कोई भी विष दुखी कर सकता है और न ही उनके ऊपर माया का कोई दोष ही अपना प्रभाव डाल सकता है अर्थात कोई उनका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता है। (विखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु।।)

जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ।
करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ीआहु ॥

ऐसी जीव रूपी स्त्री अपनी वास्तविकता की पहचान कर लेती है जिस परमात्मा से उनका अस्तित्व कायम हुआ है यानि कि जिसके द्वारा वे पैदा हुए हैं, उस मूल के साथ वे सदैव जुड़े रहते हैं अर्थात उनकी लिव सदैव प्रभु प्रीति में मग्न

रहती है (जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु)

करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ीआहु ॥

प्रभु प्रियतम सच्चे प्रेमी के प्यार को कबूल करता है और अपनी कृपा दृष्टि के द्वारा उसके हाथ को पकड़ कर उसे अपने चरणों के साथ जोड़ लेता है और दोबारा उसे बिछोड़ा कभी भी नहीं होता है यानि कि फिर उसे हमेशा-हमेशा के लिए मिलाप हो जाता है (करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न बिछुड़ीआहु।।)

बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥

ऐसी दशा प्राप्त करके जीव रूपी स्त्री उस प्रियतम पर बार-बार बलिहार जाती है जो कि अगम्य है, अगाह है तथा अत्यन्त गहरा है (बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु) निःसन्देह वह अगम्य है, अगाह है लेकिन वह अत्यन्त दयालु है, इसीलिए वह अपने शरणागतों की लाज सदैव ही रखता है यह उसका बिरद है -

सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥

इस प्रकार से पूस का महीना उन जीव रूपी स्त्रियों के लिए अत्यन्त सुखदाई व सुहावना होता है, जिनके ऊपर इस माह में बेपरवाह प्रभु-पति की कृपा हो जाए। (पोख सोहंदा सरब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु)

व्याख्या -

पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु ॥
मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा साहु ॥

अंग - 134

सुहागिनों या परमात्मा के साथ जुड़ी हुई जीव स्त्रियों को पूस माह की कड़क सर्दी स्पर्श भी नहीं कर पाती है यानि कि उन्हें दुखों की ठंडक व्याकुल नहीं करती है अथवा माया की ठंडक या माया का संताप दुखी नहीं करता है क्योंकि उनके हृदय में प्रभु जी निवास करते हैं, जो कि समस्त सुखों को देने वाला तथा दुखों का नाश करने वाला है। जहाँ पर सुख सागर प्रभु निवास करता है, वहाँ पर नाम की आराधना होती है, उस जीव रूपी स्त्री के मन में कोई भी सोच, चिन्ता या दुख उत्पन्न नहीं होता है यानि कि उसके मन तथा तन दोनों ही सहजानन्द में विचरण करते हैं। ऐसा गुरवाणी का विश्वास है -

हरि सिमरत मनु तनु सुखी बिनसी दुतीआ सोच ॥
नानक टेक गुोपाल की गोविंद संकट मोच ॥

अंग - 813

सुहागिनों का मन तो चरण कमलों के साथ जुड़ गया है, इसलिए उनके मन में अन्य किसी का तो ख्याल ही नहीं आता है अर्थात उनके मन में तो अपने पति जी के दीदार करने की लालसा सदैव ही बनी रहती है। उसके नाम की मस्ती में सुख ही सुख है यानि कि वहाँ पर दुखों का कोई भी स्थान नहीं है। एक सुहागिन अपने मन की अवस्था या प्रभु मिलाप के आनन्द के अनुभव को अपनी माँ के साथ इस प्रकार से प्रकट करती है -

माई मेरे मन को सुखु ॥
कोटि अनंद राज सुखु भुगवै
हरि सिमरत बिनसै सभ दुखु ॥ 1 ॥ रहाउ ॥
कोटि जनम के किलबिख नासहि
सिमरत पावन तन मन सुख ॥
देखि सरूपु पूरनु भई आसा
दरसनु भेटत उतरी भुख ॥ 1 ॥
चारि पदारथ असट महा सिधि
कामधेनु पारजात हरि हरि रुखु ॥
नानक सरनि गही सुख सागर
जनम मरन फिरि गरभ न धुखु ॥ 2 ॥ 10 ॥ 29 ॥

अंग - 717

ओट गोविंद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु ॥
बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥

सुहागिनें या भाग्यशाली स्त्रियाँ तो केवल पति परमात्मा का सहारा ही चाहती हैं और वे उसी की सेवा तथा प्रेमा भक्ति का लाभ प्राप्त करती हैं। वे तो साधु, सन्तजनों व महापुरुषों की संगत में मिलकर प्रभु जी का यशगान करके आनन्द उठाती हैं, जिस कारण से माया के जहर का उनके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। ऐसा उपदेश आप जी अन्य महीनों में भी करते हैं। जेठ माह में भी आप जी फुरमान करते हैं कि अपने निजी यत्नों के द्वारा ही यह प्राप्ति नहीं हो पाती है और केवल प्रभु जी के साथ जुड़े हुए सन्त, महापुरुष या हरिजन ही इस प्राप्ति में मार्गदर्शन कर सकते हैं -

आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवंनि ॥
साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि ॥ अंग - 134

मार्गशीष माह में भी ऐसा ही फुरमान है -

तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह ॥
साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ॥

अंग - 135

आश्विन माह में आप जी फुरमान करते हैं कि -

संत सहाई प्रेम के हउ तिन कै लागा पाइ॥

चैत्र माह का उपदेश है -

चेति गोविंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा।। संत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा।। फाल्गुन माह में भी बताया है कि

प्रभु रूपी सज्जन के मिलाप का आनन्द सन्त महापुरुषों की कृपा के द्वारा ही हुआ है, *फलगुणि अनंद उपारजना हरि सजण प्रगटे आइ।। संत सहाई राम के करि किरपा दीआ मिलाइ।।* प्रभु मिलाप का सौभाग्य गुरू जी की कृपा, गुरू शब्द व अमृत नाम के द्वारा प्राप्त होता है।

मनि तनि रवि रहिआ जगजीवनु गुर सबदी रंगु माणी॥
अंग - 1109

अर्थात -

नानक मेलि लई गुरि अपणै घरि वरु पाइआ नारी ॥
अंग - 1109

सतगुरू जी की मदद से जीव रूपी स्त्री के हृदय रूपी घर में प्रभु रूपी पति से मिलाप हो जाता है -

घरि सेज सुहावी जा पिरि रावी
गुरमुखि मसतकि भागो ॥
नानक अहिनिसि रावै प्रीतमु
हरि वरु थिरु सोहागो ॥ *अंग - 1110*

जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ॥
करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ीआहु ॥
बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥
सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥

प्रभु जी से विछुड़ी हुई जीवात्मा को गुरू जी की कृपा की बदौलत जब अपने मूल रूप का ज्ञान प्राप्त हो जाता है तो वह गुरू जी की कृपा से प्रभु प्रेम में लीन होकर पुनः अपने प्रभु जी में समा जाती है, जब परमात्मा अपनी दया-दृष्टि के द्वारा प्रभु जी से बिछुड़ी आत्मा को पुनः अपने आप से मिला लेता है, फलस्वरूप उसे दोबारा बिछोड़े का दुख सहारना नहीं पड़ता है -

यह मिलाप प्रभु जी की कृपा ही है -

सोहागणी किआ करमु कमाइआ ॥
पूरबि लिखिआ फलु पाइआ ॥
नदरि करे कै आपणी आपे लए मिलाइ जीउ ॥
अंग - 72

यह सहोगा शाश्वत होता है -

सोहागणी आपि सवारीओनु लाइ प्रेम पिआरु॥
सतिगुर कै भाणै चलदीआ नामे सहजि सीगारु ॥
अंग - 426

गुरू को समर्पित गुरसिक्ख व गुरमुख प्यारे हमेशा प्रभु मिलाप का आनन्द उठाते हैं -

ओह रलाई किसै दी ना रलै जिसु रावे सिरजनहारु ॥
नानक गुरमुखि सदा सुहागणी
जिसु अविनासी पुरखु भरतारु॥ *अंग - 786*

सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥
पोखु सोुहंदा सरब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु ॥

जो जीव रूपी स्त्रियाँ शेष संसार के सारे सहारों को छोड़कर एक परमात्मा का सहारा ही रखते हैं यानि कि जो केवल पूर्ण पुरुष की शरण में आती है, वह कृपावान परमात्मा अपने द्वार पर गिर पड़े लोगों की लाज तो अवश्य ही रखता है। ऐसा उसका स्वभाव ही है -

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै
इहु बिरदु सुआमी संदा ॥ *अंग - 544*

ऐसी महान आत्माएँ हमेशा ही मिलाप का आनन्द उठाती हैं। पूस का महीना उनके लिए सारे सुखों का श्रोत सिद्ध होता है और वे हउमै तथा माया के बन्धनों व आवागमन के दुखों से मुक्त होकर हमेशा के लिए आनन्द स्वरूप प्रभु जी में समा जाते हैं।

राग तुखारी में प्राप्त गुरू नानक देव जी बारहमाहा में से पूस माह का पाठ तथा उसकी सरल व्याख्या -

पोखि तुखारु पड़ै वणु त्रिणु रसु सोखै ॥
आवत की नाही मनि तनि वसहि मुखे ॥
मनि तनि रवि रहिआ जगजीवनु
गुर सबदी रंगु माणी ॥
अंडज जेरज सेतज उतभुज घटि घटि जोति समाणी ॥
दरसनु देहु दइआपति दाते गति पावउ मति देहो ॥
नानक रंगि रवै रसि रसीआ
हरि सिउ प्रीति सनेहो ॥ 14 ॥ *अंग - 1109*

मार्गशीष का महीना सुखदाई तथा सुहावनी ऋतु का महीना माना जाता है लेकिन पूस के महीने में ठंडक जाती हैं। 'जो ब्रहिमंडे सोई पिंडे' जो कुछ भी बाहर घटित होता है, उसका हमारे आन्तरिक भाग से बहुत अधिक जुड़ाव होता है। यदि व्यक्ति के अन्दर प्रभु-प्यार की गर्माहट हो, साईं के मिलाप के लिए तड़प हो, नाम-वाणी प्यार हो, गुरू-दर्शनों की लालसा हो तो फिर कोहरा व कड़ाके की ठंडक कोई भी प्रभाव नहीं डाल पाती है यानि कि किसी भी प्रकार से मार्ग को अवरुद्ध नहीं कर पाती है। नाम की ठंडक में विचरण करता हुआ प्राणी जिस प्रकार से ज्येष्ठ व अषाढ़ की तपिश से निर्लिप्त रहता है, उसी प्रकार से प्रभु प्रेमी की गर्माहट को जीने वाले प्राणी को पूस व माघ की सर्दी कुछ भी नहीं कहती है यानि कि उसके लिए तो प्रत्येक ऋतु सुहावनी होती है।

पूस के माह के प्रति श्री गुरू नानक देव जी फुरमान

करते हैं कि इस माह में घना कोहरा पड़ता है और इसी वजह से सारी वनस्पति व घास आदि में से रस सूख जाता है, ठीक इसी प्रकार से जिस मनुष्य के अन्दर से प्रभु जी की याद विस्मृत हो जाती है, उसके अन्दर से प्राकृतिक तौर पर रूखापन उत्पन्न हो जाता है। उसके जीवन को सांसारिक वैर-विरोध ठंडा कर देते हैं जैसे कि फुरमान है -

बैर बिरोध काम क्रोध मोह ॥
झूठ बिकार महा लोभ ध्रोह ॥
इआहू जुगति बिहाने कई जनम ॥
नानक राखि लेहु आपन करि करम ॥ अंग - 268

जिस प्रकार से कोहरा और पाला, वनस्पति के रस को सुखा देता है, उसी प्रकार से प्रभु प्रेम रहित हृदय रसहीन हो जाता है। (पोखु तुखारु पड़ै वणु त्रिणु रसु सोखै) इसलिए श्री गुरू नानक देव जी हम सब साधारण जीवों की अगुवाई करते हुए विनती करते हैं कि हे प्रभु जी! तुम आकर मेरे मन में, मेरे तन में व मेरे मुँह में क्यों नहीं बसते हो? (आवत की नाही, मनि तनि वसहि मुखे) ताकि तुम्हारे प्यार में भीगकर मेरा खालीपन व रुखापन दूर हो जाए, लेकिन प्रभु तो कहीं दूर नहीं है, बस यह तो हमारी अज्ञानता व लापरवाही के कारण ही दूर प्रतीत होता है। यहाँ पर गुरू जी हमें यह समझ प्रदान करते हैं कि जो सारे जगत का आधार है, वह तो प्रत्येक जीव के अन्दर पहले ही निवास कर रहा है। गुरू शब्द में जुड़ने से इस प्रकार का अनुभव प्राप्त होता है और प्रभु-मिलाप का आनन्द प्राप्त होता है (मनि तनि रवि रहिआ जगजीवनु गुर सबदी रंगु माणी) साथ ही यह समझ प्राप्त होती है कि चारों खणियों (अंडज, जेरज, सेतज तथा उत्भुज) के समस्त जीवों में यानि कि घट घट में प्रभु जी की ज्योति समाई हुई है। (अंडज जेरज सेतज उतभुज घटि घटि जोति समाणी) गुरू जी प्यारे प्रभु जी के पास विनती करते हैं कि हे दयालु प्रभु जी! मुझे आप अपने दीदार प्रदान करो, मुझे उत्तम बुद्धि प्रदान करो जिसके द्वारा मैं ऊँची आत्मिक अवस्था प्राप्त कर सकूँ (दरसन देहु दइआ पति दाते गति पावउ मति ऐहो) गुरू महाराज जी कथन करते हैं कि जब किसी प्रेमी पुरुष के अन्दर प्रभु प्रेम का फव्वारा फूटता है यानि कि उसका आन्तरिक सम्बन्ध परमात्मा से जुड़ जाता है तो वह प्रेमी प्रभु प्रेम में जुड़कर उसके प्यार के गीत गाता है या उसका यशगान करता है तथा महानन्द का अनुभव करता है। (नानक रंगि रवै रसि रसीआ हरि सिउ प्रीति सनेहो)

अर्थात प्रभु प्रेम में मनुष्य के अन्दर आत्म रस लबालब भर जाता है और फिर 'पोखि तुखारु' का उसके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। प्रभु प्रेम की गर्माहट के कारण प्रभु-प्रेम में लीन जीवों को पाला कुछ नहीं कहता है। नाम रस में सराबोर लोगों के लिए प्रत्येक ऋतु (ग्रीष्म, शरद व वर्षा) सुहावनी होती है क्योंकि वह प्रत्येक ऋतु में प्रभु प्रेम में रंगे रहते हैं तथा आनन्दित रहते हैं।

(पृष्ठ 6 का शेष)

शहीदों को प्रणाम करते हैं और यह प्रार्थना करते हैं कि हे शहीदो! हमें भी धर्म पर चलने का उत्साह प्रदान करो। धर्म के असली स्वरूप के प्रत्यक्ष दर्शन उस पावन धरती पर होते हैं। सतगुरू सच्चे पातशाह जी द्वारा खालसे का प्रकट करना ही धर्म को शाश्वत तौर पर जीवित रखना है। खालसे का आन्तरिक तथा बाह्य स्वरूप सच्चे धर्म की तर्जमानी करता है -

खालसा मेरो रुप है खास।
खालसे महि हौ करहु निवास।

आतम रस जिह जानही, सो है खालस देव।
प्रभ महि, मो महि तास महि, रंचक नाहन भेव।
(सरब लोह ग्रंथ 'चौं)

यह सिद्धान्त आन्तरिक और बाह्य स्वरूप की तर्जमानी कर रहा है। औरंगजेब के पास केवल बाहरी रूप था और केवल बाहरी रूप मजहब की कट्टरता है। साहिबजादों की शहीदी हमेशा के लिए सच्चे धर्म की तर्जमानी करती रहेगी।

बोलीऐ सचु धरमु झूठु न बोलीऐ ॥
जो गुरु दसै वाट मुरीदा जोलीऐ ॥ अंग - 488

के सिद्धान्त की आवाज आज उस पावन धरती के कण-कण में से सुनाई दे रही है। शहीदी का तात्पर्य है सत्य की गवाही, 'छोटी उम्र और बड़े कारनामे' सृष्टि के अस्तित्व के अन्तिम पल तक अमर रहेंगे।

अमर शहीदों को कोटि-कोटि प्रणाम।

हम सब भी उस पावन धरती पर नतमस्तक होने के लिए जाएँ और अपने अन्दर प्यार व वैराग्य को धारण करके जाएँ। उस पावन धरती की धूल को नमस्कार करके हमें भी आन्तरिक तथा बाह्य यानि कि दोनों प्रकार का धार्मिक जीवन प्राप्त हो। आज आवश्यकता है कौम को धर्म के आन्तरिक और बाहरी रूप की एक समानता की। कौम के महान शहीद कृपा करें वे अपने आशीर्वाद के माध्यम से सबको अपना प्यार व वैराग्य प्रदान करें ताकि हम सभी उनके द्वारा दर्शाए गए मार्ग पर चल सकें और हमारे अन्दर भी 'बोलीऐ सचु धरमु झूठु न बोलीऐ' का बोलबाला हो सके।

छोटे साहिबजादों की बिलक्षण कथा

(शहीदी दिवस, छोटे साहिबजादे, श्री फतहिगढ़ साहिब, 26 दिसम्बर)

सन्त वरियाम सिंह जी
संस्थापक वि. गु. रू. मिशन

सतिनामु श्री वाहिगुरु,
धंन श्री गुरु नानक देव जीओ महाराज।

डंडउति बंदन अनिक बार सरब कला समरथ॥
डोलन ते राखहु प्रभू नानक दे करि हथ॥
अंग - 256

फिरत फिरत प्रभ आइआ परिआ तउ सरनाइ॥
नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ॥
अंग - 289

धारना - आप मुकत मोहे तारे ,
ऐसे गुर कउ बलि बलि जाईऐ।

नाराइन नरपति नमसकारै ॥
ऐसे गुर कउ बलि बलि जाईऐ
आपि मुकतु मोहि तारै ॥ 1 ॥ रहाउ ॥
कवन कवन कवन गुन कहीऐ अंतु नही कछु पारै ॥
लाख लाख लाख कई कोरै को है ऐसो बीचारै॥1॥
बिसम बिसम बिसम ही भई है लाल गुलाल रंगारै॥
कहु नानक संतन रसु आई है
जिउ चाखि गूंगा मुसकारै ॥ अंग - 1302

धारना - निरवैर निराला जी,
सतिगुर पुरख अगंम है।

सतिगुर पुरखु अगंमु है निरवैरु निराला।
जाणहु धरती धरम की सची धरमसाला।
जेहा बीजै सु लुणै फल करम समाला।
जिउ करि निरमलु आरसी जगु वेखणि वाला।
जेहा मुहु करि भालीऐ तेहो वेखाला।
सेवक दरगह सुरखरु वेमुखु मुह काला।
भाई गुरदास जी, वार 34/1

साधु संगत जी! उच्च स्वर में बोलो। सतिनाम श्री वाहिगुरू जी। अपने-अपने व्यवसायिक कार्यों को विराम देते हुए आप सब गुरू दरबार में पहुँचे हो। 'सतिगुर पुरख अगंम है निरवैर निराला।।' 'गुरू' 'सतगुरु' श्री गुरू नानक साहिब का गुरुओं के बीच का दर्जा, बहुत ही भ्रमपूर्ण बात है। 'गुरू' जबसे संसार की रचना हुई है, उसी समय से होते आए हैं। जब तक संसार ने रहना है, उसी समय तक उन्होंने रहना है। चाहे वे गणित पढ़ाने वाले हों, चाहे वे चिकित्सा विज्ञान पढ़ाने वाले हों, चाहे इंजीनियरिंग पढ़ाने वाले हों। अंग्रेजी में हम उन्हें मास्टर, टीचर या प्रोफेसर कहते हैं, उर्दू में उस्ताद कहते हैं। इस प्रकार से उनके अलग-अलग नाम रखे हुए हैं, लेकिन यह जो हमारा देश भारतवर्ष है, इसकी जो संस्कृति थी, इसमें इनका कुछ ज्यादा ही सम्मान था। जब से टीचर शब्द आया है, तब से विद्यार्थी का सम्बन्ध टीचर के साथ बहुत पतला हो गया है, 'मास्टर' के साथ बहुत पतला हो गया है लेकिन जो 'गुरू' शब्द था उसके साथ शिष्य का सम्बन्ध अत्यन्त गाढ़ा था। वह अपने गुरू का हुक्म मानता था, उसकी सेवा करता था और उसके द्वारा बताई गई मर्यादा पर चलता था। अब वह चाहे परा विद्या का उस्ताद हो और चाहे अपरा विद्या का उस्ताद हो। जो परा विद्या का उस्ताद होता था उसकी कुछ विशेष ही महिमा हुआ करती थी, उसके प्रति कुछ विशेष ही श्रद्धा भावना हुआ करती थी क्योंकि उसने जीव को मार्ग बतलाना होता था। अन्धकार में से बाहर निकालना होता था और प्रकाश में डालना होता था। अतः यह सब आदि व युगादि से ही चला आ रहा है।

अतः इस प्रकार से गुरू महाराज दसवें महाराज जी का श्री आनन्दपुर साहिब में घोर संग्राम हो रहा है। उनके पास बादशाह का एक पत्र आता है कि आप इतनी तकलीफ उठा रहे हो, बात केवल इतनी ही है कि आप श्री आनन्दपुर साहिब के किले को खाली कर दो। बाकी तो सारा भारतवर्ष आपका ही है, जहाँ आपका मन करता है, चले जाओ।

गुरू जी कहने लगे कि यह तो छल-कपट की बात है और गुरू जी ने कपट को नंगा करके भी दिखा दिया। दूसरी बार पत्र फिर आया, उसमें पहले से भी अधिक कसमें खाई

गईं। कुरान शरीफ को बड़े ही सम्मान सहित वहाँ पर लेकर आते हैं। महाराज जी ने वहाँ पर एक वचन किया, जिसका जिक्र इतिहास में आता है कि यदि हमने कुरान शरीफ की इज्जत न रखी तो फिर अन्य कौन रखेगा? यह हमारा फर्ज है कि हम धार्मिक पुस्तकों का सम्मान करें, वेदों व पुराणों का सम्मान करें। ये तो मूर्ख लोग हैं जो श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी की, वेदों की, कुरान शरीफ की बेअदबियाँ करते हैं। महाराज जी कहने लगे जब ये लोग कुरान शरीफ की कसमें खा रहे हैं, उसे अपना साक्षी मानकर कसमें खा रहे हैं, तो फिर अब हम इस पावन ग्रन्थ का सम्मान अवश्य रखेंगे और इसके लिए हमें चाहे जितनी भी मुश्किलों का सामना क्यों न करना पड़े। जिनके साथ हमारा युद्ध हो रहा है, उनका तो यह इष्ट है और इष्ट का सम्मान हमने अवश्य रखना है। नि:शंक रूप से आपको छल दिखाई पड़ रहा था। महाराज जी ने वचन भी किया था कि ऐ सिक्खो! सात दिन और रुक जाओ लेकिन सभी किले को खाली करने के लिए उतावले हो रहे थे, फलस्वरूप किले को खाली कर दिया गय। सारे योद्धागण काफी दूरी पर आ गए थे। उधर पीछे से हल्ला बोल दिया गया। भाई उदय सिंह, जिसने राजा जसवालिया का शीश काटा था, वह पीछे रुक गया। उसे पता चला कि साहिबजादा अजीत सिंह घेरे में आ गया है, उसने साहिबजादा जी को घेरे से बाहर निकाल दिया और स्वयं घेरे में आ गया। उसके बाद उसे वहीं पर शहादत प्राप्त हुई। उसके बाद उसकी जगह भाई जीवन सिंह जी ने ले ली जो कि गुरू नौवें महाराज जी का शीश लेकर आए थे।

इधर सिरसा नदी अपने पूरे उफान पर थी। गुरू महाराज जी के पास जितना भी साहित्य था, जिसे कि 102 लेखकों व कवियों द्वारा तैयार किया गया था, वह सब बह गया। दरअस्ल गुरू जी ने हम सब लोगों के ज्ञात के लिए बहुत बड़ा साहित्य तैयार किया था। आपके पास 50 लेखक तथा 52 कवि हमेशा नूतन साहित्य का सृजन करते रहते थे। साथ ही अनुवाद कार्य भी बहुत होता रहता था। इस कार्य पर बहुत अधिक धन का खर्च भी होता था। अकेले महाभारत पर दो लाख खर्च हुआ। जब मंगल कवि को दशमेश जी ने अपने घर जाने के लिए विदा किया तो उसे इतना अधिक धन दिया कि उसकी रक्षार्थ सौ सिक्ख योद्धाओं की टुकड़ी भी भेजी। जब मंगल कवि रायपुर की रानी के पास से गुजरने लगा तो रानी को भ्रम पड़ गया कि कहीं किसी दुश्मन ने आक्रमण तो नहीं कर दिया है। फलस्वरूप रानी ने किले में से फायर खोल दिया। फिर मंगल कवि की तरफ से सफेद झण्डा दिखाया गया और वे रानी के पास आ गए। उसने बताया कि हम तो गुरू दशमेश जी के दरबार से पांवटा साहिब से आए हैं। उन्होंने साहित्य सृजन के कार्य का सम्मान करते हुए इतना धन दिया है। विचार का तात्पर्य है कि गुरू दशमेश जी के द्वारा मंगल कवि को दिए जाने वाले धन के कारण राजाओं को भी भ्रम पड़ गया कि कोई दुश्मन आक्रमण करने आ रहा है। दशमेश जी इतने दयालु स्वभाव के थे।

सिरसा दरिया उफान पर है और पार होने का कोई साधन नहीं है और पीछे से दुश्मन आ रहा है। महाराज जी ने कहा कि ठीक है आज आत्मिक खुराक नहीं मिली, इसलिए आसा दी वार का कीर्तन शुरू करो। सिरसा के तट पर आसा दी वार का कीर्तन शुरू हो गया और पास में ही युद्ध भी शुरू हो गया। जब कीर्तन का भोग पड़ा तो गुरू जी ने सबको तीन भागों में बाँट दिया। माताएं, माता सुन्दरी जी तथा माता साहिब कौर जी को भाई मनी सिंह जी के साथ भेज दिया कि तुम इन्हें अपने साथ लेकर दिल्ली पहुँचो। पहले वे हरिद्वार पहुँचते हैं। उसके बाद फिर भेष बदल कर धीरे-धीरे आगे दिल्ली तक चले जाते हैं।

छोटे साहिबजादों तथा माता जी को दूसरे दल में कर दिया तथा यह हिदायतें दी कि तुम लोगों ने कहाँ पर पहुँचना है। आप थोड़े से सिंहों के साथ सिरसा नदी को पार कर गए जिनमें से काफी रोपड़ तक शहीदियाँ प्राप्त कर गए और आखिर आप निहंग खान पठान के किले में ठहरे। महाराज जी ने एक रात वहाँ पर काटी। निहंग खान पठान ने अपनी जान की बाजी लगाकर उनकी रक्षा की, किले के चारों तरफ आपने सख्त पहरे लगा दिए। यहाँ पर एक विनती है कि कई प्रेमी पुरुष कहते हैं कि यदि मुसलमान लाखों कसमें खा ले, तो भी उनका विश्वास नहीं करना चाहिए, यह उनकी बहुत बड़ी भूल है। कई ऐतिहासिक तथ्यों को सामने रखकर यदि हम देखें तो गुरू महाराज जी के माध्यम से जितनी वाणी रागों के द्वारा हमारे पास आई है, वह मरदाना जी के कारण ही आई है और वह मरदाना जी की अमर याद है। यदि हम उसी कौम को नफरत करें तो फिर यह गलत बात है। बाबा फरीद जी बैठे हैं और भी बहुत बैठे हुए हैं। यदि महाराज जी ऐसी बात कहते तो आप स्वयं निहंग खाने के किले में क्यों जाते। अत: ये सब आधारहीन बाते हैं और बाद में चालाक लोगों ने मिलावटें करके इतिहास के साथ छेड़छाड़ कर दी है ताकि वे हमें धोखे में रखकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर सकें।

उस समय जब श्री दशमेश जी के बारे में पता चलता है तो बुद्ध चन्द, जो कि श्री चमकौर साहिब का चौधरी था, गुरू महाराज जी के पास आता है और कहने लगा, महाराज

जी! आपने बहुत बड़ा कुर्बानी है। हम लोग अधिक कुछ तो नहीं कर सकते हैं, निवेदन है कि आप यहाँ रोपड़ में मत ठहरो बल्कि हमारे साथ चमकौर चलो, वहाँ ऊँची गढ़ी है, बेशक गढ़ी तो कच्ची है लेकिन कुछ मुकाबिला किया जा सकता है। यह मुकाबिला मैदान में नहीं हो पाएगा। महाराज जी चमकौर की तरफ चल पड़ते हैं। वहाँ पर बहुत ही भयानक युद्ध होता है। दो बड़े साहिबजादे वहाँ पर शहीद हो जाते हैं और दिन भर युद्ध जारी रहता है।

गुरू महाराज जी पाँच सिंहों (पाँच प्यारों) का हुक्म मानकर इस शर्त पर जाना स्वीकार करते हैं कि हमने चोरी नहीं जाना है बल्कि बतला कर जाना है। अतः महाराज जी ने अर्द्धरात्रि के समय रणसिंगा बजाया। दुश्मन सेनाओं को पता चला कि कोई आक्रमण होने वाला है। फलस्वरूप सारी सेनाएँ खबरदार हो गईं। महाराज जी वहाँ से निकल जाते हैं, तीन सिंह आपके साथ हैं, ऊँची टिब्बी पर जाकर आपने ऊँची आवाज में कहा, 'पीर-ए-हिन्द में रवद' यानि कि हिन्द का पीर जा रहा है, जो पकड़ना चाहे पकड़ लो। आप माछीवाड़े में पहुँच जाते हैं। वहाँ पर कई प्रकार की लीलाएँ होती हैं। वहाँ से निकल कर आप धीरे-धीरे राए कल्ले के पास पहुँच जाते हैं। राए कल्ला मुसलमान नवाब था, और वह गुरू जी का श्रद्धालु था। वह गुरू जी को ले जाता है। वहाँ से निकालने वाले कौन थे? गनी खाँ और नबी खान। गवाही देने वाला कौन था? सलोह वाला पीर। वक्त पड़ने पर जो काम आए वह मित्र हुआ करता है। हम किसी सारी कौम को बुरा कैसे कह सकते हैं? बातें तो जोश दिलाने वाली की जाती हैं, लेकिन जब हम परख करते हैं तो बात कुछ और ही निकलती है।

इस प्रकार से महाराज जी ने वहाँ पर से माही को कहा तुम आज ही सरहिन्द जाओ और जाकर पता करके आओ। दरअस्ल कुछ उड़ती-उड़ती खबर का तो पता चल ही गया था कि माता जी दरिया के तट पर एक माशकी की झोपड़ी में दो दिनों तक रहे थे। उनके पास ठंड में कपड़ा भी कोई नहीं था। वहाँ से गंगू ब्राह्मण अपने साथ ले गया। उसने माता जी को पूरा विश्वास दिलवाया कि मेरा घर पूर्णरूपेण सुरक्षित है। आप वहाँ चलकर रहो। वास्तव में उसकी निगाह माता जी के धन माल पर थी। यह जो कम्मा माशकी थे इसने बहुत ही गुप्त तरीके से माता जी और साहिबजादों की सेवा की। वहाँ पर एक लक्ष्मी ब्राह्मणी थी जो लोगों की निगाह से बच-बचाकर माता जी और साहिबजादों को खाना खिला जाती थी ताकि किसी को यह शक भी न पड़े। अतः वह इस ढंग से छिप कर आती थी।

लेकिन यह गंगू ब्राह्मण उन्हें अपने पास ले गया और घर जाकर यह शोर डाल दिया कि चोर उनका धन चोरी करके ले गए। माात जी कहने लगे, बेटा! यदि तुम्हें जरूरत है तो तुम धन माल वैसे ही रख लो, लेकिन शोर मत मचाओ क्योंकि समय बड़ा ही नाजुक है। छत पर चढ़कर तुम शोर मत मचाओ। आखिर वह मोरिंडे जाकर शिकायत कर देता है और वहाँ से कोतवाल आकर माता जी और साहिबजादों को गिरफ्तार कर लेता है। वे उन्हें एक रात जेल में रखते हैं। इतहिास मे ऐसा भी लिखा हुआ है कि माता जी तथा साहिबजादों को हथकड़ियाँ और बेड़ियाँ लगा दी गईं, जैसे कि कोई बहुत बड़े अपराधी उनके हाथ में आ गए हों।

जो सन्त बाबा अजीत सिंह जी नथलपुर वाले थे, इनके बुजुर्गों से उनका रथ मंगवाया गया और उस रथ में बिठाकर थानेदार उन्हें बसी ले गया और वहाँ से अगले दिन यही थानेदार इन्हें सरहिन्द ले आता है ।

यह जो सारा घटनाक्रम था, इसी की खबर लाने के लिए महाराज जी ने माही को भेजा कि तुम जाओ और सारी खबर लेकर आओ। वह बहुत ही होशियार व्यक्ति था। महाराज जी उसका इन्तजार कर रहे हैं। वह थोड़ा विलम्ब से पहुँचा। महाराज जी ने कहा, देखो! माही आ रहा है? आप बाहर पलंग के ऊपर बैठे हुए हैं।

सेवादार कहने लगे, महाराज जी! माही कहीं पर दिखाई नहीं दे रहा है। महाराज जी फिर दूसरी बार, तीसरी बार, चौथी बार तथा पाँचवीं बार कहा कि देखो! वह आ रहा है?

अन्त में महाराज जी ने कहा कि वृक्ष के ऊपर चढ़कर देखो। जब सेवादारों ने वृक्ष पर चढ़कर देखा तो उन्हें पता लगा कि माही आ रहा है।

उस समय जब माही गुरू जी के चरणों में हाजिर होता है तो वह कोई भी वचन हीं करता है बल्कि रोता जा रहा है। वह रो-रो कर वचन करता है। महाराज जी कहने लगे, तुम बोलते क्यों नहीं हो? तुम कुछ वचन तो करो, क्या हुआ? कैसे हुआ?

वह कहने लगा, महाराज जी! मैं बतला नहीं सकता हूँ जो काम आपके विश्वासपात्र व्यक्ति ने किया है। गंगू, जो कि आपके लंगर में सेवा करने वाला था, उसने बहुत ही बुरा कार्य किया है। महाराज जी! वह मनमुख हो गया, बेमुख हो गया। उसने थानेदार को खबर दे दी। उसका जन्म तो ब्राह्मण का था लेकिन उसने कार्य चण्डालों वाला ही किया।

जो इस प्रकार का व्यक्ति होता है, जो कि अकृत्घन

हो, नमक खाकर बुरा करने वाला हो, गुरवाणी में उसके बारे में इस प्रकार का फुरमान है -

धारना - किसे ह्तिआ किते ना लहिणी,
लूण हरामी बंदिआ।

नरक घोर बहु दुख घणे अकिरतघणा का थानु ॥
अंग - 315

जो किए हुए को भुला दें, उनका स्थान तो दरगाह में नर्कों में हुआ करता है, जहाँ पर उसे पराकाष्ठा तक का दुख मिलता है और उसके अपराध की क्षमा उसे मिल ही नहीं पाती है। इस प्रकार के लोगों के बारे में भाई गुरदास जी इस प्रकार से फुरमान करते हैं -

धारना- धरती भार ना झ्लदी,
अकितघण बंदिआँ दा -2

ना तिसु भारे परबताँ असमान खहंदे।
ना तिसु भारे कोट गड़ घरबार दिसंदे।
ना तिसु भारे साइराँ नद वाह वहंदे।
ना तिसु भारे तरुवराँ फल सुफल फलंदे।
ना तिसु भारे जीअजंत अणगणत फिरंदे।
भारे भुई अकिरतघण मंदी हू मंदे॥
भाई गुरदास जी, वार 35/8

यदि धरती को किसी व्यक्ति का बोझ अधिक लगता है अथवा उसका सन्तुलन बिगड़ता है तो वह केवल कृतघ्न व्यक्तियों के कारण ही होता है।

इस प्रकार से उसने अत्यन्त बुरा कार्य किया और वह भी पैसों के लिए। अब पैसे ने तो साथ में जाना नहीं है -

कबीर इहु तनु जाइगा सकहु त लेहु बहोरि ॥
नाँगे पावहु ते गए जिन के लाख करोरि ॥
अंग - 1365

लाख करोड़, सौ खरब वाले को कहते हैं। इतने-इतने अमीर लोगों के पास भी पैसा नहीं रहा। ऐ भद्रपुरुष! गुरू जी के पास इतनी देर रहने के बाद भी तुम्हें यह बुद्धि नहीं आई? तुम तो पत्थर के पत्थर ही बने रहे। तुमने अक्षम्य अपराध कर डाला जो कि न तो इतिहास में से कभी निकलना ही है और न ही तुम्हें माफ किया ही जा सकेगा।

उस समय माता जी अपने मन में थोड़ा विचार कर रहे हैं कि देखो कलगीधर महाराज जी ने कहा था कि बहुत दुख पाओगे अन्यथा सात दिन और ठहर जाओ। अकालपुरुष की कला कुछ अलग प्रकार से घटित होने वाला है। निःशंक रूप से तुम लोगों ने तप बहुत कर लिया है, वृक्षों के पत्ते खा लिए, वृक्षों के छिल्के खा लिए और इतना तप आज तक किसी भी तपस्वी ने नहीं किया। अब इस तपस्या को फल लगने वाला है जो कि सात दिनों बाद फल लगेगा। इस प्रकार का करिश्मा घटित होने वाला है कि तुम लोगों को राजभाग प्राप्त होगा, तुम्हारा प्रताप बढ़ जाएगा और तुम लोग सुखी हो जाओगे। लेकिन गुरू जी के वचन को किसी ने नहीं माना है यानि कि ये सभी लोग परीक्षा में फेल हो गए। माता जी ने भी पहले तो गुरू जी के वचन की हिमायत की लेकिन बाद में स्वयं भी पहले ही चल पड़े। जब माता जी भी चल पड़े तो फिर महाराज जी को भी पीछे-पीछे आना पड़ा। कहने लगे यदि उस समय वचन मान लेते तो ठीक रहता।

अब पता नहीं चल पा रहा है कि कौन कहाँ चला गया है? परिवार का क्या हुआ? गुरू दशमेश पिता जी का क्या हुआ? बड़े साहिबजादों के साथ क्या हुआ? माताएँ कहाँ गईं? कुछ पता नहीं चल पा रहा है? जब तक किले के अन्दर बैठ कर लड़ते रहे, तब तक गुरू महाराज जी ने बचाकर रखा।

'सात दिनों में तुम्हें सारे ही सुख मिल जाएँगे' गुरू जी के इस वचन को हमने नहीं माना और अब तो भारी बिपदा पड़ी हुई है। इस प्रकार से जब आप सरहिन्द के किले के अन्दर आ जाते हैं तो वहाँ पर आपको साहिबजादों समेत ठंडे बुर्ज में कैद कर दिया गया। आपके पास वस्त्र भी नहीं हैं। बस जो वस्त्र पहने हुए थे, वही उनके पास में थे। उस समय बाबा जोरावर सिंह जी की आयु 7 साल, 11 महीने और 8 दिन की थी तथा बाबा फतहि सिंह जी की आयु 5 साल 10 महीने और 10 दिन की थी। इस छोटी सी आयु में आप अपनी दादी के साथ किले के अन्दर बैठे हुए हैं। माता जी की सारी रात, सोचते हुए ही बीत गई कि परिवार का क्या हुआ? हम लोगों ने वचन नहीं माना। अब सवेरा हो जाता है, खाने-पीने के लिए भी कुछ नहीं दिया गया। पहले दिन भी नहीं दिया गया, दूसरे दिन भी नहीं दिया गया। उस समय एक गुरसिक्ख प्रेमी था, उसे जब पता चला कि इस प्रकार से माता जी और साहिबजादों को कैद कर दिया गया है, तो उसने विचार किया कि मैं उनके लिए कुछ न कुछ जरूर पहुँचाने का प्रयत्न करूँ। उसने बहुत से उपाय किए, सिपाहियों के साथ बात की लेकिन कोई भी नहीं आना। सबने एक ही जवाब दिया कि यहाँ किले के अन्दर? यहाँ तो परिन्दा भी पर नहीं मार सकता है, तुम अन्दर कैसे जा सकते हो? इतना जबरदस्त पहरा चारों ओर लगा हुआ है और आप नीचे ठंडे बुर्ज में कैद हैं। उधर उसने कमन्द फसाई और रस्से के बल से चढ़कर चला गया। उसने माता जी और साहिबजादों को दूध पिलाया तथा खाने के लिए भी कुछ ले गया तथा

बाहर की सारी खबर भी दी। इस प्रेमी पुरुष का नाम था - मोती मेहरा। इसके बाद वह वहाँ से बाहर चला गया और अन्दर की सारी खबर, बाहर जाकर दी ।

इसके बाद दरबार लगाया गया और दरबार के अन्दर साहिबजादों को लाया गया। जिस समय आप जाते हैं तो साहिब जोरावर सिंह जी कहने लगे, फतहि सिंह! अपने लोगों ने फतह बुलानी है। यह लोग जो हमें बतलाते हैं कि हमें झुककर सात बार सलामें करनी हैं, वह हम लोगों ने नहीं करनी हैं। उस समय, जब वे दरबार में जाते हैं तो वे उच्च स्वर में फतह बुलाते हैं। उधर नवाब साहिब ने देखा कि ये कितने सुन्दर बच्चे हैं जैसे कि इन्हें परमात्मा ने फुर्सत में बैठकर बनाया हो। अतः उन पर से निगाह नहीं हटती है और सबको अपने बच्चे याद आ रहे हैं कि ये कितने सुन्दर बच्चे हैं लेकिन इनके ऊपर यह विपत्ति आ पड़ी है। अब वहाँ पर सभी लोग अन्याय के हिमायती नहीं थे। लड़ाइयाँ लड़ी जाती हैं और यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है लेकिन सभी दुश्मन तो नहीं होते हैं। सभा के बीच में दर्द वाले लोग भी तो होते हैं। सभी सभा सदस्य बच्चों की तरफ देखते हैं और उनकी दलेरी को भी देखते हैं कि इन्होंने कितनी दलेरी से यह नारा दिया है कि -

वाहिगुरु जी का खालसा
वाहिगुरु जी की फतहि।

जो आदर्श मनुष्य है वह परमेश्वर का है किसी अन्य का नहीं है। जब मनुष्य परमेश्वर का है तो फिर फतहि भी तो परमेश्वर की ही है। अब बात तो सीधी सी ही थी न कि इसमें किसी को चुनौती ही दी गई थी और न ही किसी को दुखी करने वाली बात ही थी। बात तो केवल इतनी ही थी कि जो श्रेष्ठ व्यक्ति है, सुपर मैन है वह परमात्मा का है। दरअस्ल श्रेष्ठ मनुष्य को ही खालसा कहा जाता था, जिसके मन में न तो तनिक सा भी भ्रम ही था और न ही कोई द्वैतभाव ही था। जिसे पूर्ण ज्ञान था -

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ॥
अंग - 1427

जिनके अन्दर पूर्ण ज्योति जगमग जगमग कर रही थी और जिन्हें कोई भी बेगाना या अन्य दिखाई ही नहीं पड़ता-

मनि साचा मुखि साचा सोइ ॥
अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ ॥
नानक इह लछण ब्रहम गिआनी होइ ॥
अंग - 272

वे प्रभु जी के बिना दूसरा कोई देखते ही नहीं हैं। ऐसे जो पुरुष थे -

पूरन जोत जगै घट मै
तब खालस ताहि नखालस जानै॥

जिसके अन्दर पूर्ण ज्ञान की ज्योति जग चुकी है और जिनके अन्दर तनिक सा भी अहंभाव नहीं है, वह है किसका? वह वाहिगुरू जी का ही तो है। हम लोग तो बाल-बच्चों के होंगे या किसी अन्य के होंगे लेकिन वह तो वाहिगुरू का ही होता है, वाहिगुरू के बिना अन्य किसी का होता ही नहीं है और फिर वाहिगुरू जी की तो हमेशा जीत ही होती है। यह बात तो बिल्कुल सीधी व स्पष्ट थी लेकिन वह कई लोगों को चुभ गई क्योंकि वे लोग कट्टर विचारधारा के धारणी लोग थे। दूसरी तरफ जो अन्य प्रकार की विचारधारा वाले थे, वे उन बच्चों की दलेरी को देखकर प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके।

उस समय नवाब ने कहा, बच्चो! हमें बहुत अधिक अफसोस है कि तुम्हें पकड़ लिया गया है, लेकिन तुम लोग अब तनिक सी भी चिन्ता मत करो और न ही डरो। अब तुम्हारी पूरी सम्भाल व पालन-पोषण किया जाएगा। जो पदवी गुरू गोबिन्द सिंह जी की थी, उसके अनुसार ही तुम लोगों के साथ व्यवहार किया जाएगा। दूसरी सूचना यह है कि तुम्हारे पिता श्री गुरू गोबिंद सिंह तो युद्ध में मारे गए हैं और उनका साथी कोई सिक्ख भी नहीं बचा है, तुम्हारे बड़े भाई भी वहीं युद्ध में ही शहीद हो गए। अब तो केवल तुम तीन लोग ही बचे हो। तुम्हारी दादी और तुम दोनों। इतनी बात जब नवाब ने कही तो उस समय बाबा जोरावर सिंह जी कहने लगे, नवाब साहिब! तुम्हारी इस बात को हम नहीं मानते हैं क्योंकि गुरू का मुकाबिला कर सकने वाला तो इस संसार में कोई दूसरा है ही नहीं। गुरू यदि चाहे तो वह आँख झपकने जितनी देर में सब कुछ समाप्त कर सकता है। उन्हें तुम लोग क्या समझते हो? वे कोई मामूली इन्सान नहीं हैं। उनके समाने कौन ठहर सकता है -

धारना - ऐसा जंमिआ ना जगत उते कोई,
जिहड़ा झाल झूले गुराँ दी।

इस प्रकार की बातें सुनकर कि तुम्हारे पिता शहीद हो चुके हैं, तुम्हारे भाई शहीद हो चुके हैं और केवल तुम लोग ही शेष बचे हो, ऐसा नहीं हुआ कि उन बच्चों का दिल ही टूट जाए या फिर वे उनकी बातों को मान ही लें बल्कि इन बातों को सुनकर बाबा जोरावर सिंह जी पूरे जोश में आ गए और कहने लगे, नवाब साहिब!

सुनि जुझार सिंघ बनि सवधान।

सभिनि सुनावति बाक बखान।
श्री सतिगुर जो पिता हमारा।
जग महिं कौन सकहि तिह मारा॥

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पंना - 5351

वे कहने लगे, आकाश, पर्वत, सूर्य व चन्द्रमा आदि कभी भी पकड़े नहीं जाते हैं और जो हमारे पिता जी हैं -

करता पुरख अकाल किपालू॥
सभि ते बडो काल को कालू॥

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पंना - 5351

वे तो काल के भी काल हैं, उन्हें कौन मार सकता है? दरअस्ल वे तो अकालपुरुष का भी निज रूप हैं -

समुंदु विरोलि सरीरु हम देखिआ
इक वसतु अनूप दिखाई ॥
गुर गोविंदु गुोविंदु गुरु है नानक भेदु न भाई ॥

अंग - 442

वे तो स्वयं ही इस संसार पर आए हैं। उन्हें तो अकालपुरुष ने कहा -

मै अपना सुत तोहि निवाजा।
पंथ प्रचुर करबे कउ साजा।

उन्होंने वचन सुने और साथ ही जो दरबारी लोग थे, जो कि समीपस्थ थे, उन्होंने कहा, बच्चो! तुम लोगों ने कचहरी/दरबार की मान मर्यादा को भंग कर डाला है। यहाँ पर आने का तरीका यह होता है कि पहले झुक कर सात बार शीश झुकाना पड़ता है, यानि कि सात सलामें करनी पड़ती हैं। आधे झुक कर अपनी छाती को सात बार हाथ लगाते थे, उसके बाद दोनों हाथ जोड़कर सलाम कह कर फिर सीधे खड़े होते थे। तुम लोगों ने तो दरबार की मर्यादा ही भंग कर दी है। अब तुम लोग शीश झुकाकर नवाब साहिब को सलाम करो। दोनों भाइयों ने एक दूसरे की तरफ देखा और बाबा जोरावर सिंह जी बोले, फतहि सिंह! हम कौन सा शीश इनके आगे झुकाएँ क्योंकि यह शीश तो अपना है ही नहीं -

धारना - इह सीस ना मेरा है,
इह नहीं निवणा पापीआँ अगे।

जोरावर सिंह जी बोले, फतहि सिंह! यह सब क्या कह रहे हैं? फतहि सिंह बोले, भैया जी! ये तो हमें शीश झुकाने के लिए कह रहे हैं। जोरावार सिंह जी बोले, तुम्हें याद है कि यह शीश तो अपना है ही नहीं क्योंकि इसे तो हम पहले ही गुरू जी को अर्पित कर चुके हैं, जिस समय कि हमने अमृत की याचना की थी। अब यह अपना कहाँ रह गया है-

तिस आगे हम अरपे सीस।
सकल कला समरथ जगदीश॥

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पंना - 5351

समर्थ गुरू को हम पहले ही शीश भेंट कर चुके हैं, इसलिए अब ये शीश हमारे अपने कहाँ रह गए हैं -

इह नर पामर पाप कमावैं।
किम इन आगे सीस निवावैं॥

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पंना - 5351

ये सब तो पामर हैं, झूठे हैं, वादा करके मुकर जाने वाले हैं। धोखा देकर इन्होंने कितना बड़ा कार्य किया है। गुरुमुखों या परमात्मा के प्यारों के आगे तो यह शीश झुक सकता है लेकिन इन धोखेबाजों के आगे यह शीश कैसे झुक सकेगा? अतः उन्होंने नवाब को सात सलामें करने से मना कर दिया। दरबार में उपस्थित लोगों ने परस्पर विचार विमर्श की और यह निर्णय लिया गया कि ये बच्चे हैं, इसलिए इन्हें समझाने के लिए समय चाहिए। आज सभा बर्खास्त कर दी जाए और कल को पुनः दरबार लगाया जाए। दूसरे दिन बच्चों को माता जी से अलग रखा गया कि वे इन्हें सिखाते रहते हैं।

अब दूसरा दिन फिर दरबार लगाया जाता है और इन बच्चों को पुनः दरबार में लगाया जाता है। वहाँ पर एक योजना और यह बनाई गई कि जब इनका शीश ही हमने झुकाना है तो बड़े दरवाजे को बन्द कर दिया जाए और छोटी खिढ़की में से इन्हें निकाला जाए। जब खिड़की में से उन्हें निकाला जाएगा, उन्हें यह बताओ कि पहले सिर अन्दर करो और उसके बाद पैर अन्दर करो। अत: अब जो गाइड बच्चों को साथ में लेकर जा रहा है, वह उन्हें समझाने लगा कि देखो बच्चो! इस छोटे दरवाजे में से अब हमने निकलना है। वास्तव में यह छोटी खिड़की है, इसमें से कैसे निकलना है, मैं तुम्हें बतलाता हूँ। अब उसने उन बच्चों को खिड़की में से निकलकर बताया। अब बच्चे एक दूसरे की तरफ देखते हैं कि इस प्रकार से हम लोगों का सिर इन पामरों के आगे झुक जाएगा। यह शीश तो गुरू कलगीधर के बिना, गुरुमुखों के बिना, अन्य किसी के आगे झुकना ही नहीं चाहिए। जोरावर सिंह कहने लगे, ये सब हमारे साथ चालाकी करते हैं, हम लोगों ने इस तरह से नहीं निकलना है। पहले मैं निकलूँगा और मेरे पीछे उसी प्रकार से तुम निकल आना।

अतः उन्होंने पहले खिड़की के ऊपर वाले हिस्से को पकड़ा और अपने पैरों को आगे किया फिर अपने शेष हिस्से को अन्दर निकाला। उस समय वे सारे दरबारीजन समझ गए

कि ये बच्चे तो बहुत अधिक निडर प्रकृति वाले हैं। अन्दर जाकर उन्होंने आज फिर फतहि बुलाई।

नवाब साहिब ने पहला सवाल ही यह किया कि बच्चो! तुम्हें प्रशासन से डर नहीं लगता है? कानून से डर नहीं लगता है? तुम लोग दरबार में आकर शीश नहीं झुकाते हो? उस समय बड़े साहिबजादे बाबा जोरावर सिंह जी कहने लगे, नवाब साहिब! डर नाम की चीज तो हमने सीखी ही नहीं है। हमारे गुरू ने हमें डरने और डराने की बात बताई ही नहीं है। ये दोनों बातें हमारे अन्दर नहीं हैं। आप इस प्रकार से कहते हैं -

धारना - डर असीं ना किसे दा मंनणा,
इह है हुकम पूरे गुराँ दा।

कहने लगे, नवाब साहिब! डरता तो वही है जो पाप किया करता है, जो उल्टी बातें करता है -

सो डरै जि पाप कमावदा धरमी विगसेतु ॥
अंग - 84

डरता हमेशा वही है, जिसने कोई अपराध किया हो और हमारे गुरू जी का हुक्म है -

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
अंग - 1427

संसार के अन्दर न तो किसी को डराना है और न ही किसी से डरना है क्योंकि गलत बात तो गुरसिक्ख कभी करता नहीं है, बल्कि अपने हक की बात ही करता है। महाराज जी कहते हैं कि डरता तो वही है जो गलत बातें करता है। जो डर से ऊपर निकल जाता है वह तो निडर हो जाता है क्योंकि वाहिगुरू का नाम जपकर निर्भय शक्ति व्यक्ति के अन्दर आ जाती है। फिर न तो मृत्यु का डर रहता है और न ही अन्य किसी चीज का डर रहता है। महाराज जी कहते हैं -

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥
अंग - 1427

ज्ञानवान की अवस्था यही होती है कि न तो किसी से डरना और न ही किसी को डराना। अतः साहिबजादे कहने लगे कि डर का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। हमने कौन सा कोई बुरा कार्य किया है कि हम किसी से डरें। जब हमने कोई गलत कार्य ही नहीं किया है तो फिर डर किस बात का है? जब उन्होंने (सरहिन्द के नवाब तथा सभा में उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने) ये वचन सुने -

सुनि करि सभा सकल बिसमाई।
इह बारिक कया समुझि सकाई॥
श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पंना - 5351

उस समय सारे लोग कहने लगे कि देखो! इन छोटे-छोटे बच्चों के अन्दर कितनी समझ है, यह तो बहुत ही कमाल की बातें करते हैं। इन्होंने किस समय ये सारी बातें सीख लीं। उस समय नवाब कुछ विचारें करने लग पड़ा।

वे कहने लगे इन बच्चों की कोई गलती नहीं है। काजी को कहा कि देखो! इनके ऊपर अपराध की कोई दफा (धारा) लगती है? उस समय काजी सोच विचार करके कहने लगा, नवाब साहिब! इनके ऊपर कोई भी दफा या चार्ज नहीं लगती है। दूसरी बात यह है कि इनकी आयु अभी बहुत छोटी है यानि कि इनकी आयु इतनी नहीं है कि इनके ऊपर कोई दोष लगा दिया जाए। ये ठीक ही कह रहे हैं कि हम लोग डरें तो तभी जबकि हमने कोई अपराध किया हो। यह सारी बातें तो कुरान शरीफ के अन्दर आती ही नहीं हैं। फिर ये लोग अपने धर्मानुसार फतह बुलाते हैं, इसलिए यह दोष भी नहीं लगता है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि ये बच्चे अभी इतने छोटे हैं कि इन्हें न तो लड़ने का पता है और न ही लड़ाई के परिणामों का पता है। ये तो अबोध बच्चे हैं और इन्होंने किसी का कुछ बिगाड़ा भी नहीं है। नवाब कहने लगा कि फिर ये इस्लाम में आ जाएँ ताकि इन्हें सम्मान दिया जा सके। फिर तो हम इन्हें बड़े-बड़े पदों पर भी आसीन कर सकते हैं। दरअस्ल जो मुसलमान लोग थे वे अन्य धर्मों को तो मानते ही नहीं थे, वे कहते थे कि ये लोग तो यूँ ही बस मूर्तियों वगैरह की पूजा में ही लगे रहते हैं। ये परमात्मा से बेमुख हैं। वे इन्हें काफिर मानते थे तथा कहते थे कि ये सभी नर्कों में जाएंगे। अतः यदि इन्हें इस्लाम धर्म में शामिल कर लिया जाए तो अच्छा होगा। इस प्रकार जब उन्हें यह बात कही गई तो उस समय साहिबजादे कहने लगे कि तुम लोग किस चीज को मुसलमान बनाना चाहते हो? आत्मा का तो कोई धर्म ही नहीं होता है। आत्मा न तो हिन्दू होती है, न मुसलमान होती है, न सिक्ख होती है, वह तो केवल आत्मा ही होती है।

बाकी परमात्मा को मिलने के तो असंख्य तरीके हैं और धर्म को धारण इसीलिए किया जाता है ताकि परमात्मा का मिलाप जल्दी हो जाए लेकिन अब इसे इस प्रकार से बदलना असम्भव है। नामदेव जी को जिस समय पकड़ कर लाया गया तो उस समय गाय को मार कर उसके आगे डाल दिया गया और उसे कहा गया, नामदेव जी! तुम्हारे सामने तीन शर्तें हैं। पहली यह है कि गाय को जीवित कर दो, दूसरी यह है कि यदि जीना चाहते हो तो इस्लाम में आ जाओ और तीसरी

बात यह है कि जहाँ पर गाय मरी पड़ी है, वहीं पर तुम्हें मार दिया जाएगा। उस समय नामदेव जी कहने लगे, मुझे पहली दोनों शर्तें मंजूर नहीं हैं क्योंकि मैं गाय को जिन्दा कैसे कर सकता हूँ? यह तो परमात्मा का कार्य है, बाकी जो शर्त आपने मेरे जीवित रहने के लिए रखी है वह मुझे स्वीकार्य नहीं है। तीसरी शर्त मुझे स्वीकार्य है और उसके लिए मैं तैयार हूँ। उस समय उसकी माता आ जाती है। वह कहने लगी, नामदेव! तुम अपनी जान को व्यर्थ में क्यों गंवा रहे हो?

रुदनु करै नामे की माइ ॥
छोडि रामु की न भजहि खुदाइ ॥ अंग - 1165

नामदेव कहने लगा, माता जी! अब मैं नाम का सिमरन नहीं करता हूँ बल्कि यह धुन तो स्वत: ही मेरे अन्दर चलती रहती है। यह अब मेरे नियन्त्रण से बाहर की बात है, उसे मैं छोड़ नहीं सकता हूँ। आप इस प्रकार से फुरमान करते हैं -

धारना - छोडिआ ना जाए जी,
सहिज समाना भीतरे।

लाल रंगु तिस कउ लगा जिस के वडभागा ॥
मैला कदे न होवई नह लागै दागा ॥ 1 ॥
प्रभु पाइआ सुखदाईआ मिलिआ सुख भाइ ॥
सहजि समाना भीतरे छोडिआ नह जाइ ॥
अंग - 808

नाम तो अब हमारे अन्दर रच चुका है, अब पूर्ण ज्ञान हो चुका है और कोई दूसरा तो दिखाई ही नहीं पड़ता है, तो उसे तुम यह कैसे कहोगे कि तुम अमुक धर्म में चले जाओ? उसकी दृष्टि में तो सारे धर्म एक ही होते हैं। उनके लिए तो धर्म की परिभाषा बहुत नीची रह जाती है, वह तो इस प्रकार की बात होती है जैसे कि कोई बी.ए. में पढ़ने वाले व्यक्ति को कहे कि तुम अब पहली कक्षा में पढ़ने लग जाओ। यह तो उसके साथ मजाक होता है। साहिबजादे तो पूर्ण पद पर पहुँचे हुए थे, वे वैसे ही नहीं थे। यदि ध्रुव को पाँच वर्ष की आयु में पूर्ण ज्ञान हो सकता है तो ये तो गुरू गोबिंद सिंह जी की अपनी सन्तान थी। अत: वे पूर्ण ज्ञानवान थे, वे मुस्कुरा पड़े और कहने लगे धर्म किस चीज को कहा जाता है?

इसी प्रकार से नामदेव की माँ उसे कहती है -

तू राम कहन की छोडु बानि ॥
तुझु तुरतु छडाउ मेरी कहिओ मानि ॥ अंग - 1194

नामदेव जी कहने लगे, माता तुम अब नाम (राम का नाम) को छोड़ देने की बात कह रही हो? यह कार्य तो अब असम्भव है क्योंकि यह तो मेरे रोम-रोम में रच गया है -

गुरमुखि रोमि रोमि हरि धिआवै ॥ अंग - 941

इस प्रकार से साहिबजादे कहने लगे, यह नहीं हो सकता है। तुम लोग तो बहुत छोटी बात करते हो। हमें एक बात समझा दो कि यदि हम जिन्दा रहने के लिए इस्लाम में आ जाएँ तो फिर क्या हमें मृत्यु नहीं आएगी? सभी सभासद एक दूसरे के मुँह की तरफ देखने लग पड़े और कहने लगे कि लो भाई बच्चों की बात का जवाब दो। वे कहने लगे कि मरने के बाद क्या होता है, वह भी हमें समझा दो? वे कहने लगे कि जब कोई व्यक्ति मर जाता है तो फिर उसकी रूह कब्र में पड़ी रहती है और रोजे के अन्तिम दिन जब कयामत आती है तो फिर उस दिन हिसाब-किताब होता है। जिन लोगों की गवाही मोहम्मद साहिब भर देंगे वे तो पार हो जाएंगे और जिनकी वे नहीं भरेंगे तो वे सब दोजख में धकेल दिए जाएंगे। साहिबजादे कहने लगे, यह तो कुछ भी बात नहीं है क्योंकि हमने तो दोजख में जाना ही नहीं है। हमारे लिए न तो दोजख है और न ही यमराज की दरगाह है -

धरम राइ नो हुकमु है बहि सचा धरमु बीचारि ॥
दूजै भाइ दुसटु आतमा ओहु तेरी सरकार ॥
अंग - 38

अजराइल के पास तो वे लोग ही जाएँगे जो कि द्वैतभाव में रहे हैं और जिन्होंने गलत कार्य किए हैं। हमारा तो मार्ग ही अलग है, हमने तो किसी भी कब्र वगैरह में जाना ही नहीं है। हमें तो जीवन मुक्ति की अवस्था प्राप्त है। जब तक हम शरीर में हैं तो शरीर में हैं लेकिन जब शरीर से बाहर निकल गए तो फिर हम निजघर में चले जाएँगे। हमने मझधार में तो रुकना ही नहीं है। अत: तुम लोग तो बहुत छोटी बात हमसे कह रहे हो। दूसरी बात यह है कि एक दिन तो मरना ही है, शरीर ने जाना ही है। हमें यह पता लग चुका है कि मृत्यु तो कोई चीज होती ही नहीं है। काल तो उतनी ही देर तक है जितनी देर तक व्यक्ति के अन्दर हउमै का जज्बा होता है या जब तक द्वैत भाव का अन्दर होता है -

जब लगु मोह मगन संगि माइ ॥
तब लगु धरमु राइ देइ सजाइ ॥ अंग - 278

उस समय तक तो यमराज के पास जाना ही पड़ेगा लेकिन जब इसे अपने स्वरूप का ज्ञान हो गया तो फिर कौन सा यमराज? और कौन सी मृत्यु? फिर तो मरता ही नहीं है फिर तो अमर जीवन प्राप्त हो जाता है -

अंम्रितु पीवहु सदा चिरु जीवहु
हरि सिमरत अनद अनंता ॥ अंग - 496

अमृत पीने वाला तो अमर हो जाता है और हमें तो नाम

अमृत प्राप्त हो चुका है। नवाब साहिब! हमने तो मरना ही नहीं है, हमें इन बातों से कोई सरोकार नहीं है जो कि तुम लोग बच्चों वाली बातें कर रहे हो। इसके बाद वे लोग और भी कई प्रकार से लालच देने का प्रयत्न करते हैं। छोटे भाई ने, बड़े भाई की तरफ देखा यानि कि बाबा फतहि सिंह जी, बाबा जोरावर सिंह को कहने लगे, भैया जी! क्या मैं एक बात आपसे कह सकता हूँ? बाबा जोरावर सिंह जी बोले, कहो? उस समय बाबा फतहि सिंह जी बोले जैसे कि इतिहास में लिखा है -

धरम पितामे जयों रखि लीना।
शुभ जस ते जग पूरन कीना।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पंना - 5351

आपको अपने दादा जी की बात याद है न? उनके आगे भी यही सवाल रखा गया था। उन्होंने शीश तो दे दिया लेकिन धर्म नहीं हारा -

तीन लोक महिं शाका चीना॥

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पंना - 5351

तीनों लोकों में इस महान घटना को देखा जाता है ।

उस समय उन्होंने जबाव दे दिया और कहने लगे कि हमारा जो सिक्खी-सिदक है यह बहुत ऊँचा है, जान के साथ इसका कोई सम्बन्ध नहीं है -

धारना - सिर जावे ताँ जावे,
मेरा सिखी सिदक ना जावे।

कबीर जिसु मरने ते जगु डरै मेरै मनि आनंदु ॥
मरने ही ते पाईऔ पूरनु परमानंदु ॥ अंग - 1365

वे कहने लगे, नवाब साहिब! हमें शीश की तो कोई परवाह नहीं है लेकिन धर्म की पूरी परवाह है। हमने अपने धर्म के ऊपर से अपने शीश को कुर्बान कर देना है। हमें मरने से कोई डर नहीं लगता है। मरने के बाद तो हमने अपने घर को चले जाना है और उस घर की प्राप्ति हमें हमारे गुरू ने करवा दी है। उस समय सभासद कहने लगे, देखो बच्चो! यह बात बहुत सख्त है। हम लोग तुम्हें अभी छोड़ रहे हैं क्योंकि अभी तुम लोग वाहिगुरू-वाहिगुरू कहते हो और बाद में अल्लाह-अल्लाह कहोगे। इसमें फर्क तो कुछ भी नहीं है। तुम्हारे ही गुरू कहते हैं कि अल्लाह और वाहिगुरू में कोई फर्क नहीं होता है -

देहरा मसीत सोई, पूजा औ निवाज ओई,
मानस सबै एक पै अनेक को भ्रमाउ है॥
देवता अदेव ज्छ ग्रंधब तुरक हिंदू
निआरे निआरे देसन के भेस को प्रभाउ है॥
एकै नैन एकै कान, एकै देह एकै बान,
खाक बाद आदस औ आब को रलाउ है।
अलह अभेख सोई पुरान औ कुरान ओई,
एक ही सरुप सबै एक ही बनाउ है॥ अकाल उसतति

पूजा और नमाज एक ही बात है, सारे मनुष्य भी एक ही हैं, यह तो सत्य बात है लेकिन तुम लोगों को क्या अधिकार है कि यदि कोई व्यक्ति एक मार्ग पर चला जा रहा है तो फिर उसे तुम अलग मार्ग पर डाल दो। बाकी जो तुम शीश देने की बात करते हो तो उसके लिए हम तैयार हैं। लेकिन हम धर्म नहीं हारेंगे -

धारना - सीस देवाँगे धरम नहीओं हारना,
इह है रीत गुरसिखाँ दी।

यह तो हमारे कुल में रीति ही चली आई है। पहले हमारे दादा जी के साथ भाई मतीदास, भाई सतीदास, भाई दयाला जी सबने ही शीश दे दिया, उन सबने अपने शरीर पर बहुत कष्ट तो सह लिए लेकिन धर्म से बेमुख नहीं हुए। अतः यह तो हमारे कुल की रीति ही है -

हमरे बंस रीति इम आई।
सीस देति पर धरम न जाई।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पंना - 5351

जिस प्रकार से रघुकुल रीति सदा चली आई, प्राण जाएँ पर वचन न जाई।

वे भी बचन से पीछे नहीं हटते थे। जो वचन कर लेते थे, उसे पूरा पूरा निभाते थे, वही रीति हमारे यहाँ भी है। हमारे पिता जी के पड़दादा जी दहकती तवियों पर तो बैठ गए लेकिन धर्म से विमुख नहीं हुए, गुरसिक्खों ने अंग-अंग तो कटवा लिए लेकिन धर्म से हारे नहीं।

बाकी तुम लोग अकारण जुल्म कर रहे हो। जिस राज्य में जुल्म हो, बिना किसी कसूर के हो तो वह राज्य अपनी जड़ें अपने आप ही खोखली कर रहा होता है।

हमें शीश देने का कोई डर नहीं है क्योंकि हमारे शीश देने से जुल्मी राज्य की जड़ें अपने आप ही उखड़ जानी हैं। हमारी शहीदी व्यर्थ नहीं जाएगी।

साहिबजादे कहने लगे, नवाब साहिब! इस्लाम में आने के बाद क्या कभी मृत्यु नहीं आएगी? इस संसार में कौन सदा के लिए रहा है? कहाँ गए मोहम्मद साहिब? कहाँ गए बड़े-बड़े पीर और औलिए?

जिमी पुछै असमान फरीदा खेवट किंनि गए ॥
जालण गोराँ नालि उलामे जीअ सहे ॥ अंग - 488

दुनिया के ऊपर बड़े-बड़े आए और बड़ों-बड़ों ने

आकर उपदेश दिए, बड़े-बड़े कारनामे किए, लेकिन सब कहाँ चले गए?

जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि ॥
नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल ॥

अंग - 1429

जिसका जन्म है उसने तो जाना ही जाना है, यहाँ पर हमेशा के लिए तो कोई रहने वाला नहीं है -

धारना - इथे बैठ ना किसे ने रहिणा,
वारी आई तुर जाणा।

एक शिव भए एक गए, एक फेर भए,
राम चंद्र किशन के अवतार भी अनेक हैं॥
ब्रहमा अरु बिशन केते बेद औ पुरान केते,
सिंम्रिति समूहन कै हुइ हुइ बिताए हैं॥
मोनदी मदार केते असुनी कुमार केते
अंसा अवतार केते काल बस भए हैं॥
पीर औ पिकाँबर केते गने न परत एते
भूम ही ते होइकै फेर भूम ही मिलए हैं॥

त्वप्रसादि कबित (अकाल उसतति)

अतः वे कहने लगे, देखो, संसार में तो सदा के लिए रहना नहीं है और धर्म ने ही हमारे साथ जाना है। बाकी जो बातें तुम कह रहे हो कि तुम माया दोगे या अच्छे माहौल में पालन-पोषण करोगे तो ये सारी ही चीजें यहीं पर रह जाएँगी।

उस समय सभी लोग चुपचाप बैठे हुए हैं। कोई कुछ सोच रहा है और कोई इन मनमोहक शक्लों को देख रहा है तथा कोई बच्चों की दलेरी को देखकर गदगद हो रहा है। नवाब भी चुप बैठा है। उस समय नवाब की निगाह मलेरकोटले के नवाबों पर पड़ गई। उसने शेर मोहम्मद को बुलाया और कहने लगे शेर मोहम्मद! इन बच्चों को हम तुम्हारे हवाले करते हैं, जिस प्रकार से भी तुम्हारा मन करता है तुम इनसे अपना बदला ले लो क्योंकि तुम्हारे भाई को इनके पिता ने मारा था।

शेर मोहम्मद बोला, नवाब साहिब! यह कोई शूरवीरों की बात नहीं है क्योंकि योद्धागण तो मैदान-ए-जंग में लड़ा करते हैं, वे कायरों की भांति नहीं लड़ा करते हैं, न ही धोखे से किसी से बदला लेते हैं। इन अबोध बच्चों का क्या अपराध है?

बालक शीर खोर कया दोश।
हान लाभ की इनहि न होश॥

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पंना - 5353

इन्हें तो होश ही नहीं है, न इन्हें लाभ का पता है और न ही हानि का ज्ञान है। ये तो जैसे वातावरण में पले हुए हैं, उसी प्रकार की बातें ये कर रहे हैं। मैं बुजदिल नहीं हूँ। यह तो तुम गलत बात कह रहे हो कि बच्चों के पिता का बदला इन बच्चों से लिया जाए। इन्होंने किसी का क्या बिगाड़ा है। मुझे कुरान शरीफ में दर्ज कोई ऐसा कानून दिखलाओ जिसके अनुसार इन्हें कसूरवार ठहराया जा सके। इन्होंने कोई शस्त्र भी नहीं उठाया है और न ही इन्होंने किसी को कोई चुनौती ही दी है तो फिर इन्हें तुम दोषी कैसे करार दे सकते हो? ये तो बच्चे हैं, इन्होंने जो कुछ सीखा है उसी के अनुरूप ये बातें कर रहे हैं। जब ये बड़े हो जाएंगे और इन्हें कुछ होश आ जाएगी तो उस समय कुछ कहा जा सकता है। पाँच साल का अबोध बालक कितना सा होता है, इतने बड़े बच्चों को तो गोदी में उठाकर घूमा जाता है, अपने साथ सुलाया जाता है और तुम लोग इनके ऊपर दोष लगा रहे हो, जैसे कि ये कोई बागी हों? मैं न तो स्वयं बुजदिल हूँ और न ही मेरा खानदान ही बुजदिल है कि हम इन बच्चों से बदला लें। हाँ कभी गुरू गोबिंद सिंह युद्ध में आ जाएँ तो फिर अपने जौहर दिखाएँगे और पूरे जोर से लड़ेंगे। इतना ही नहीं बल्कि उसने कहा कि मैं तो इस प्रकार की सभा में बैठना ही अपना अपमान समझता हूँ जहाँ पर कि इन्साफ की कोई बात ही न हो रही हो। उस समय नवाब के मन में आया कि इन बच्चों को छोड़ ही दिया जाना चाहिए। उस समय वहाँ पर दो लोग बैठे थे। एक का नाम सुच्चानन्द था, जिसे कि इतिहास में झूठानन्द कहा गया है जो कि उसका वजीर था और दूसरा हरियश था। उस समय झूठानन्द खड़ा हो जाता है। वह कहने लगा, नवाब साहिब! इन बच्चों को छोड़ा नहीं जाना चाहिए क्योंकि ये दोषी हैं। राजनीति कहती है कि इन्हें छोटे मत समझो ये नागों के पुत्र हैं और नाग का पुत्र नाग ही बनता है।

अबि पकरे बस आइ तुमारे।
छूट न जाहिं मवास मझारे॥

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पंना - 5353

ये बड़ी मुश्किल से आपकी गिरफ्त में आए हैं। सुच्चानन्द क्षत्रिय था। उसी समय हरियश कहने लगा, नवाब साहिब! सुच्चानन्द ने यह बात बिल्कुल ठीक ही कही है।

काजी कहने लगा, मेरे पास कोई दफा नहीं है जो कि मैं इनके ऊपर लगा दूँ। वह बोला, दफा तो अभी इसी समय लगवा देता हूँ। हुक्म करवा कर बच्चों को भिजवा दिया। सभा जारी रही। थोड़ी देर में उसने तीन दुकानें लगवा दीं। एक दुकान मिठाई की लगवा दी, दूसरी खिलौनों की और

तीसरी हथियारों की लगवा दी। इसके बाद उन्होंने बच्चों को बुला लिया और कहा कि बच्चो! तुम्हें आजाद कर दिया गया है। ये तीन दुकानें लगी हुई हैं, यदि तुमने कुछ खाना-पीना है तो वह खा लो कोई खिलौने वगैरह लेने हैं तो वे ले लो। उस समय दोनों भाई बाहर निकलते हैं, सिपाही दूर होकर निगरानी करने लग पड़े। उन दोनों भाइयों ने खाने-पीने वाली और खिलौनों वाली दुकानों की तरफ तो देखा भी नहीं आखिर में जो हथियारों वाली दुकान थी, उस पर दोनों भाई पहुँच जाते हैं। उस दुकान पर तीर कमान पड़े हैं, कृपाणें पड़ी हैं, रायफलें पड़ी हैं। उस समय उन्हें कहा गया कि तुम्हें जो कुछ भी चाहिए, वह ले लो। उन्होंने उसी समय शस्त्र धारण कर लिए। कटारें व कृपाणें पहन लीं, तीर कमान ले लिए, रायफल ले ली, ढाल भी उठा ली। सुच्चानन्द, नवाब तथा काजी साथ में हैं। सुच्चानन्द कहने लगा, बच्चो! बच्चों का काम तो होता है मिठाई खानी, या खेल खेलने और तुम लोग तो शस्त्र उठा रहे हो? जब हम तुम लोगों को आजाद कर देंगे तो उस समय तुम क्या करोगे?

वे बोले, हम बाहर जाएँगे, सिंहों का एकत्र करेंगे और जो लोग जुल्म करते हैं उन्हें जुल्म करने से रोकेंगे और उनके साथ युद्ध करेंगे -

बडे होइंगे पिता समाना।
लाखहुं लशकर कीनसि हाना।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पंना - 5353

जब इतनी बात सुनी तो सुच्चानन्द बोला क्यों काजी साहिब! ये बागी हुए या नहीं? इनके ऊपर बगावत का दोष लगता है या नहीं? उस समय काजी ने कहा, हाँ, अब इनके ऊपर बगावत का दोष लगता है। अब उम्र का ख्याल किसी ने भी नहीं किया।

सुच्चानन्द कहने लगा, जब ये बच्चे पिता की भांति बड़े हो गए तो जैसे इनके पिता ने असंख्य सेनाओं का नाश कर दिया है उसी प्रकार से ये भी करेंगे। ये भी -

नित उधम को देश उठावैं।
एह नहिं कयोंहूं सीस निवावैं।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पंना - 5353

ये तो फिर नित्य प्रतिदिन झगड़े किया करेंगे। अब भी ये किसी के आगे शीश नहीं झुकाते हैं। उस समय फिर ये किसका भय मानेंगे?

इस घटनाक्रम के बाद में काजी ने हुक्म कर दिया कि हुकूमत के खिलाफ बगावत करने के दोष की सजा दीवारों में चिनने की होती है। अतः इन्हें दीवारों में चिन दिया जाए। उसी समय हुक्म की तामील हो गई। ईंटें मंगवा ली गईं, गारा मंगवा लिया गया।

उस वक्त दीवारों को बनाना कोई भी शुरू नहीं करता है। सभी इधर-उधर देखते हैं लेकिन कोई भी तैयार नहीं होता है। संयोग से वहाँ पर दो जल्लाद भी दिल्ली से आए हुए थे, जिनका वहाँ पर मुकद्दमा था। एक जल्लाद का नाम था शशाद बेग और दूसरे का नाम था विशाल बेग। जिस समय वे आए तो उस समय नवाब ने कहा कि हम यह काम तुम्हारे जिम्मे लगाते हैं। वे बोले ठीक है हम तो रोज ही ऐसे कार्य करते हैं, इन्हें दीवार में ही तो चिनना है।

साधु संगत जी! अब दीवार में चिनना शुरू कर दिया गया। साहिबजादे आपस में बातें कर रहे हैं कि देखना हम लोगों ने डोलना नहीं है, हम लोग अब गुरपुरी को जाएंगे जिस समय हमारा शरीर छूट जाएगा, घबराना नहीं।

उस वक्त दीवार चिनते-चिनते दीवार गिर जाती है, उधर दोनों साहिबजादे बेहोश हो जाते हैं। उधर शाम हो जाती है और कचहरी बरखास्त हो जाती है। उन्हें कम्बलों में लपेट दिया जाता है, रात को उन्हें गर्म चीजें भी देते हैं ताकि इन्हें होश आ जाए। अब दूसरा दिन हो गया और अब दोबारा बुला लिया गया तथा वही सवाल दोबारा दोहराए गए। उन्होंने कहा कि जब हम लोगों ने एक बार कह दिया है तो फिर अब तुम लोग बार-बार सवालों को क्यों दोहरा रहे हो? हम तो चाहते हैं -

धरम हेत सिर चाहति दीयो।
तुरकनि जराँ बिनाशी कीयो।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पंना - 5353

हमारे शहीद होने से तुम्हारे राजभाग का नाश हो जाएगा। हम तो याद करते हैं -

सिमरहिं बात पितामे केरी।
लाज बंस की चहैं बडेरी।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पंना - 5353

हमने तो अपने वंश की लाज रखनी है, धर्म से हारना नहीं है। उस समय इन जल्लादों को कहा गया और इन्होंने उन दोनों को अपने घुटनों के नीचे दबा लिया तथा जिस प्रकार से बकरे को हलाल किया जाता है, उसी प्रकार से इनके ऊपर छुरी चलाई -

अधम तबै तरवार चलाई।
सिर जुझार सिंघ दयो गिराई।
बहुत दूसरो वार प्रहारा।
फते सिंघ को सीस उतारा।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पंना - 5353

उस समय बहुत बड़ी संख्या में सभा के लोग एकत्र थे, सारा शहर भी वहाँ पर एकत्र हो गया और चहुँओर हाहाकार मच गई। क्या मुसलमान, क्या हिन्दू जिनके अन्दर नर्म दिल था, वे सभी अफसोस करते हैं और अपने आंसुओं को रुमाल से पोंछ रहे हैं। इधर तो हाहाकार मची हुई थी और उधर दरगाह में जय जयकार होने लग पड़ी। इस प्रकार से आप लोग पढ़ लो -

धारना - जै जैकार सुरगाँ विच होवे,
हाइ-हाइ करे सारी दुनीआँ।
हाहाकार जहाँ कहिं भयो।
जै जै शबद सुरनि महिं थियो।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पंना - 5954

गन्धर्व लोक, देव गन्धर्व लोक, पितृ लोक, स्वर्ग लोक, इन्द्र लोक, कर्मदेव लोक, अजानदेव लोक, ब्रह्म लोक, शिव लोक, बैकुण्ठ धाम तक जितनी भी सृष्टि थी, वह सभी पुष्प वर्षा कर रही है। देवते भी पुष्प वर्षा कर रहे हैं, नाद बजा रहे हैं। उस समय साहिबजादे माता जी को नमस्कार करने जाते हैं क्योंकि वे तो अमर आत्माएँ थीं। माता जी को भ्रम पड़ गया। कहने लगीं, पुत्रो! तुम लोग आ गए? कहने लगे, नहीं माता जी! हम लोग तो अब जा रहे हैं, हमें आपका आशीर्वाद चाहिए।

माता जी ने कहा, तुम लोग जा रहे हो?

वे बोले, हाँ हम लोग अब जा रहे हैं।

माता जी बोले, बच्चो! फिर आप दादी को भी साथ ले चलो, मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ। माता जी ने 28 वर्षों तक नाम-योग की साधना की थी। उनका दसवां द्वार खुला हुआ था। शरीर में आना और बाहर चले जाना उनके लिए एक स्वाभाविक क्रिया थी क्योंकि नाम अभ्यासियों के लिए यह एक सामान्य क्रिया हुआ करती है। अतः उस समय माता जी ने समाधि लगाई, श्वासों को दसवें द्वार में चढ़ाया और ब्रह्मरन्ध्र को तोड़कर आप अपने पोतों के पास चले जाते हैं क्योंकि जो गुरुमुख होता है उसके पास काल नहीं आया करता है वे तो सदैव अपनी मर्जी से ही आते व जाते हैं -

धारना - आवे जाए निसंग,
गुरमुख पिआरा-गुरमुख पिआरा।

वे तीनों धर्म पर से बलिदान देकर और हमें शिक्षा देकर अपने अमर लोक के अन्दर, सुरलोक में चले जाते हैं।

अतः इस वार्ता को जब माही सुना रहा है तो उस समय सुनने वालों के नेत्रों में से जल जा रहा है, सारे रो रहे हैं। राय कल्ला भी तथा जितने भी वहाँ पर बैठे हुए थे, उन सभी के नेत्रों से अश्रुधारा प्रवाहित हो रही है। उधर महाराज जी एक पलंग पर बैठे हुए हैं तथा एक छोटी सी कृपाण को एक घास के पौधे के चारों तरफ घुमाते जा रहे हैं। जिस समय माही सारा हाल सुना चुका तो उस समय उसने कहा महाराज जी मैं अब और नहीं बोल पा रहा हूँ। वहाँ पर उपस्थित सभी प्रेमीजन गम में डूबे हुए हैं और कोई भी व्यक्ति एक दूसरे से नहीं बोल रहा है और गुरू जी भी अपने ध्यान में बैठे हुए हैं।

इसके बाद माही ने बताया कि महाराज जी! उसके बाद सोने की मोहरें बिछा कर जगह खरीदी गई और तब साहिबजादों का तथा माता जी का संस्कार किया गया। दोनों साहिबजादों का संस्कार दूसरी तरफ है तथा माता गुजरी जी का संस्कार दूसरी तरफ है। ऐसा प्रतीत होता है कि मानो माता जी उनकी रक्षा करने के लिए दरवाजे पर खड़े हों। जब इतना वचन हुआ तो महाराज जी ने उस पौधे को, जिसके चहुँओर आप छोटी कृपाण को घुमा रहे थे, उखाड़ लिया और फुरमान किया -

धारना - ह्थीं आपणी उखाड़ी जड़ पापीआ,
कर लिआ नाश आपणा।

महाराज जी कहने लगे, प्रेमीजनो! मुगल खानदान ने अपने राज्य का, अपने आप ही नाश कर लिया है। उसने अपनी जड़, अपने आप ही उखाड़ दी है।

सुनिकरि श्री गुर बाक बखाना।
भयो नाश अबि सभि तुरकाना।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पंना - 5957

कहने लगे, हाय का नारा मलेरकोटले वाले ने मारा था, प्रेमीजनो!

इक मलेरीअन की जड़ रहै।
अपर तुरक सभि ही जर दहै।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पंना - 5953

बाकी सबकी जड़ उखड़ जाएगी किसी का नामोनिशान संसार पर नहीं रहेगा, किसी का राजभाग नहीं रहेगा और अपने पापों का फल ये लोग सदियों तक भोगेंगे तथा मलेरकोटले वालों की जड़ सदा ही हरी रहेगी क्योंकि उन्होंने बहादुरों वाला काम किया है। नि:शंक रूप से वे हम लोगों के साथ लड़ते ही रहे लेकिन उन्होंने कार्य तो मर्दों वाला ही किया है। बाकी तुम लोग अफसोस मत करो बल्कि उनका यशगान करो -

धारना - वाहवा वाहवा बई जस गाउ सारी दुनीआँ,
ऐसी करनी कर गए पिआरे।

दशमेश जी बोले, अफसोस करने का कोई कारण नहीं है, बल्कि हम लोगों को तो खुशी होनी चाहिए कि छोटे-छोटे बच्चे कितना बड़ा कार्य कर गए हैं और हमें रास्ता दिखला गए हैं।

इस प्रकार से साधु संगत जी! हम लोगों को विचार करनी चाहिए कि हम सब इन बातों को कैसे देखते हैं? हम किस स्तर पर खड़े हुए हैं। धन्य हैं दशमेश पिता जी जिन्होंने अपना सारा परिवार ही देश, कौम व धर्म पर न्यौछावर कर दिया और वह भी खुशी-खुशी। साथ ही कह रहे हैं कि हे प्रभु जी! तुम्हारी अमानत अदा हो गई, अपनी अमानत सम्भालो। अमानत वापिस देने के समय कठिनाई महसूस करते हैं। कोई व्यक्ति ऐसा नहीं है जो अमानत लेकर दोबारा वापिस करते समय खुश हो। जब अमानत वापिस करनी पड़ती है तो उस समय बहुत परेशानी महसूस होती है -

दस बसतू ले पाछै पावै ॥
एक बसतु कारनि बिखोटि गवावै ॥ अंग - 268

यह व्यक्ति परमात्मा की दी हुई एक चीज भी वापिस नहीं करता है और उसी समय 'मैं' को धारण कर लेता है और उस चीज को वह अपनी बना लेता है। ये तो गुरू महाराज जी ही थे जिन्होंने अपना सारा ही परिवार न्यौछावर कर दिया। वैसे जो देश की पुरानी संस्कृति थी, जो संस्कृति की विरासत थी, वह तो बहुत शानदार थी लेकिन गुलामी में आ जाने के कारण और परमात्मा से टूट जाने के कारण प्राचीन संस्कृति का वह मूल रूप व उसका तेज अत्यन्त धुँधला हो गया था। उस समय कुर्बानी देने की नितान्त आवश्यकता थी। दरअस्ल व्यक्ति का चरित्र बिल्कुल गिर चुका था, उसी को उठाने के लिए आपने बहुत बड़ी कुर्बानी दी लेकिन साधु संगत जी! हम उनकी कुर्बानी की कद्र नहीं कर सके -

धारना - पिता वारिआ पुतर चारे वारे,
देसा तेरी शान बदले।

गुरू दशमेश जी की बदौलत ही आज सारा भारतवर्ष एक आजाद मुल्क के तौर पर खड़ा हो गया है यानि कि हम आजाद हो गए हैं। कौन था वह व्यक्ति जिसने इसे आजाद कराया। साधु संगत जी! किसी महल की जो बुनियादें होती हैं, उसकी तरफ तो बहुत कम ही ध्यान जाता है। सतगुरू राम सिंह जी का शहीदी दिवस मना रहे थे। मैंने कहा कि किस प्रकार से मलेरकोटले के अन्दर तोपों के द्वारा उड़ा दिए गए। न कोई कानून, न कोई दलील या अपील। उन्होंने अपनी शहादतें किस चीज के लिए दी? लाखों शहादतें सिंहों ने दीं इसमें उनकी अपनी कोई भी गरज नहीं थी। जो शहीद होता है वह तो चला जाता है और उसका फल तो दूसरे लोग ही खाते हैं क्योंकि उसने न तो यहाँ पर दोबारा आना है और न कोई उसकी पहचान। न जाने वह कहाँ पर चला जाए। अतः दूसरों को सुख देने के लिए यह सबसे बड़ी कुर्बानी है। साधु संगत जी! जो सत्य के लिए कुर्बानी दी जाती है, वह सबसे बड़ी कुर्बानी होती है। इस प्रकार से उनकी कथाएँ विलक्षण हुआ करती हैं जो कि परमात्मा की स्वीकार्य हो जाते हैं -

धारना - हरि के सेवक जो हरि भाए,
तिन की कथा निरारी रे।

हरि के सेवक जो हरि भाए तिन् की कथा निरारी रे॥
आवहि न जाहि न कबहू मरते पारब्रहम संगारी रे ॥
अंग - 855

वे तो आज भी हमारी आँखों के सामने उसी प्रकार से हैं, तो फिर मरता कौन है? मरता वही है जो परमात्मा को भूला हुआ होता है। सत्य पुरुष कभी भी मरा नहीं करते हैं बल्कि वे तो सदैव ही जीवित रहते हैं -

ब्रहम गिआनी सद जीवै नही मरता ॥ अंग - 273

मृत्यु तो गुनाहगार लोगों के लिए हुआ करती है लेकिन जिन्होंने अमरावस्था प्राप्त कर ली होती है वे नहीं मरा करते हैं। इस प्रकार से जिनकी सुरति जाग जाती है, उनकी कथाएँ विलक्षण हो जाती हैं। दरअस्ल इस प्रकार के पुरुष हउमै से ऊपर निकल जाते हैं, फलस्वरूप उनका अपने शरीर से मोह भी समाप्त हो जाता है। केवल बातों के द्वारा तो सारे ही लोग इस अवस्था में पहुँचे हुए प्रतीत होते हैं लेकिन हम लोगों ने जो ये वचन सुने हैं, ये साहिबजादों के बारे में सुने हैं। ये साहिबजादों के बारे में सुने हैं, इसलिए हम सबके ऊपर इनका असर होना चाहिए। अब हमारा क्या हाल है? हम लोग तो कुछ भी नहीं हैं, हमारी तो दिशा ही बहुत गलत है। हमारे बारे में तो महाराज जी इस प्रकार से फुरमान करते हैं -

गलंी असी चंगीआ आचारी बुरीआह ॥
मनहु कुसुधा कालीआ बाहरि चिटवीआह ॥
रीसा करिह तिनाड़ीआ जो सेवहि दरु खड़ीआह ॥
नालि खसमै रतीआ माणहि सुखि रलीआह ॥
होदै ताणि निताणीआ रहहि निमानणीआह ॥
नानक जनमु सकारथा जे तिन कै संगि मिलाह ॥
अंग - 85

अब समय अनुमति नहीं दे रहा है, इसलिए अब सारे प्रेमीजन आनन्द साहिब में बोलो -

गुरु स्त्रोत, हुक्मनामा, अरदास।

बाबाणियाँ कहानियाँ

सन्त वरियाम सिंह जी
संस्थापक वि. गु. रू. मिशन

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक नवम्बर, अंग - 25)

चार प्रकार का मौन हुआ करता है -

1. जिह्वा से बात चीत करना बन्द कर देना और व्रत रखना कि मैं साल भर बोलूंगा नहीं। अब हृदय में सावधानी पूरी तरह प्रयोग करनी चाहिये कि जिज्ञासु जिभ्या के कारण तो चुप हो गया पर मन के फ़ुरनों के कारण उससे भी अधिक बोलने लग गया। यह जो जिभ्या का मौन है यह एक प्रयास है जिससे हम लगातार नाम जप कर कुछ अवस्था तय कर सकते हैं। बोलने से मनुष्य की शक्ति क्षीण होती है, इसलिये गुरमत में कम बोलना ही प्रवान किया गया है। दूसरा प्रभु से लिव टूट जाया करती है। मनुष्य का दिमाग थक जाता है, भजन करते समय या तो फुरनों का वेग चलेगा या नींद आयेगी। रस नहीं आता क्योंकि बोल बोल कर थक जाता है, बहुत बोलने वाला जब अपनी बात नमक मिर्च लगाकर बोलता है तो उसे आकृषत बनाने के लिए झूठ भी मिला देता है। झूठ बोलने के कारण फीका पड़ जाता है तथा नाम जप के अधिकार में से बाहर निकल जाता है। बहुत बोलने वाला निन्दा चुगली, ईर्ष्या, घिसी पिटी बातें करता आप बिल्कुल फीका हो जाता है। रस बिल्कुल नहीं रहता पर यदि जुबान तो बन्द कर ली, मन बोलता है और उसके फुरने, कामों की योजना, कापियों तथा स्लेटों पर लिख लिख कर देता है, वह प्रवान नहीं हुआ करता। गुरू महाराज ने फ़रमान किया है -

बेदु पुकारै मुख ते पंडत कामामन का माठा।
मोनी होइ बैठा इकांती हिरदै कलपन गाठा।
होइ उदासी ग्रिहु तजि चलिओ छुटकै नाही नाठा॥
अंग - 1003

सो गुरू महाराज जी ने मन के मौन को प्रवान किया है। इसी सम्बंध में आप फ़रमान करते हैं कि यदि तपस्या करके ही साध ली, मन चारों ओर दौड़ता रहा तो यह एक **exercise** (वृ्जश) ही है, उदास निराश होकर घर से चला गया, ब्रह्मचारी होकर गुमान (घमण्ड) में आ गया कि मैं ब्रह्मचर्य का पालन करता हूँ, उसे भी गुरू महाराज जी प्रवान नहीं करते। यदि सन्यासी होकर तीर्थो में स्नान करता फिरता है, पर आन्तरिक क्रोध को वश में नहीं किया उसके बारे में गुरू महाराज जी फरमाते हैं -

तपसी करि कै देही साधी मनूआ दहदिस धाना।
ब्रहमचारि ब्रहमचजु कीना हिरदै भइआ गुमाना।
संनिआसी होइ कै तीरथि भ्रमिओ उसु महि क्रोधु बिगाना।
अंग - 1003

सो महाराज जी फरमाने लगे कि प्यारे! हर काम विचार कर करना चाहिए। यदि वास्तव में ही तुम्हारे हृदय में यह शौक उत्पन्न हुआ है कि आप मौन व्रत धारण करके अखण्ड जाप करो तो इसके बारे में पूरी तरह से पहले समझ लेने की जरूरत है। सो पहला मौन जिभ्या का हुआ करता है वह तभी सफल हुआ करता है यदि मन फुरने करने से बन्द हो जाये।

दूसरा मौन इन्द्रियों का हुआ करता है इसमें बोलने और न बोलने का कोई सम्बन्ध नहीं होता। इन्द्रियां अपने विषयों की ओर भागती हैं। नेत्र संसार के अनेक दृश्य देखते हैं, पराया रूप देखते हैं। मित्र शत्रु की भावना से कड़वा और मीठा व्यवहार करते हैं। कान गन्दे गीत, निन्दा, चुगली आदि सुनने में लगे रहते हैं। नासिका सुगन्ध-दुर्गन्ध के विषयों से उपराम रहनी चाहिए। रसना को रसो-कशों के स्वादों में ग्रस्त होने से बचाना चाहिए। किसी के साथ फीका मत बोलो और न ही किसी को अभिमान से भरी बात कहो। न ही कोई ऐसी बात कहो जिससे दो जीवों में परस्पर प्यार टूट जाए। न ही कोई ऐसा शब्द मुख से निकालो जिससे किसी को क्रोध उत्पन्न हो बल्कि इसके स्थान पर मन को रोक कर बाणी के जाप तथा गुरू मन्त्र के जप की ओर लगाये। इन सभी इन्द्रियों के बारे में भाई गुरदास जी ने फ़रमान किया है -

अखी वेखि न रजीआ बहु रंग तमासे।
उसतति निंदा कंनि सुणि रोवणि तै हासे।
सादीं जीभ न रजीआ करि भोग बिलासे।

नक न रजा वासु लै दुरगंध सुवासे।
रजि न कोई जीविआ कूड़े भरवासे।
पीर मुरीदाँ पिरहड़ी सची रहरासे॥

भाई गुरदास जी, वार 27/9

इसके स्थान पर गुरू दर्शन करना, सन्तों, महापुरुषों के दर्शन करना, प्रभु के अस्तित्व को *'बलिहारी कुदरति वसिआ'* में देखना और दया दृष्टि में जीवन बिताना सफल हुआ करता है। कानों द्वारा हरि यश सुनना, हरि कथा सुनकर हृदय में विचार करना और धारण करना श्रेष्ठ कर्म हुआ करते हैं। नासिका को दुर्गन्ध सुगन्ध के विचार से अलोप रखना। जिभ्या द्वारा हरि यश गायन करना और जिभ्या द्वारा नाम जपना श्रेष्ठ हुआ करता है। ऐसे कर्म करके मन की भटकन बहुत कम हो जाया करती है और मन को वश में करने के लिए प्यार के साथ प्रभु का नाम जपना और उसका अस्तित्व हर समय अनुभव करना और उस प्यारे प्रभु को, जिसका कोई रंग रूप नहीं है, रेख-भेख नहीं है, चक्र-चिन्ह नहीं है, यह समझना कि वह मुझे हर समय देखता है। जहाँ भी जाता हूँ वहीं पर मेरे साथ होता है। जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश में खड़े होकर हम उसकी धूप को अनुभव करते हैं। इस प्रकार संसार में प्रभु को हाज़िर नाज़िर समझना जैसा कि हुक्म है –

जिमी जमान कै बिखै समसत एक जोत है
न घाट है न बाढ है न बाढ घाट होत है।

अकाल उस्तति

जह जह पेखउ तह हजूरि दूरि कतहु न जाई।
रवि रहिआ सरबत्र मै मन सदा धिआई॥
ईत ऊत नही बीछुड़ै सो संगी गनीऐ।
बिनसि जाइ जो निमख महि सो अलप सुखु भनीऐ॥
प्रतिपालै अपिआउ देइ कछु ऊन न होई।
सासि सासि संमालता मेरा प्रभु सोई॥ अंग – 677

अतः इस प्रकार विश्वास में रहना कि अन्दर बाहर सभी जगह वाहिगुरू जी परिपूर्ण है। कोई जगह ऐसी नहीं जहाँ उनका अस्तित्व न हो। जैसा कि सुखमनी साहिब में फ़रमान है –

सो अंतरि सो बाहिर अनंत।
घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत।
धरनि माहि आकास पइआल।
सरब लोक पूरन प्रतिपाल।
बनि तिनि परबति है पारब्रहमु।
जैसी आगिआ तैसा करमु।
पउण पाणी बैसंतर माहि।
चारि कुंट दहदिसे समाहि।
तिस ते भिंन नही को ठाउ।
गुर प्रसादि नानक सुखु पाउ॥ अंग – 294

हाथों से सेवा करना क्योंकि सेवा के बिना जो हाथ हैं उन्हें धिक्कार कहा जाता है –

विण सेवा ध्रिगु हथ पैर होर निहफल करणी।
पीर मुरीदां पिरहड़ी सुख सतिगुर सरणी॥

भाई गुरदास जी, वार 27/10

सेवा करने के बाद कोई भी मान भाव हृदय में न धारण करना तथा कामनाओं से ऊपर उठ कर केवल गुरू की प्रसन्नता के लिए सेवा करना। इससे प्रभु का प्यार प्राप्त होता है और वाहिगुरू जी के साथ इकमिक हो जाता है। जैसा कि फ़रमान है –

सेवा करत होइ निहकामी।
तिस कउ होत परापति सुआमी। अंग – 286

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ।
ता दरगह बैसणु पाईऐ।
कहु नानक बाह लुडाईऐ॥ अंग – 26

इस प्रकार पूरी तरह से सुचेत और जाग्रत होकर पूरी चेतनता और लगन के साथ जब हम भजन करेंगे उस समय जिह्वा के मौन की कोई जरूरत नहीं रहती। इन्द्रियों के मौन से उच्च अवस्था प्राप्त हो जाया करती है।

अन्तरि गुरु आराधणा जिहवा जपि गुर नाउ।
नेत्री सतिगुरु पेखणा स्त्रवणी सुनणा गुर नाउ।
सतिगुर सेती रतिआ दरगह पाईऐ ठाउ। अंग-517

इन्द्रियों का मौन, जिभ्या के मौन से हज़ारों गुणा फलदायक होता है –

तीसरी प्रकार का मौन काफी कठिन हुआ करता है। यह मौन हुआ करता है – मन का। मन को हर प्रकार के फुरनों से रोकना और सदा ही मन गुरू के चरणों में लगाना। किसी का बुरा न चितवना। खोटे संकल्प मन में उठने ही न देना, गुरू शब्द के चिन्तन में मन को लगाना, गुरबाणी पर पूरा भरोसा रखना। जब यह गुरू के ध्यान में जुड़ेगा और गुरू के शब्द को मन में बसायेगा; उस समय इसे उच्च अवस्था प्राप्त होना आवश्यक है। गुरू महाराज जी फ़रमान करते हैं –

गुर की मूरति मन महि धिआनु।

गुर कै सबदि मंत्रु मनु मान।
गुर के चरन रिदै लै धारउ।
गुरु पारब्रहमु सदा नमसकारउ॥ अंग - 864

मन में पूर्ण श्रद्धा रखना तथा गुरू के वाक्यों के ऊपर पूरी निष्ठा के साथ अमल करना यह तीसरी प्रकार का मौन हुआ करता है। इसे मन का मौन कहा जाता है।

चौथा सबसे श्रेष्ठ मौन ज्ञान का प्रकाश होने से हुआ करता है। उस समय सारी कल्पनाएं, सारे द्वन्द, सारे झगड़े झंझट, मित्र, अपने पराये, भले-बुरे, पाप-पुण्य पूरी तरह से सूझ बूझ में से निकल जाया करते हैं और ऐसी अवस्था आ जाती है जिसके बारे में गुरू महाराज जी फ़रमान करते हैं -

मन मेरे जिनि अपुना भरमु गवाता।
तिस कै भाणै कोइ न भूला
जिनि सगलो ब्रहमु पछाता॥ अंग - 610

जब ब्रह्म की पहचान होती है तो यह देखता है कि यहाँ तो सारी घटाओं में जिधर भी मैं देखता हूँ हर जगह पर वाहिगुरू जी जो परिपूर्ण है और वह सभी शरीरों में बसता हुआ आप ही अलग अलग नाटय कर रहा है। कहीं वह भला है, कहीं वह बुरा है। गुरू दशमेश पिता जी फ़रमान करते हैं -

कतहूँ सुचेत हुइकै, चेतना को चार कीओ,
कतहूँ अचिंत हुइकै, सोवत अचेत हो।
कतहूँ भिखारी हुइकै, मांगत फिरत भीख,
कहूँ महां दान हुइकै, मांगिओ धन देत हो।
कहूँ महाराजन को दीजत अनंत दान,
कहूँ महाराजन ते छीन छित लेत हो।
कहूँ बेद रीत, कहूँ ता सिउ बिप्रीत,
कहूँ त्रिगुन अतीत, कहूँ सुरगुन समेत हो।
कहूँ ब्रहम बाद, कहूँ बिदिआ को बिखाद
कहूँ नाद को ननाद, कहूँ पूरन भगत हो।
कहूँ बेद रीत, कहूँ बिदिआ की प्रतीत,
कहूँ नीत अउ अनीत, कहूँ ज्वाला सी जगत हो।
पूरन प्रताप कहूँ, इकाती को जाप कहूँ,
ताप को अताप कहूँ, जोग ते डिगत हो।
कहूँ बर देत, कहूँ छल से छिनाइ लेत,
सरब काल सरब ठउर एक से लगत हो॥
अकाल उस्तति

जब हर तरफ हर शरीर में, पवन में, पानी में, आग में प्रभु के अस्तित्व का निश्चय हो गया उस समय जो मौन हो जाया करता है उसे 'ज्ञान मौन' कहते हैं। यह मौन सबसे श्रेष्ठ मौन है। इसमें अपना आपा भाव मिटकर ब्रह्म भाव पैदा हो जाया करता है। यह सारी सृष्टि प्रभु का ही रूप है और प्रभु स्वंय ही अनेक रूप धारण करके इसमें नाटय कर रहा है, कहीं कथा कर रहा है, कहीं सुन रहा है, कहीं मौनी बन कर बैठा है, कहीं ध्यान लगाये बैठा है, कहीं इसके विपरीत क्रिया करता नज़र आता है। जब ऐसा ज्ञान हो जाये वैरी मित्र कोई भी न रहे तो अपना आपा (निजित्व) ही संसार में नज़र आता है। उस महान अस्तित्व का जो हमारे अन्दर वजूद है उसका अभेद अंग है, यह कोई अलग नहीं है। यदि यह कह दे कि यहाँ वाहिगुरू के बिना न कोई हुआ है, न होना है, न होगा ही यह गुरमत का सिद्धान्त है। गुरू नानक पातशाह जी ने मूल मन्त्र -

१ओंकार सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि॥

के बाद वाहिगुरू जी के सदीवी अस्तित्व की साकारता प्रवान करते हुये फ़रमान किया है कि जब कुछ भी नहीं था, उस समय भी वाहिगुरू जी स्वंय थे, जब समय का आरम्भ हुआ तब भी आप ही थे। यहाँ और कोई किसी भी ओर से दाखिल नहीं हुआ। अब जो क्रिया दिन रात होती रहती है वह भी वाहिगुरू जी आप ही कर रहे हैं। इस मूल मन्त्र के बाद गुरमत सिद्धान्त की प्रमुखता को दर्शाते हुये आप जी ने फ़रमान किया है कि जब कुछ भी नहीं था उस समय भी वाहिगुरू जी आप थे, जब समय का आरम्भ हुआ उस समय भी आप ही थे यहाँ कोई ओर किसी और से किसी ने भी प्रवेश नहीं किया -

आदि सचु जुगादि सचु।
है भी सचु नानक होसी भी सचु॥ अंग - 1

अब जो क्रिया दिन-रात होती रहती है उसमें वह स्वंय ही अनेक रूप धारण करके स्वंय आप ही स्थित है। जब यह खेल समाप्त की जायेगी तो भी वहाँ आप ही होंगे। यहाँ न दूसरा तत्व माया है यह वाहिगुरू जी ने अपना खेल रचने के लिये उत्पन्न किये हैं -

जिनि रचि रचिआ पुरखि बिधातै नाले हउमै पाई।
जनम मरणु उसही कउ है रे ओहा आवै जाई॥
अंग - 999

एक मूरति अनेक दरसन कीन रूप अनेक।
खेल खेल अखेल खेलन अंत को फिर एक॥
जापु साहिब

सो जब यह भावना, यह सूझ परिपक्व रूप में किसी भी शक सन्देह के बिना पूरी तरह मान ली जाये फिर सर्व मौन हुआ करता है। इस प्रकार आप जी ने संगत को

समझाया पर यह विचार करते हुए कि जब तक किसी नियमाधीन साधना न की जाये तो तीसरी और चौथी प्रकार के मौन तक जिज्ञासु की पहुँच बहुत कठिन हुआ करती है। उस समय आप जी ने कुछ नियम बताये कि गुरू महाराज जी के पास प्रार्थना करके हजूर की कृपा से समय नियत करके मौन रखा जाता है। जितने दिन का मौन रखा गया है, उतने दिन कोई भी बात किसी तरीके से भी नहीं करनी। विशेष तौर पर अमृत बेला में उठकर स्नान करना, रात के एक बजे से पौ फटने तक एक रस सुमिरन करना। सारा दिन सुमिरन करते रहना, रसों कशों का फुरना मन में न उठने देना, आठों पहर भजन करना, दिन के समय भोजन खाने के बाद 2 घंटे आराम करना। रात को भी दो घंटे आराम करना। आठ पहर में 20 घंटे अपने मन को भजन करने में लगाये रखना तथा सिर्फ चार घंटे आराम करना। भोजन बहुत कम खाना, कोई श्वास भजन के बगैर खाली न जाने देना, पूरी तरह से सुचेत रहना, तन्द्रा आदि न होने देना। अपने आपको गुरू के हजूर मुर्दे की तरह समझना, किसी बात का भी अभिमान न करना और हमेशा ही याद रखना -

मुरदा होइ मुरीदु न गली होवणा।
साबरु सिदकि सहीदु भरम भउ खोवणा।
गोला मुल खरीदु कारे जोवणा।
ना तिसु भूख न नीद न खाणा सोवणा।
पीहणि होइ जदीद पाणी ढोवणा।
पखे दी तागीद पग मलि धोवणा।
सेवक होइ संजीदु न हसणु रोवणा।
दर दरवेस रसीदु पिरम रसु भोवणा।
चंद मुमारखि ईद पुगि खलोवणा॥

भाई गुरदास जी, वार 3/18

सो इस प्रकार का मौन धारण करके कोई जीवन भर यह नियम निभा दे तो उसका एक ही जन्म में कल्याण हो सकता है। यह वचन सुनकर 18 सिहों ने मौन धारण की प्रार्थना कर दी और अपने प्रण को निभाने के लिए पूरे 6 वर्ष मौन धारण किये रखा। इनमें से एक से एक बड़ा जिज्ञासु था। कोई सुमिरन के अतिरिक्त 108 जपुजी साहिब के पाठ करता, मूल मन्त्र की कई कई पक्की मालाएं रोज़ करते, सुखमनी साहिब के 25 पाठ रोज़ करने, कई प्रेमियों ने तीन चार दिन में ही सहज पाठ का भोग डाल देना, इनके रहने के लिये विशेष प्रबन्ध किया गया। बाहर की आवाजाई को रोकने के लिए इनके निवास कुटिया के चारों ओर सरकण्डों की बाढ़ लगवा दी गई। भोजन कराने वाला आठों पहर भोजन लेकर जाना और सतनाम की आवाज़ लगाकर सुरक्षित स्थान पर रखे हुये बर्तन में एक कड़छी मूंग की दाल या खिचड़ी डालता। यह प्रेमी साथ बहती हुई नदी में अमृत बेला में केशों सहित स्नान करते और दिन निकलने तक छोटे तथा बड़े प्राणायामों की सहायता से गुरू मन्त्र का जाप करते। कई प्रेमी गुरू की मूरत का ध्यान मन में रख कर गुरू चरणों में लीन रहते। सन्त महाराज जी इन मौनियों को कभी कभी बुलाकर अति उच्च कोटि के निज अनुभव से कमाये हुए उपदेश देते जिनसे इनका उत्साह और बढ़ता था।

इस प्रकार बड़े महापुरुष और छोटे सन्त जी भी मौन व्रत में रहते और इतना कठिन परिश्रम किया कि प्रभु ज्योति को अन्दर साक्षात्कार करके प्रकट कर लिया। उस समय आप जी की खुराक इतनी कम हो गई थी कि शरीर वास्तव में ही सूख कर बाबा फरीद की तरह हड्डियों की मुट्ठी सा ही रह गया। एक बार आप सहज ही मेरे साथ वचन करते हुये बता रहे थे कि हम पूरे 9 वर्ष न तो पलंग पर सोये हैं और न ही धरती पर पीठ लगाई है। कई प्रेमी हैरान होंगे कि नींद के बिना शरीर रह सकता है? इसके बारे में मैं पहले ही बहुत विस्तारपूर्वक बता चुका हूँ। जब सुरत दशम द्वार में प्रवेश कर जाये नींद और भूख दोनों ही तंग नहीं करतीं। शरीर को सुला दिया जाता है, सुरत हमेशा जागती रहती है। इस हउमै की सुरत का नाश हो जाता है। आत्म सुरत जो कभी भी नहीं सोया करती उसका प्रकाश हो जाया करता है। एक बार महाराज जी ने फ़रमान किया कि हम इस वैराग की अवस्था में साधन कर रहे थे। हमारी सुरत जब सहंसरार दल कमल को पार कर रही थी तो वहाँ अचानक ही आवाज़ें आनी शुरू हो गईं और अपना नाम ले लेकर अपने कौतुकों की व्याख्या सुनाने लगी। एक ने कहा कि हम सिद्धियाँ हैं, मैं अन्तरात्मा सिद्धि हूँ, मुझे अपना लो, मैं सभी के हृदय की बात तुम्हें पहले ही बता दिया करूँगी। एक ने कहा कि मैं दूर के दृश्य देखने वाली हूँ, मुझे अपना लो, हज़ारों मीलों पर हो रही बात ऐसे प्रकट होगी जैसे कुछ फुटों की दूरी पर हो रही हो। एक आवाज़ आई कि मैं प्रेरणा शक्ति हूँ जिसके लिये भी तुम मन में विचार (फुरना) करोगे, मैं उसी व्यक्ति को प्रेरित करके आपके चरणों में लाकर खड़ा कर दूंगी। एक आवाज़ आई कि मैं वशीकार सिद्धि हूँ जिसे भी आप अपने वश में करना चाहो उसे आपके वश में कर दिया करूँगी।

'चलता'

गुरू तेग बहादुर जी

(शहीदी दिवस - 12 दिसम्बर, 2018)

सन्त वरियाम सिंह जी
संस्थापक वि. गु. रू. मिशन

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक नवम्बर, पृष्ठ - 33)

द्वापर युग में दुर्योधन ने एक औरत को काबू किया, जो कि बहुत सम्मान वाली थी, उसका नाम द्रौपदी था। इसने आदेश दे दिया कि इसके वस्त्र उतार दो।

अंदरि सभा दुसासणै
मथेवाल द्रोपती आंदी।
दूता ने फुरमाइआ
नंगी करहु पंचाली बांदी।।

भाई गुरदास जी, वार 10 पउड़ी 2

जब कोई रक्षा करने नहीं आया तो उसने एक ही आवाज दी कि पातशाह -

अखी मीटि धिआनु धरि
हाहा क्रिसन करै बिललांदी।।

भाई गुरदास जी, वार 10 पउड़ी 2

एक ही आवाज में परमेश्वर की, वाहिगुरू जी की शक्ति प्रकट हो गई और स्वयं आ गए।

कपड़ कोटु उसारिओनु
थके दूत न पारि वसांदी।

वस्त्र को खींच-खींच कर हार गए, वस्त्र का किलानुमा आकार बन गया। सात दिन, सात रातें निरन्तर वस्त्र खींचते रहे, आखिर बेहोश हो गए।

हथ मरोड़नि सिरु धुणनि
पछोतानि करनि जाहि जांदी।।

भाई गुरदास जी, वार 10 पउड़ी 2

सच्चे पातशाह! हाथी डूब रहा था, अंगुली रह गई थी सूंड, लेकिन एक ही आवाज दी है -

जब ही सरनि गही किरपा निधि
गज गराह ते छूटा ॥
महमा नाम कहा लउ बरनउ
राम कहत बंधन तिह तूटा ॥ *अंग - 632*

प्रभु जी की शरण लेते ही छूट गया। अब तो हजारों लोग मार दिए और हमने सुना है कि जब तक सवा लाख मन जनेऊ नहीं उतरता, तब तक बादशाह भोजन नहीं करता। वह प्रतिदिन रिपोंट लेता है कि कितना जनेऊ उतर गया है। पातशाह इससे ज्यादा जुल्म तो हो नहीं सकता। संसार पर कोई भी नहीं आ रहा जो आकर सहायता कर दे। पिछले लोग तो कहते हैं कि परमेश्वर जी आते हैं। जो उन्हें याद करता है, लेकिन अब क्या हो गया है? सब डरते हैं, पातशाह! आप तो समर्थ हो, इस समय हमारी लाज आप के हाथ में है-

धारना - जिवें रखी सी दरोपती दी आ के,
एवं लाज रखो हिंद दी।

पातशाह! एक द्रौपदी पर भीड़ पड़ी थी, तो उसी पल आकर लाज रखी थी। पातशाह! आज तो हजारों की गिनती में, लाखों की गिनती में द्रौपदियों के चीरहरण हो रहे हैं। परमेश्वर क्यों नहीं आ रहा? हम कल्युगी जीवों के भाग्य कितने बुरे हो गए हैं, कुछ भी टस से मस नहीं हो रहा। हे पातशाह! -

लाज दरोपती विच भरे दरबार
दे के आपणा हथ सी रखी क्रिशन मुरार
उवें रखो लाज सतिगुर क्रिपा धार
बणिआ भारत वरश है
अज दुरयोधन दरबार

यहाँ एक औरत की लाज नहीं जा रही है। लाखों औरतों की इज्जत जा रही है और अब कौन लाज रखेगा, कोई नहीं है, जो आपके बिना हमें इस समय में रख ले। महाराज कहने लगे कि कोई बात नहीं, शान्ति रखो -

सच्चा साहिब आप ही कर के कोई उपाव
डुबदा बेड़ा धरम दा देसी बंन्हे ला।

हे पातशाह! एक आपका ही सहारा है, हम तो डूबते ही जा रहे हैं, हमारी बांह पकड़ लो।

राखहु अब हिंदनु की टेक
नाहिन जग महि रहे न एक

नहीं तो एक भी हिन्दू नहीं बचेगा। महाराज कहने लगे कि प्यारो! हम आपको बताते हैं कि जो धर्म होता है, कल्पवृक्ष होता है, अन्य वृक्षों को तो पानी देकर जीवित किया जाता है। लेकिन ये जो धर्म का वृक्ष होता है, इसे पानी से जीवित नहीं रखा जाता, उसे तो किसी महान पुरुष का खून, पानी के रूप में मिले तो जाकर वह प्रफुल्लित होता है। इससे कम में नहीं होता -

धरम कलपतर सबज़ रखै
हम आपणा हत संङाई।

हम अपना रक्त देकर, इस धर्म के वृक्ष को हरा भरा रखेंगे -

तब सतिगुर इंव मन ठहिराई
बिन सिर दीऐ जगत दुख पाई

इस समय हमें अपना शीश दे देना चाहिए। ईसा जी अपने अनुयाइयों के लिए सूली पर चढ़ गए थे। उन्होंने कहा था कि हमने आपका दुख अपने ऊपर ले लिया है। उन्होंने तो अनुयाइयों के लिए जान दी थी। लेकिन गुरू साहिब ने बिना ये सोचे कि कौन हिन्दू है, कौन मुसलमान है या कौन इसाई है, सब के लिए, सारी सृष्टि के लिए अपना बलिदान देना चाहा। धर्म रूपी कल्प वृक्ष को अपना खून देकर हरा भरा रखने का प्रण लिया। उस समय सब अपनी-अपनी कथाएं सुना रहे हैं कि हमारे साथ ये हुआ, ये हुआ। हम तो छिप-छिप कर समय काट रहे हैं। घर में नहीं आ सकते। ये वस्त्र भी दूसरे पहने हुए हैं और ऊंची आवाज में रोने लगे।

इतने में गुरू दशमेश पिता बाहर से अचानक आ जाते हैं। उन्होंने देखा कि इतना इकट्ठ क्यों है, बड़े-बड़े विद्वान बैठे हैं। तिलक लगे हुए हैं, बहुत सुन्दर दस्तार बंधे हैं, सुन्दर दाढ़िया हैं (उस समय कोई दाढ़ियां नहीं कटाते थे) ये बोदियों का प्रचलन तो अभी से हुआ है। पहले नहीं था। पहले ब्राह्मण के सिर पर केश होते थे, दाढ़ी होती थी, कोई नहीं कटवाता था। जो वैश्य थे, उनके लिए कोई पाबंदी नहीं होती थी। शूद्र के सिर पर केश नहीं हुआ करते थे, उन्हें हक नहीं था कि वह केश रखे क्योंकि गुलाम दाढ़ी केश नहीं रख सकते थे। अतः उस समय ये सब केशधारी, दाढ़ियों वाले और तिलक लगे हुए हैं, महाराज जी ने देखा कि ये रो क्यों रहे हैं? गुरू महाराज जी बड़ी गहरी सोच में पड़े हुए हैं, कि आप एकटक इनकी बातें सुन रहे हैं और इन विनतीकारों की आँखों से जल बह रहा है। उस समय सारा वातावरण देखकर बाल रूप गुरू दशमेश पिता जी, अपने गुरू पिता गुरू तेग बहादुर जी की पीछे की ओर से आकर बाहें गर्दन में डालते हैं और घूम कर गोद में बैठ जाते हैं। गुरू तेग बहादुर महाराज जी ने नेत्र खोले, तो उसी पल प्रश्न किया कि गुरू पिता जी! ये लोग क्यों रो रहे हैं? इन्हें तकलीफ क्यों है? क्या संकट है, जो ये चलकर आपकी शरण में आए हैं? ये दर गुरू नानक का है, यहाँ से तो कोई खाली नहीं जाता, रोते हुए भी हँसते हुए जाते हैं। इनका मनोरथ क्या है?

गुरू महाराज कहने लगे कि लाल जी! भारतवर्ष पर बहुत बड़ा संकट आया हुआ है। ये लोग तिलक और जनेऊ में विश्वास रखने वाले ब्राह्मण हैं, इस समय इनका धर्म सुरक्षित नहीं है। जोर व जुल्म से इनका धर्म परिवर्तित कर रहे हैं, इस्लाम में ला रहे हैं। बाल सतगुरू साहिब कहने लगे कि फिर? आपने कुछ सोचा होगा, महाराज कहने लगे कि हाँ बेटा! हमने इनकी रक्षा करने के बारे में सोचा है -

धारना - तिलक जंञू दी राखी नहीओं होणी,
बिनां सीस दिते लाल जी।

कोई महा पवित्र, महापुरुष अपने खून का, अपने शीश का बलिदान दे तो ये पाप रुक सकता है -

नौवें सतिगुर आखिआ मेरे सुत सुजान
ठल्ल सकदा है देश विच ज़ुलमां दा तुफान
जे कोई अणखी सूरमा जोधा कोई महान
डट खड़ोवे सामणे आपणी छाती ताण
कोई पवित्र आतमा निरभै ते बलवान
तिआगे मोह सरीर दा करके ससती जान
अगनी दे इस कंड विच दे आपणा बलीदान

कोई शूरवीर, कोई महा पवित्र आत्मा अपना बलिदान दे, इस जुल्म के कुण्ड को ठंडा करने के लिए अपना आप बलिदान कर दे, तो जाकर इस का इलाज हो पाएगा।

लेखे धरम असूल दे अरपण करे परान

उस समय दशमेश पिता जी कहने लगे, पिता जी! दुख क्या है? ये लोग उठ क्यों नहीं रहे? महाराज कहने लगे कि लाल जी! ये लोग बहुत दुखी हो चुके हैं, भीतर ही भीतर

इनकी मर्दानगी जा चुकी है, जुल्म का मुकाबला डट कर नहीं कर पा रहे हैं और अब कोई पूर्णपुरुष ही इनकी सहायता कर सकता है। आपने उस समय कहा कि पिता जी! आपसे बड़ा तो संसार में कोई है ही नहीं –

सभ ते वडा सतिगुरु नानकु
जिनि कल राखी मेरी ॥ *अंग – 750*

कोई देवी-देवता, कोई भी पीर-फकीर ऐसा नहीं है जो इस समय आप से ऊपर हो, आपका रक्त महा पवित्र है, पिता जी! यदि आपके कुर्बानी देने से ये अत्याचार रुक जाए तो आप अपनी कुर्बानी दे दो। इतना सुनते ही महाराज जी ने बड़े गम्भीर होकर बाल गोबिंद राय जी की ओर देखा, कहने लगे लाल जी! बहुत भयानक समय है, गुरू नानक साहिब जी की गद्दी पर बार-बार हमले हो रहे हैं। हमारे दादा जी को गर्म तवी पर बैठाया, उबलते पानी में उबाल दिया, बहुत कष्ट देकर शहीद किया है। उन्होंने बलिदान देकर शहीदी का सबसे ऊँचा दर्जा प्राप्त किया है। उसके बाद फिर हमारे पिता जी, गुरू हरिगोबिंद साहिब जी ने शस्त्रों का सहारा लिया। इन लताड़े हुए लोगों में जीवन भर दिया, कि साहसी शूरवीर यदि डट कर खड़े हो जाएं तो गिनतियों की कोई परवाह नहीं होती। जीत सदैव सत्य की ही होती है। छठे महाराज जी ने चार युद्ध किए, चारों में जीत प्राप्त की। सातवें गुरू साहिब को आपने वचन किया था कि आप पर कोई चढ़ कर नहीं आएगा। परन्तु आप 2200 घुड़सवार अपने साथ रखो और आठवें पातशाह के साथ औरंगजेब ने बुला कर उनके साथ बातें करनी थी और आपने प्रण लिया था कि मैं उसके माथे नहीं लगूँगा। उससे पहले भी एक बार वापिस भेज दिया था कि वह मेरे पास नहीं आ सकता हालांकि आठ वर्ष की आयु थी। जब उसने जिद की कि में तो जाऊंगा, उससे पहले ही गुरू साहिब ने शरीर त्याग दिया। गुरू तेग बहादुर जी कहने लगे, कि बेटा! इस प्रकार से गुरू नानक की गद्दी जिसने इन मुगलों को पातशाही दी थी, अब इन के राज को गिराने का कोई तरीका नहीं है। गुरू नानक जी का इन्हें ये वचन भी था कि यदि तुम अन्नयायी हो गए तो हम शीश देकर तुम से राज भी छीन लेंगे। किसी और को दे देंगे। अतः इस समय मेरा शीश देना बनता है।

उस समय बाल गुरू गोबिंद राय जी ने कहा कि पिता जी! आप मेरी चिन्ता न करें, मेरी रक्षा करने वाले अकालपुरुष जी हैं –

अकाल पुरख की रच्छा हमनै
सरब लोह दी रछिआ हमनै।
सरब लोह जी सदा रच्छिआ हमनै

मेरे सिर पर स्वयं अकालपुरुष जी हैं और मैं तो भेजा ही इस कार्य के लिए गया हूँ, अकालपुरुष जी ने कहा है कि –

मै अपना सुत तुहि निवाजा।
पंथ प्रचुर करबे कउ साजा।
जहा तहा तै धरमु चलाइ।
कबुधि करन ते लोक हटाइ।

अकाल पुरख बाच।। चौपई।।

गुरू पिता जी! मुझे भेजा ही इसलिए है कि बुरे कार्य करने वाले लोगों को रोकना है, दुष्ट लोगों पर प्रहार करना है। इन्हें सद्बुद्धि की ओर लेकर आना है। लेकिन जो न मानें तो, उन्हें ला-इलाज कैंसर के मरीज की तरह अंग का आप्रेशन करके काट कर फेंकना है। अतः उस समय विनती की –

ठाढ भयो मै जोरि कर,
बचन कहा सिर निआइ।।
पंथ चलै तब जगत मै
जब तुम करहु सहाइ।। *कबि बाच।। दोहरा।।*

मूल करहुं गुरदेव न मन अंदर संसा
आप पुरख अकाल नूं है मेरी चिंता,
इको उस दा आसरा ते इको परना
रच्छा मेरी करूगा ओह साहिब सच्चा।

आप निश्चय करके जाओ, जा कर इनके दुख को दूर करो।

ऐसी मिसालें इतिहास में कहीं नहीं मिलती। स्वयं के लिए तो संसार लड़ता है, राजभाग राज लेने के लिए बड़ी बहादुरी से लड़ते हैं, मजबूर करते हैं। बड़े-बड़े बहादुर हुए हैं, जूलियस सीजर जैसे, पोरस जैसे, परन्तु उन्होंने दूसरों के लिए लड़ाई नहीं की। पोरस ने स्वयं की रक्षा तो की, जब उसने अम्भी राजा पर हमला किया, उस पोरस ने दरिया नहीं लांघा था, ऐसा नहीं सोचा कि वहीं जाकर हम सिकन्दर को रोक लें क्योंकि अभी उस पर नहीं आई थी। अम्भी के राजा पर, तक्षशिला के राजा पर भीड़ बनी थी और दूसरों के लिए

तो कोई जाता ही नहीं –

तिलक जंञू राखा प्रभ ताका।।
कीनो बडो कलू महि साका।।
साधनि हेति इती जिनि करी।।
सीसु दीआ पर सी न उचरी।।

वह तो तिलक और जनेऊ, जिस जनेऊ के बारे में श्री गुरू नानक देव जी कहते हैं –

दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु ॥
एहु जनेऊ जीअ का होई त पाडे घतु ॥ अंग – 471

उस समय जनेऊ के धागे को नकार दिया लेकिन आज वही गुरू नानक नौवें रूप में डट कर खड़े हैं कि किसी का हक नहीं है कि दूसरे के धर्म में दखल देना और उसकी रीति, मर्यादा को भंग करना। तिलक और जनेऊ पर हमला हुआ है और उसकी रक्षा स्वयं करते हैं।

उस समय कहने लगे कि आप इस तरह करो, जाओ और जाकर कह दो, सभी एक अर्जी लिखो, लाहौर के सूबेदार को दे दो, काश्मीर के सूबेदार को दे दो, जालंधर में दे दो, दिल्ली भी दे दो, सभी को दे दो। इसी प्रकार से एक जत्था एकत्र होकर जाओ। उन्हें जाकर कह दो गुरू तेग बहादुर साहिब हिन्द के पीर हैं। हम हिन्दुओं के गुरू और मुसलमानों के पीर है। हम उनके आदेश मानते हैं, यदि वह हमें कह दें तो हम मुसलमान बन जाएंगे, इस्लाम धारण कर लेंगे। इसलिए आप अपनी प्रजा को मत मारो। यदि प्रजा ही न रही तो राज किस पर करोगे, खाली जगह पर तो राज नहीं चलते।

अतः बहुत बड़ी अर्जी लिख दी गई, 19 मुखिया आए हुए थे और उन्हें जगह-जगह लगा दिया गया कि तुम फलां जगह जाओ, तुम फलां जगह। आखिर जब चिट्ठी दिल्ली पहुँचती है तो विचार चली तो कहने लगे कि चलो ये काम तो स्वयं ही हो गया, अल्लाहताला ने कर दिया। अब कोई मुश्किल नहीं है, जब एक का ही फैसला हो गया, गुरू तेग बहादुर जी को यदि हमने मुसलमान बना लिया, तो ये तलवार द्वारा रक्त बहाने की कोई आवश्यकता नहीं है। अतः इस बात को विचार करके कहने लगे कि फिर आप सब बन जाओगे? यह बोले कि हाँ, हम इस्लाम में आ जाएंगे, यदि गुरू साहिब आ गए। उस समय गुरू साहिब की गिरफ्तारी का आदेश आ गया।

गुरू साहिब के पास अफसर आ गया। तो महाराज कहने लगे कि हम स्वयं ही आ जाएंगे। तुम लोग चिंता न करो। हम जल्दी से जल्दी पहुँच जाएंगे। जब संगत को पता चला, तो सब के भीतर विरह जाग गई, सोच रहे हैं कि गुरू साहिब स्वयं ही जा रहे हैं? इससे पहले पाँचवें पातशाह गए थे, वह वापिस नहीं आए। अब ये भी जा रहे हैं। उस समय संगत बहुत मिन्नतें करती है कि महाराज! इस कलह में आप मत पड़ो। जो हो रहा है, होने दो। हम मन्दिरों को मानते नहीं, जनेऊ नहीं पहनते, तिलक भी नहीं लगाते। सच्चे पातशाह! इस झगड़े में मत पड़ो। उस समय महाराज जी कहने लगे प्यारो! हमने मजलूमों की बांह पकड़ ली है, हम ही लाज रखेंगे–

धारना – बांह जिन्हां दी पकड़ीए,
सिर दीजै बांह न छोड़ीए।

महाराज कहने लगे कि प्यारो! हमें इस्लाम वाले भी उतने ही प्यारे हैं क्योंकि गुरू नानक पातशाह ने जब शरीर त्यागा था, उस समय हिन्दू कह रहे थे कि हमारे गुरू हैं, इस्लाम वाले कह रहे थे कि हमारे पीर हैं। गुरू नानक साहिब सबको एक ही नजर से देखते थे। दोनों कौमें उन्हें प्यार करती थीं। अतः कहने लगे कि इस समय इस्लाम वालों पर कोई कष्ट नहीं है, यदि होता तो इनकी सहायता करते। हमारे मन में ऐसा नहीं है कि हम हिन्दूओं की ही मदद करेंगे। हम इस्लाम वालों की मदद भी करते लेकिन इनके राजा को राजभाग मिलने के कारण सब सहूलतें मिली हुई हैं। उनके व्यापार, वाणिज्य बढ़ रहे हैं और इस समय दूसरा वर्ग है हिन्दू। हिन्दू धर्म इस समय बहुत बड़े कष्ट में है, हमने शीश देने का प्रण कर लिया है। अब बांह छोड़ नहीं सकते। अतः इस तरह से आपने –

बाल गुरू तप कहिओ अलाइ
पिता गुरू तउ करहुं सहाइ।

उस समय गुरू दसवें पातशाह ने कहा कि पिता गुरू जी! आप इनकी सहायता अवश्य करो। गुरू महाराज जी कुछ सिक्खों को साथ लेकर और साथ में संगत भी है, चल पड़ते हैं। कुछ दूरी पर जाकर आपने आदेश दिया कि इससे आगे नहीं आना है, वापिस चले जाओ। उस समय संगत का भाव जो था, वह इस प्रकार से है –

धारना – कदे होणगे संजोगां नाल मेले,
नदीआं दे वहिण विछड़े।

नदीआ वाह विछुंनिआ मेला संजोगी राम ॥
जुगु जुगु मीठा विसु भरे को जाणै जोगी राम॥
अंग - 439

सभी के नेत्रों से जल बह रहा है। सोच रहे हैं कि महाराज जी हमारे पास से ही जा रहे हैं, फिर से पता नहीं मिलाप हो पाएगा या नहीं क्योंकि पता था कि जालिम बादशाह है। उस समय महाराज ने सबको वापिस भेज दिया और स्वयं कुछ सिक्खों को साथ लेकर चल पड़ते हैं। भाई मतीदास, भाई सतीदास, भाई दयाला जी, भाई गुरदित्ता जी, भाई उधार राठौर जी, भाई जैता जी आदि आपके साथ हैं। आप चलते-चलते रोपड़ पहुँचते हैं, गांवों में से होते हुए जा रहे हैं। हर जगह पर आज गुरुद्वारे बने हुए हैं।

जिस-जिस राह से महाराज जी गुजरे वहीं-वहीं पर गुरुद्वारे बन गए। बहादुरगढ़ किले में गुरुद्वारा बन गया। महाराज सब से पहले सैफ अली के पास गए। सैफ अली बहुत ही भला आदमी था। सैफ अली महाराज जी को बहादुरगढ़ से जाने नहीं दे रहा था क्योंकि महाराज जी के साथ बहुत प्यार था। यह कहने लगा कि मैं बात करता हूँ। यह अपने आदमी भेज कर कहता रहा कि ऐसा मत करो। वहाँ पर महाराज तीन महीने तक रहे। इन्होने वहीं सेना भेज दी कि गिरफ्तार कर के लाओ। उस समय को अनुभव करके कि यहाँ भी आएँगे, तो मुहम्मद बख्श के साथ जो राजपूत था, उसे महाराज जी ने समाणा भेज दिया, महाराज भीतर थे, तो वह सैयद कहने लगा कि देखो मैं इस्लामी हूँ, मुझे गुरू तेग बहादुर जी को बचा कर मुझे क्या लाभ? लेकिन मैंने भी नहीं जाने दिया तो इसने भी महाराज जी को जाने नहीं दिया। वहाँ भी गुरूद्वारा है। उसके बाद फिर हरियाणा में बांगर में जहाँ-जहाँ से महाराज गए, वहां गुरुद्वारे हैं। अब महाराज आगरा में पहुँचते हैं। वहाँ गिरफ्तार हो जाते हैं। वहाँ पर आपको एक हवेली में रखा जाता है, मानना था कि इस हवेली में एक बड़ा भारी जिन्न रहता है। वह इस हवेली में किसी को नहीं रहने देता। ये भूत घर हैं, वह स्वयं ही महाराज को मार देगा। वहाँ पर महाराज जी को रखा गया। वहाँ पर फिर बहुत सी घटनाएँ हुईं।

पता चला कि आपने एक दिन वहाँ पर गन्ने चूसे, सोच रहे हैं कि गन्ने कहाँ से आ गए? ऐसे ही कह देते हैं। वहां पर देव शक्ति थी, वह प्रकट होकर गुरू महाराज के चरण वंदना करने लग गई कि महाराज! मेरा उद्धार करो, मैं बहुत दुखी हूँ। आप अब आए हो। हम महापुरुषों के पास नहीं जा पाते, जल के पास नहीं जा सकते। अब आप मेरा उद्धार करो ताकि मैं सेवा कर पाऊं। वह फिर फल ले आया, गन्ने लेकर आया। महाराज जी ने गन्ने चूसे और छिलके बाहर फेंक दिए। दिल्ली के रहने वाले एक सिक्ख ने वह छिलका चूस लिया। उसी पल उसने कहना शुरू कर दिया कि मेरे भीतर बहुत शक्ति आ गई है। मैं कैद में महाराज जी के समक्ष पेश होना चाहता हूँ। उस समय जो दरोगा था वह भला आदमी था। उसने महाराज के पास इसे भेज दिया।

उस समय कहने लगा कि महाराज! मुझे आदेश करो। कहा कि क्या आदेश करें? कहने लगा कि मेरे में इतनी शक्ति आ गई है कि मैं इन सब दुष्टों को मार दूँ, दिल्ली और लाहौर की ईंट से ईंट बजा दूँ। सबको मार दूँ।

महाराज कहने लगे कि और क्या कर सकते हो?

बोला कि इनकी सारी पीढ़ियों का सर्वनाश कर दूँगा।

महाराज जी ने पूछा कि ये जो इतनी शक्ति के मालिक हो, ये कहाँ से आई हैं?

बोला कि हाँ जी आ गई।

महाराज जी ने कहा कि कब से?

बोला कि कल से।

क्या हुआ था?

कहने लगा महाराज! यहाँ पर एक गन्ने का छिलका पड़ा था, उसे मैंने मुँह में डाल दिया। मुझ से शक्ति सम्भाली नहीं गई, मेरे शरीर में शक्तियाँ आ गईं।

महाराज जी ने पूछा कि तुम्हें पता है वह छिलका कहाँ से आया था?

कहने लगा महाराज! मुझे यह पता लगा है कि आपके पवित्र मुख से स्पर्श प्राप्त गन्ने का छिलका था। कहा कि फिर प्यारे! तुम इधर आओ। महाराज जी ने उसकी बाँह पकड़ ली, वह उसी समय खाली हो गया। महाराज बोले कि अब बताओ? अब दिखाओ शक्ति? यह बोला कि महाराज! अब क्या करना है, आपने तो सारी शक्ति खींच ली है। महाराज ने पूछा कि, कुछ समझ में आया? बोला कि समझ गया कि आप कुछ भी करने में समर्थ हो। जो चाहो कर सकते हो। पातशाह! हम से देखा नहीं जा रहा। अब ये कह रहा है कि

क्यों न आपके पास आने से पहले ही इन्हें मार डाला? पहले ही यह काम कर देता, आप को कुछ भी न बताता। मुझे तो बहुत पछतावा हो रहा है। महाराज कहने लगे कि ये खेल हमने स्वयं ही रचा हुआ है। ये किसी के वश की बात नहीं है। हमने स्वयं ही यह शरीर यहाँ त्यागना है।

ठीकरि फोरि दिलीसि सिरि,
प्रभ पुर कीआ पयान।

अतः ऐसी घटनाएँ होती रहीं। यहाँ महाराज जी ने इन्हें बहुत समझाया। यहीं पर महाराज जी ने भोग के श्लोक लिखे थे और उस समय सबसे पहले भाई मतीदास जी को आरे से चीरने का आदेश हुआ कि इसे दो फाड़ कर दो। उस समय भाई मतीदास जी को शहीद करने लगे, तो उनका मुख महाराज जी की ओर किया गया। उस समय आरा शीश पर रखा गया और चेहरे पर लाली आ गई। जल्लाद कहने लगा कि आज तक मैंने पीले चेहरा वालों को चीरा है। लेकिन ये क्या, इसकी आँखों में तो लाली है? चेहरे पर रौनक है?

जल्लाद पूछने लगा कि मतीदास! ये क्या बात है, तुम्हें मौत से डर नहीं लगता?

मतीदास जी ने कहा कि, हमें मौत का भेद पड़ गया है। मौत से वह डरते हैं -

सो डरै जि पाप कमावदा धरमी विगसेतु ॥ *अंग - 84*

हमने तो अपने गुरू की दरगाह में जाना है, डर का तो कोई प्रश्न ही नहीं और भाई साहिब ऐसे कथन करते हैं-

धारना - जिहड़ी मौत तों डरे जग सारा,
मेरे मन आनंद है पिआरिओ।

कबीर जिसु मरने ते जगु डरै
मेरै मनि आनंदु॥
मरने ही ते पाईऐ पूरनु परमानंदु ॥ *अंग - 1365*

कहा कि मौत नहीं आती क्योंकि तुम नहीं जानते, तुम तो मुझे शरीर समझ कर चीरोगे, अब ये शरीर तो चीरा जाएगा, लेकिन मैं तो नहीं चीरा जाऊंगा। जल्लाद हैरान है, वह बोला कि तुम कैसे नहीं चीरे जाओगे?

धारना - आतम मेरा रूप है,
चीरें तूं किसनूं पिआरे

बोले कि जल्लाद! मैं शरीर नहीं हूं। यदि तुम मेरे वस्त्र फाड़ दोगे, तो क्या मुझे भी फाड़ दोगे। ये तो पाँच तत्वों का पुतला है। मैं तो इसमें रहने वाली आत्मा हूँ।

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥
अंग - 441

हमने पहचान लिया है, अब तुम मारोगे किसे? ये आत्मा न जलती है, न डूबती है, न कटती है, न मरती है, न घटती है, न बढ़ती है। एक ही रूप में रहती है। यह कभी बच्ची नहीं होती है, न ही बूढ़ी होती है, इसकी एक ही अवस्था होती है। इसे कोई काट नहीं सकता, न सुखा सकता है, न जला सकता है। हमने इसका स्वरूप पहचान लिया है। मौत फिर किसे आती है? मौत आती है अहंभाव को -

जिनि रचि रचिआ पुरखि बिधातै नाले हउमै पाई ॥
जनम मरणु उस ही कउ है रे ओहा आवै जाई ॥
अंग - 999

अब जिसने अहंभाव को जान लिया -

हउमै बूझै ता दरु सूझै ॥
गिआन विहूणा कथि कथि लूझै ॥ *अंग - 466*

उसे ज्ञान प्राप्त हो गया कि मैं आत्मा हूँ। सारे शरीरों में आत्मा है -

ब्रहमु दीसै ब्रहमु सुणीऐ एकु एकु वखाणीऐ ॥
आतम पसारा करणहारा
प्रभ बिना नही जाणीऐ॥ *अंग - 846*

ये तो सारा पसारा ही आत्मा का है। तुझे श्राप दे कर समाप्त क्यों नहीं करते क्योंकि तुम भी हमारा ही रूप हो। ये आरा भी मेरा ही रूप है। कौन किसे मार रहा है? जल्लाद हैरान हो गया, ऐसे वचन पहले कभी सुने नहीं थे, तो समझ में क्या आता? इस प्रकार से भाई मती दास जी को दो फाड़ कर दिया गया और क्या देखते हैं? हैरान हो रहे हैं। दो फाड़ में से दोनों ओर से जपुजी साहिब की आवाज आ रही है। जिस समय -

जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥ *अंग - 8*

हुआ तो साथ ही आवाज बन्द हो गई।

इतनी करनी कमाई वाले सिक्ख, पूर्ण शक्तियों के मालिक गुरू के आदेशानुसार ऐसे कार्य कर गए कि जैसे कुछ हुआ ही नहीं। भाई दयाला जी को देग में उबाला गया। देग का पानी उबाल खाने लगा। उसी समय आपके चेहरे पर

मस्ती नजर आ रही है क्योंकि आत्म स्वरूप में स्थित है। कोई गैर नहीं, कोई बुरा नहीं -

मन मेरे जिनि अपुना भरमु गवाता ॥
तिस कै भाणै कोइ न भूला
जिनि सगलो ब्रहमु पछाता ॥ *अंग - 610*

ब्रह्म की पहचान हो गई, अन्धेरे में जो रस्सी साँप लग रही थी, प्रकाश होते ही पता चला कि ये तो केवल परछाई थी, साँप नहीं था। ये तो भ्रम था -

जन नानक बिनु आपा चीनै
मिटै न भ्रम की काई ॥ *अंग - 684*

इन गुरसिक्खों ने स्वयं को अर्पण किया हुआ था। उस समय आपके भीतर से आवाज आई -

धारना - मेरी टुटे ना प्रेम वाली डोरी,
भाणा तेरा मिठा लगदै।

तेरा कीआ मीठा लागै ॥
हरि नामु पदारथु नानकु माँगै ॥ *अंग - 394*

भाई दयाला जी शहीद हो गए। अब बारी आई सतीदास जी की। उस समय आपको रुई में लपेट कर आग लगा देते हैं। सतीदास गुरू महाराज के वचन, बाणी लिखते थे। बहुत विद्वान पुरुष थे। अतः इस तरह से गुरू महाराज जी को 17 मार्गशीर्ष 1732 में चांदनी चौक पर लाया जाता है। प्रश्न किया जाता है कि इस्लाम कबूल करो, आपको जीने का अधिकार प्राप्त हो जाएगा। इन्हें छोड़ो और कोई करामात दिखाओ। उस समय महाराज ने कहा कि करामाती तो कायर होता है।

नाटक चेटक कीए कुकाजा।
प्रभ लोगन कह आवत लाजा।

ये सब उस प्रभु की रजा में हो रहा है, हम अपनी मर्जी से ये सब कर रहे हैं। हम तुम्हें करामात दिखाएँ? उस समय गुरू साहिब को चांदनी चौक पर लाया गया। कह रहे हैं कि हमने तो करामात देखनी है। महाराज कहने लगे दिखा देंगे लेकिन जब शहीद हो जाएंगे तब देखना। गुरू साहिब ने एक कच्चा धागा गले में बाँध लिया। अब इतिहास में कई तरह की बातें लिखी हैं, अब वाले कुछ और तरह से लिखते हैं, पुराने वाले अपने तरीके से लिखते हैं। सुनी सुनाई बातें।

उस समय ऐसे था कि जब जल्लाद ने तलवार उपर को की तो, महाराज जी का शीश भाई जैता जी की गोद में पहुँच गया। उसने उसी क्षण कपड़े में सम्भाल लिया। क्योंकि महाराज जी ने कहा था कि, हमारा शीश तुम्हारे पास आएगा। तुम आनंदपुर साहिब ले जाना। उसके बाद पुराने इतिहास में आता है कि ध्यान से देखा गया कि जो धागा बंधा हुआ था, उसे तलवार ने काटा ही नहीं है। तलवार ऐसे ही घूम गई। धागा भी नहीं काट पाई। अतः महाराज ने इतना बड़ा कारनामा किया। जो धड़ था, उसे भाई लखी शाह वणजारा अपने घर ले गए। वहाँ जाकर अपने गाँव के लोगों को भरोसे में ले लिया, तो उस समय बहुत तेज आँधी आई क्योंकि ये शाही ठेकेदार था, 500 बैलगाड़ियां इसकी अपनी थीं, धूल उड़ रही है, तेज आंधी चल रही है, पहरेदार बैठे हैं, उनकी आँखें बन्द हैं। उसी समय इसने गुरू साहिब के धड़ को रुई में लपेट कर बैलगाड़ी में रख कर, बैलगाड़ी को भगा लिया। बाकी बैलगाड़ियां भी धीमी चाल में पीछे-पीछे आ रही हैं। तलाशी हो रही है, इससे पहले कि इसकी बैलगाड़ी तक पहुँचा जाता, इसने अपने घर को आग लगा कर, उसी में महाराज जी की धड़ का अन्तिम संस्कार कर दिया। जहाँ पर आजकल रकाबगंज गुरुद्वारा बना हुआ है। इधर पाँच दिनों में भाई जैता जी और साथ में दो गुरसिक्ख और भी हैं, पाँच दिनों में रात को चलते थे, दिन में किसी जगह छिप जाते थे, पहुँचते हैं।

गुरू दशमेश पिता जी के पास शीश लेकर आते हैं। उस समय महाराज जी ने बहुत प्यार किया। 'रंगरेटे गुरू के बेटे' की बड़ी उपाधि दी। जिन्हें कि हम छूतछात और नीच कहते हैं। वह गुरू के बेटे हैं। गुरू ने अपने पुत्र बना लिए।

अतः ऐसा साका संसार में -

ठीकरि फोरि दिलीस सिरि,
प्रभ पुर कीआ पयान।
देग बहादर सी क्रिआ
करी न किनहूं आन।
तगे बहादर के चलत,
भयो जगत को सोक।

है है है सभ जग भयो जै जै जै सुर लोक। *बचित्र नाटक*
तिलक जंञू राखा प्रभ ताका।।
कीनो बडो कलू महि साका।।
साधनि हेति इती जिनि करी।।

(शेष पृष्ठ 50 पर)

आत्म ज्ञान

सन्त वरियाम सिंह जी
सम्पादक - प्रो. गुरदेव सिंह

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक नवम्बर, पृष्ठ - 42)

किव सचिआरा होईऔ किव कूड़ै तुटै पालि ॥
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥

अंग - 1

प्रश्न है कि परमेश्वर जी कैसे बने? अब परमेश्वर जी तो पहले से ही हैं, बनना क्या है, बनती तो वह चीज है जो पहले से न हो। जीव भाव झूठा है और झूठ का कोई अस्त्तिव नहीं होता। भ्रम होने के कारण ये जीव भाव से अहं भाव बन जाता है। अहंभाव होने के कारण परमेश्वर से दूरी बनी रहती है। जब पूरा सत्गुरू मिलाप करवा दे तो प्रभु की रजा का पता लग जाता है। कई लोग कह देते हैं कि हम मांस-शराब भी उसकी रजा में खाते हैं, उन्हें पता ही नहीं कि ये उनके अपने ही मन की सोच है क्योंकि मनुष्य कर्म करने के लिए स्वतन्त्र हैं और कर्म को भोगने के लिए परतन्त्र हैं। प्रभु के किए को बूझ लेना बहुत मुश्किल है। क्योंकि जो ये कर ले, उसे प्राप्ति हो जाती है। अहंकार और अहंभाव में अंतर होता है। अहंकारी मनुष्य कभी भी किसी दूसरे को कुछ नहीं समझता, उसे लगता है कि जो भी हूँ, मैं ही हूँ। सब कुछ मैं ही कर सकता हूँ, ये जो भी मेरी जमीन-जायदाद हैं, मेरा परिवार है, ये सब मेरे से ही हैं। अहंभाव तो नाम जपने वालों, भक्ति करने वालों में भी आ जाता है क्योंकि रिद्धि-सिद्धि आने से सम्मान होने लगता है। इस अहंभाव को पूरी तरह से मृत करने के लिए, गुरू शबद का हथियार प्रयोग में लाना पड़ता है -

हउमै विचि जीउ बंधु है नामु न वसै मनि आइ ॥

अंग - 560

बाबा फरीद जी को आवाज आई कि मन हठ को छोड़ कर पूरे गुरू की शरण में जा क्योंकि हठ करके थक गया था। गुरू की तलाश करते-करते पता लगा कि इस समय अजमेर शरीफ में ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती कामल पीर हैं। अब शक्तियां आने के कारण इसके भीतर भी अहंभाव था। जब मिलने गए तो उस समय पीर जी बच्चों के साथ गेंद खेल रहे थे क्योंकि उन्हें खेलों में रुचि थी, कुश्तियां आदि भी करवाया करते थे। जब ख्वाजा जी ने गेंद को ऊपर की ओर उछाला, तो फरीद ने अपनी उपस्थिति को बताने के लिए गेंद को ऊपर ही रोक दिया। क्योंकि झूठ का चोला पहना हुआ था। पीर जी ने देख लिया कि ये आदमी आया है, जब उन्होंने ऊपर को देखा तो गेंद नीचे आ गई। खेल बन्द करवा दिया गया और इसने जाकर पीर जी को सिजदा किया। कहने लगा पीर जी! मेरा नाम फरीद है, मैं आप का मुरीद बनने आया हूँ, मैंने 24 वर्ष तक बहुत तप किए हैं। तब पीर जी ने कहा कि ऐ फरीद! तुम मुरीद बनने आए हो? कहा कि पहले ढंग तो सीखो, फिर आना मेरे पास। कहा कि किसी ज्ञानी पुरुष ने कहा कि, गुरू, पीरों के पास अहंभाव को छोड़कर, नम्रता भाव धारण करके आओ, जैसे कि कथन है -

पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस ॥
होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि ॥

अंग - 1102

अहंभाव धारण करके जब चाहे घूमते रहो, पर शर्त है कि यदि पूर्ण तौर पर मरना कबूल कर ले तो गुरू पीरों से मिलाप होता है। अब जब दूसरी बार फिर से फरीद जी गए तो गर्मी का महीना था और पीर जी एक सूखे वृक्ष के नीचे अपनी मौज में बैठे थे। तो फरीद जी के मन में आया कि मैं सेवा करूं क्योंकि पीर जी धूप में बैठे हैं, फरीद जी ने ऊपर की ओर निगाह की और वृक्ष हरा भरा कर दिया। जब छाया देखी तो पीर ने ऊपर को देख कर वृक्ष को सूखा कर दिया और फरीद जी की ओर देखा। फरीद जी ने सिजदा करके कहा कि पीर जी! मुझे पता नहीं था, मैं भूला हुआ और तपा हुआ आदमी हूँ, कृपा करके अपना मुरीद बना लो। पीर जी ने कहा कि मुरीद बनना है तो पहले मुर्दा बनना पड़ता है। यदि शक्तियों को साथ लेकर आओगे तो कुछ नहीं बनेगा।

मुरीद का जीवन ऐसे होना चाहिए -

मुरदा होइ मुरीद न गली होवणा,
साबरु सिदकि सहीदु भरम भउ खोवणा।
गोला मुल खरीदु कारे जोवणा।
ना तिसु भुख न नीद ना खाणा सोवणा।
पीहणि होइ जदीद पाणी ढोवणा
पखे दी तागीद पग मलि धोवणा।
सेवक होइ संजीदु न हसण रोवणा।
दर दरवेस रसीदु पिरम रस भोवणा।
चंद मुमारख ईद पुग खलोवणा।

भाई गुरदास जी, वार 3/18

मुरीद बन कर यदि नियमामुसार जीवन रखें तो गुरू को स्वीकार्य होता है, कितनी ही तकलीफें आ जाएं, सब्र और संतोष में रहे, शक्ति का प्रयोग न करें और न ही शक्तियाँ दिखाएँ।

पीर सरमद्द एक उच्च कोटि के फकीर थे, जिसे कि औरंगजेब ने जेल में बन्द किया हुआ था। ईरान के बादशाह ने अपने जासूस को दिल्ली भेजा कि किसी महात्मा से सब्र और संतोष का अर्थ पूछकर आओ। जब इस की कहीं भी तसल्ली नहीं हुई तो किसी ने सरमद्द के बारे में बताया कि वह सब बता सकते हैं। उससे मिलने की इजाजत लेकर ये भीतर चला गया। भाषा के अनुवादक को कहा कि सब्र और शुक्र के बारे में बताए। पीर कहने लगे कि कल आना और साथ ही एक पानी की मशक और दो गज कपड़ा भी लेकर आना क्योंकि यहां जेल में स्नान किए हुए बहुत समय हो गया है। अब जब दूसरे दिन आया तो देखा कि अपने आप ही सारे ताले खुले हुए हैं, भीतर पहुँचने पर सब ताले फिर से बन्द हो गए। स्नान कर कपड़ा तन पर लपेटा, इतने में ही एक जल्लाद हाथ में हंटर ले कर आया और जासूस भी खड़ा देख रहा है। सरमद्द बैठ गया और जल्लाद कोड़े मारता रहा क्योंकि 100 कोड़े प्रतिदिन मारे जाते थे। जल्लाद चला गया, पीर जी उसे कहने लगे कि समझ आया कि जब मुझे कोड़े मारे जा रहे थे तो मैं अंगुली क्यों हिला रहा था? कहने लगा फकीर साईं! मुझे कुछ समझ नहीं आया। अब जब जल्लाद फिर से कोड़े मारने आया, तो पीर ने जासूस की दिव्य दृष्टि खोल दी। उसने देखा कि आसमान में शक्तियाँ और फरिश्ते हाथ जोड़ कर विनती करते हैं कि पीर जी! हमें एक बार आदेश दो, हम औरंगजेब का राज गर्क कर देंगे। लेकिन ये कोड़े मरवाते रहे और इशारा करके सबको मना करते रहे। जब 50 कोड़े मार कर जल्लाद चला गया तो पूछा कि अब समझ में आया? वह कहने लगा कि पीर जी। पूरी तरह समझ में नहीं आया तो पीर जी कहने लगे कि मैं सब समाप्त कर सकता हूँ, लेकिन सब अपने भीतर समेट कर बैठा हूँ। इसे ही सब्र कहते हैं। प्रतिदिन एक प्याला नमकीन पानी का मिलता है। जब पानी आता है, तो पीर उसे पीकर उस अल्लाहताला का शुक्र करता है कि तेरा शुक्र है, आप मुझे याद रखते हैं। अब दिव्य दृष्टि खुली होने के कारण जब जासूस ने चारों ओर नजर घुमाई तो देखा कि बड़े-बड़े फरिश्ते भोजन के थाल लिए खड़े हैं, लेकिन पीर जी ना करे जा रहे हैं और कहा कि यही सब्र है। तीसरा होता है शहीद, जिससे भाव है कि सदैव सच के मार्ग पर चलना, चाहे शरीर ही क्यों न देना पड़े। चौथा होता है गुलाम बन कर रहना। अपना कोई हक न रखना स्वयं को मिटा कर गुरू को अपर्ण कर देना।

मुर्शद कहने लगे कि फरीद! इस प्रकार का मुरीद बनना पड़ेगा और रिद्धि-सिद्धि का त्याग करना पड़ेगा। यदि ये सब कबूल है तो सेवा में लग जाओ। फरीद जी शीश झुका कर सेवा में लग गए। मुर्दे की तरह मुरीद बन गए। अब दिन-रात सेवा करते हैं, झाड़ू देते हैं, बर्तन मांजते हैं। लंगर तैयार करते हैं। रात को उठ कर मुर्शद की मालिश आदि करते हैं। अमृत वेला में उठकर पानी गर्म करके प्रतिदिन स्नान करवाते हैं, जब भी समय मिलता है तो इबादत करते हैं। ऐसा करते-करते चौदह वर्ष बीत गए। अब मुर्शद ने देखा कि इसकी परीक्षा ली जाए। यदि कसौटी पर खरे उतरे तो सब इसके हवाले कर दिया। रुहानी पाठशाला में समर्थ गुरू ने जिस को पास करना हो तो पहले परीक्षा ली जाती है, इसलिए कसौटी लगा दी।

भाई मंझ जी पर भी गुरू अरजन पातशाह जी ने घर वापिस भेज कर कसौटी लगाई थी। उस समय सब कुछ छिन जाता है, गरीब बना कर गांव से निकाल दिया जाता है। पत्नी और बेटी के समेत दूर जाकर किसी और गांव में झोंपड़ी में रह कर घास बेच कर गुजारा करने लग गए। जो भी कमाता उसमें से आधे गुरू साहिब के लिए रखकर और दो पैसों से रूखी-मिस्सी खा कर गुजारा करते थे। गुरू जी ने मेवड़े को आदेश देकर भेज दिया। अब बड़ी सेवा होती है और रात भर वचन चलते रहे। अब आदेशानुसार जो पत्र में लिखा था कि दर्शनीय भेंट 20 रुपए देने हैं। उस समय के अनुसार 20 रुपए आज के 20,000 के बराबर थे। उस समय मंझ जी

की बेटी ने पिता को परेशान देखकर कहा कि पिता जी, मैं किसी के यहाँ मजदूरी कर लेती हूँ, आप 20 रुपए देकर गुरू महाराज जी की खुशी प्राप्त करो। उस समय गुरसिक्ख के सामने बड़ा कठिन प्रश्न था, लेकिन लड़की ने किसी परिवार में बंधुआ मजदूर बन कर 20 रुपए लाकर दिए। कुछ महीनों बाद गुरू जी ने दूसरा हुक्मनामा देकर सिक्ख को भेजा, जब देने लगा तो कहा कि 20 रुपए दर्शनीय भेंट दी जाए। उस समय पत्नी ने साथ दिया, उसने किसी के यहाँ बंधुआ मजदूर बन कर 20 रुपए लाकर दिए। तब हुक्मनामा लिया गया। साधु संगत जी! कितनी मुश्किल बात है, गुरू का चाकर तो कोई विरला ही होता है, परन्तु बातें बनाने वाली दुनिया बहुत होती है कि हम सिक्ख हैं, लेकिन वास्तविक सिक्ख वह है जो गुरू को भा जाए -

चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥
गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ॥
आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥
नानक जिस नो लगा तिसु मिलै लगा सो परवानु ॥

अंग - 474

जब पत्र को नमस्कार करके पढ़ा तो देखा कि महाराज ने लिखा हुआ है कि पत्र देखते ही हमारे पास आ जाओ। उस समय भाई मंझ जी चल पड़े। अब आकर दिन रात सेवा में लगे रहते हैं। कई महीने बीत गए, गुरू साहिब ने बात तक नहीं की। एक दिन लांगरी को पूछा कि भाई मंझ नाम का सिक्ख क्या करता रहता है? सिक्ख ने कहा कि महाराज! वह तो कभी भी खाली नहीं बैठता, वह लंगर के लिए लकड़ियां लाते हैं, झाड़ू देते हैं, बर्तन मांजते हैं। दिन-रात सेवा में लगे रहते हैं। महाराज जी ने पूछा कि भोजन कहाँ से करता है? कहा कि वह तो लंगर में से ही खाते हैं। उस समय महाराज जी ने कहा कि उसे लंगर में से भोजन नहीं देना है। अब जब लंगर खाने बैठते हैं, तो गुरू साहिब का आदेश बताया जाता है। तब नमस्कार की और कहा कि कोई बात नहीं, मैं, मेरे सत्गुरू को याद हूँ, यही बहुत है। उस समय मन में कोई शिकवा शिकायत नहीं है कि मैं गाँव का चौधरी था और कहाँ अब मेरी पत्नी और बेटी भी बंधुआ मजदूर हैं और लंगर में भोजन भी नहीं कर सकता? अब चुपचाप पंक्ति में से उठा और चल पड़ा। अब जंगल में से एक गट्ठर अपने लिए लकड़ी काटते हैं और एक लंगर के लिए। बाजार में लकड़ी बेच कर उससे अपना गुजारा करते हैं। आज गुरू साहिब कसौटी और कठोर कर दी। भाई मंझ जब लंगर के लिए लकड़ी लेकर चले तो बहुत तेज आंधी आई, अब भाई मंझ रास्ता भटक जाते हैं और कुएँ में गिर जाते हैं, तथा मुँह से सतनाम-वाहिगुरू की आवाज आ रही है। उस समय सत्गुरू जी एकदम से आसन से उठे और नंगे पांव भाग पड़े और भागते-भागते कह रहे हैं कि जल्दी से रस्सी लेकर आओ। एक सेवादार जोड़ा लेकर भागा आ रहा है, दूसरा घोड़ा लेकर आ रहा है, कह रहे हैं कि महाराज! जूते पहनो, घोड़े पर बैठो लेकिन महाराज जी दौड़े-दौड़े एक कुएं के पास जाकर खड़े हो गए। सेवादार रस्सियां लेकर पहुँच गए, महाराज कहने लगे कि पूछो कुएं में कौन है? जब पूछा तो, आवाज आई कि मैं गुरू अरजन पातशाह जी का गरीब सा सिक्ख हूँ। उस समय गुरसिक्ख कहते हैं कि हम रस्सियां भीतर फेंकते हैं, आप पकड़ कर बाहर आ जाओ। उस समय भाई मंझ कहने लगे कि मेरे सिर पर लकड़ी का गट्ठर है, पहले लकडी बाहर निकाली गई, फिर भाई साहिब को बाहर निकाला गया। बाहर आकर जब भाई मंझ जी ने देखा कि सच्चे पातशाह जी स्वयं खड़े हैं, तो आँखों से जल बहने लगा। अब बोला भी नहीं जा रहा। गला रुका हुआ है। उस समय महाराज ने आगे होकर बड़े स्नेह से अपने आलिंगन में लिया और वचन किया -

मंझ पिआरा गुरु नूं, गुरु मंझ पिआरा।
मंझ गुरु का बोहिथा जग लंघणहारा।

प्रसन्न होकर कहा कि मंझ! मांगो जो मांगना है, तुम्हें गुरू नानक साहिब से दिलवा देते हैं। भाई साहिब कहने लगे कि सच्चे पातशाह! मैं नाम से न बिछुड़ जाऊं, सदैव चलता रहे। महाराज जी कहने लगे कि और मांगो, जब बार-बार कहते हैं तो भाई मंझ जी ने विनती की महाराज! कल्युग का समय है, सिक्खों पर कसौटी मत लगाना, इनसे सहन नहीं हो पाएगी। कृप्या आगे से रियायती पास कर देना। महाराज कहते हैं कि खरा सोना बनाने के लिए बार-बार कसौटी लगानी पड़ती है कि कहीं कोई खोट न रह जाए। मरजीवड़े सिक्ख गुरू की कसौटी को सहन करके पास हो जाते हैं -

कबीर कसउटी राम की झूठा टिकै न कोइ ॥
राम कसउटी सो सहै जो मरि जीवा होइ ॥

अंग - 1366

'चलता'

ब्रहम गिआनी सद जीवै नहीं मरता

सन्त बाबा हरपाल सिंह जी

भागठड़े हरि संत तुमारे जिन् घरि धनु हरि नामा ॥
परवाणु गणी सेई इह आए सफल तिना के कामा ॥
अंग – 749

मेरे राम राइ तूं संता का संत तेरे ॥
तेरे सेवक कउ भउ किछु नाही जमु नही आवै नेरे ॥
अंग – 749

परम सम्माननीय गुरू प्यारी साधु संगत जी! आओ, ख्यालों को बाहर जाने से रोकें, चित्त वृत्तियों को एकाग्र करो तथा जिह्वा की पवित्रता के लिए सारे ही उच्चारण करो जी, सतिनाम श्री वाहिगुरू। गुरू महाराज जी की कृपा की बदौलत महापुरुषों तथा बीजी की पावन स्मृति में दीवान सजे हैं। आप सारी संगत, दूर और नजदीक से चलकर आए हो। इस तरफ को जब आप चले हो तो एक-एक कदम का फल अश्वमेघ यज्ञ जितना मिल जाता है, ऐसा अनुभवी महापुरुषों का अनुमान है बशर्ते हम गुरू की तरफ श्रद्धभावना सहित चलें-

चरन सरन गुरु एक पैंडा जाइ चल,
सतिगुरु कोटि पैंडा आगे होइ लेत है।
कबित भाई गुरदास जी

बहुत ही भाग्य वाली बात है कि कल्युग के समय में नाम-वाणी के साथ जुड़ जाना। जब हम ऐसा करते हैं, तो फिर सारे ही दिन सुहावने हो जाते हैं और यह कोई अतिश्योक्ति नहीं है। प्रार्थना की थी कि हे महाराज जी! कृपा करो उन महापुरुषों के पदचिन्हों पर हम चल सकें। सतगुरू सच्चे पातशाह जी ने कृपा की और हुक्म भी यही आया है कि वे तो जन्म को संवार कर चले गए और उन्होंने अन्य असंख्य लोगों का भी जन्म संवार दिया। नि:शंक रूप से वे शारीरिक तौर पर ही गए हैं लेकिन हमारे लिए तो वह एक बिछोड़ा ही है।

विछोड़ा सुणे डुखु विणु डिठे मरिओद ॥
बाझु पिआरे आपणे बिरही ना धीरोदि ॥
अंग – 1100

यहाँ पर वे दिन याद आते हैं। एक फिल्म की भांति वह सारा समय आँखों के सामने से निकल जाता है, जब महापुरुषों ने अमेरिका की धरती पर जत्थे समेत अपने मुबारक चरण डाले तो आपने कितनी खुशियाँ बाँटीं, क्योंकि भावना को फल लगता है।

दूसरी तरफ ये प्यार व वैराग्य के दिन भी हैं। इस माह में बड़े साहिबजादे श्री चमकौर साहिब से युद्ध के अन्दर तथा छोटे साहिबजादे फतहगढ़ साहिब सरहिन्द के नीवों में शहादत का जाम पी रहे हैं। माता गुजरी जी, जिनका कितना बड़ा जप-तप था, ने 28 साल 11 महीने और 13 दिन साधना की। आपने ठंडे बुर्ज में शहादत का जाम पिया। इस प्रकार के दिन वैराग्य को उत्पन्न करते हैं। प्यार और वैराग्य के बिना त्याग भी नहीं हो सकता है। महापुरुषों ने अपना सारा जीवन बड़े महाराज जी (सन्त ईशर सिंह जी महाराज, राड़ा साहिब) के प्यार में व्यतीत किया। जब उनकी याद मनाई जाती तो आप प्राय: वचन किया करते कि मेरे लिए तो वे कहीं गए ही नहीं हैं क्योंकि जब उनका जन्म ही नहीं है तो फिर मरण कैसे हो सकता है?

अत: यहाँ पर यू.एस.ए. में आकर भी महापुरुषों ने सत्संग की कृपा की। आपने फुरमान किया कि सत्संग यदि प्रतिदिन नहीं तो साप्ताहिक तौर पर अवश्य करो। यदि साप्ताहिक तौर पर भी नहीं हो सकता हो तो एक महीने बाद कर लो, यदि महीने बाद भी नहीं हो पाता हो तो फिर छ: महीने बाद कर लो या फिर जो साल बाद समागम होता है, कोई गुरपर्व मनाया जाता है तो उस स्थान पर अवश्य पहुँचो, जहाँ पर कि सत्संग हो रहा हो। यदि तीन साल तक भी कोई श्रद्धालु नहीं जाता है तो फिर 'सौ सयाने एक मति' या 'सति बचन साधू सभ कहै' अनुभवी लोगों का सथन है कि उसका 'हाजिरी रजिस्टर' में से नाम काट दिया जाता है। फिर परमात्मा के द्वार पर हाजिरी लगनी बन्द हो जाती है। इसलिए यह जरूरी होता है कि -

प्रभ की उसतति करहु संत मीत ॥
सावधान एकागर चीत ॥ अंग – 295

ब्रहम गिआनी सद जीवै नही मरता ॥ अंग – 273

महापुरुषों का जन्म और मरण तो होता ही नहीं है। शरीर का जन्म होता है और शरीर ही मरता है। वे तो हम सबके ऊपर परोपकार करने के लिए ही शरीर धारण करते हैं। वे आते क्या करने के लिए हैं?

जीअ दानु दे भगती लाईन
हरि सिउ लैनि मिलाए ॥ *अंग - 749*

जीवन दान या नाम दान केवल महापुरुष ही दे सकते हैं। आम इन्सान इसे दे पाने में समर्थ नहीं है। एक बुझा हुआ दीपक दूसरे बुझे हुए दीपक को कैसे जगा सकता है? कोई सोया हुआ इन्सान, दूसरे सोए हुए इन्सान को कैसे जगा सकता है? यह कार्य तो कोई जागृत दीपक या जागृत इन्सान ही कर सकता है। जिन्होंने अपने आप की खोज की, अपने अनुभवों को सबके साथ बाँटा वे ही यह महान कार्य करने में समर्थ होते हैं क्योंकि -

सतसंगति कैसी जाणीऐ ॥
जिथै एको नामु वखाणीऐ ॥ *अंग - 72*

सत्संग में अन्तरंग साधन करने की प्रेरणा दी जाती है। एक तो यह होता है कि इकट्ठे बैठकर संगत या सत्संग करनी और दूसरा यह होता है कि किसी के साथ सीधी दिल की बात होती है। जिज्ञासु की जिज्ञासा होती है। लोग महापुरुषों के पास जब आते हैं तो उनकी अपनी-अपनी भावनाएँ होती हैं। सारे पदार्थ सेवा के द्वारा मिल जाते हैं। यह कोई बड़ी बात नहीं है। यथा -

चारि पदारथ जे को मागै ॥
साध जना की सेवा लागै ॥ *अंग - 266*

यदि गिनती करने लग जाएँ तो न जाने कितने लोगों पर कृपा हुई है। गुरू की शरण में आने से पदार्थों की तो कोई कमी रहती ही नहीं है, जो भी मांगो वह सब मिल जाता है -

साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥ *अंग - 917*

भावना को फल लगता है लेकिन जो प्रेम में लीन होता है वह फिर कोई माँग नहीं रखता है। वह तो कहता है -

राजु न चाहउ मुकति न चाहउ
मनि प्रीति चरन कमलारे ॥ *अंग - 534*

वह तो प्यार में समर्पित हो जाता है।

महापुरुषों की जहाँ पर कुर्सी लगी है, हम सबने उस स्थान के दर्शन किए। बहुत सारी संगत वहाँ पर आई, दरअस्ल उन्होंने प्यार ही बाँटा और प्यार ही सिखाया है। उनकी दृष्टि में ही अमृत था -

ब्रहम गिआनी की द्रिसटि अंम्रितु बरसी ॥
अंग - 273

जिथै बैसनि साध जन सो थानु सुहंदा ॥ अंग - 319

एक घर में महापुरुष चले गए। वहाँ पर कुर्सी लगी हुई थी, हम सब लोग भी बैठ गए। महापुरुष वचन करने लग पड़े। दरअस्ल महापुरुष एक तो आम वचन किया करते थे और एक सत्संग हुआ करता था। सत्संग के अन्दर यदि लोगों को जीवन जीने की युक्ति न बतलाई जाए, जीवन का लक्ष्य न बताया जाए तो फिर उस सत्संग का क्या लाभ है? महापुरुषों ने उस युक्ति को बताया कि नाम का जप किस प्रकार से किया जाता है, यह बैखरी बाणी से शुरू होता है। उसे बातने के बाद आप प्रयोगात्मक रूप से भी नाम का सिमरन करवाया करते थे। आप यह ताकीद किया करते थे कि -

सासि सासि सिमरहु गोबिंद ॥
मन अंतर की उतरै चिंद ॥ *अंग - 295*

वह अवस्था जहाँ पर जाकर श्वास के ऊपर गुरू का मन्त्र आ जाता है, तो उस अवस्था के बारे में गुरू जी फुरमान करते हैं कि -

जिना सासि गिरासि न विसरै हरि नामाँ मनि मंतु ॥
धंनु सि सेई नानका पूरनु सोई संतु ॥ *अंग - 319*

अब वे अपनी अवस्थानुसार वचन करते हैं कि हमने यहाँ पर पहुँचना है। किरत करना, नाम जपना, मिल बाँट कर ग्रहण करना, गुरुमुख नाम दान स्नान। आप यह बताया करते हैं कि यह तो एक जीवन जीने का रास्ता है। फिर आप यह उदाहरण देते कि गोरे लोगों में तथा इसाइयों में भी कितनी-कितनी बड़ी सेवाएँ होती हैं लेकिन उन्हें नाम के बारे में पता नहीं है। अन्तिम निशाना तो वह है जिस समय शरीर में से श्वासों का निकलना है फिर हमने जहाँ पर जाना है उस जगह से वापिस नहीं आना है। अत: यह जो जन्म-मरण का दुख है यह बहुत बड़ा दुख है -

दुखु तदे जा विसरि जावै ॥ *अंग - 98*

परमेसर ते भुलिआँ विआपनि सभे रोग ॥
वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥
खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ॥
अंग - 135

जहाँ पर भी महापुरुष जाते तो आप यह युक्ति बताते। सन् 1998 में महापुरुष अमेरिका गए, वहाँ पर एक वृद्ध माता जो कि सीधी सादी थी, कहने लगी, ये जो बातें आप बता रहे हो ये सब तो मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रही हैं। दरअस्ल उसकी बुद्धि उन बातों को पकड़ ही नहीं रही थी। हमारा स्थूल शरीर है, हमारी बुद्धि भी स्थूल हो गई है क्योंकि हम जड़ के साथ जुड़ गए हैं। आन्तरिक कथा कहानियाँ सुननी या सुनानी तो बहुत दूर की बात हो गई है, हमारा मन तो रोचक बातों में ही लीन होता है और फिर यहाँ पर तो पदार्थों का ही बोलबाला है यानि कि यहाँ तो भुलाने

वाली चीजें ही अधिक हैं। यदि परमात्मा को याद करवानी वाली कोई चीज है तो वह केवल सत्संग ही है।

महापुरुष कहने लगे देखो! सभी कहते हैं कि हम दुखी हैं -

कोई तन दुखी, कोई मन दुखी,
कोई चिंता चित उदास।
थोड़े बहुते सभ दुखी,
सुखी हरि के दास।

उनका यह वचन प्रायः होता था कि प्रेमीजनो! तुम करना तो शुरू करो। वह माता कहने लगी, मुझे तो पता ही नहीं लगता कि श्वास किस प्रकार से आता जाता है।

महापुरुष बताया करते थे कि पहले सीधे बैठो क्योंकि सर्वप्रथम तो बैठने का ही ढंग हुआ करता है, आसन होता है सुखासन में बैठा जा सकता है। पलथी मार कर घुटनों पर हाथ रख लो, नेत्रों को बन्द करो, रीढ़ की हड्डी को 90 डिग्री पर सीधी रखो क्योंकि ऊर्जा का बहाव तभी हो पाता है जबकि रीढ की हड्डी सीधी हो, शरीर सीधा हो। यदि गर्दन बाईं तरफ को जाती है तो गलत ख्याल दिमाग में आएँगे, यदि दाहिनी तरफ को चली जाए तो फिर शुभ ख्याल उत्पन्न होंगे लेकिन हमने इन संकल्प व विकल्प से ऊपर उठना है। शरीर सीधा हो और रीढ़ की हड्डी भी सीधी हो, सिर को भी सीधा रखना है लेकिन शरीर को ढीला भी रखना है। ऐसा नहीं है कि हमें नींद आ जाए और हमारी ठोडी छाती के साथ लग जाए। बाहरी तौर पर तो प्रतीत होता है कि समाधि लगी हुई है लेकिन वास्तव में वह नींद की अवस्था होती है।

सीधे बैठने से ऊर्जा का बहाव होता है, उसके बाद अन्दर का रास्ता खुलता है। अन्दर को जाते हुए श्वास के साथ सुनो 'वाहि'। यह कम से कम 15 सैकेण्ड लम्बा हो। अब जब श्वास ने बाहर की तरफ आना है तो उसके ऊपर सवार करो 'गुरू'। यह कम से कम 1 मिनट का हो। यह सब अभ्यास के द्वारा सम्भव हो पाता है। इसके बाद आता है - प्राणायाम। प्राचीन समय में बड़े-बड़े योगी प्राणायामी होते थे लेकिन आजकल दिल और दिमाग उतने कायम नहीं हैं क्योंकि ब्रह्मचर्य कायम नहीं हैं, फलस्वरूप गर्मी चढ़ जाती है। इसके लिए यदि दायीं नासिका में श्वास लेते हैं तो फिर उसे बाईं में से छोड़ते हैं। इसके अन्दर बहुत गर्मी होती है। जो बाईं नासिका है, यह चन्द्रमा नासिका है, इसमें से श्वास लेकर दाईं में से छोड़ा जाता है। यह ठंडी होती है। इस प्रकार से दोनों नासिकाएँ बदल बदल कर चलती रहती हैं। यदि एक ही चलती रहे जैसे कि यदि दाईं ही चलती रहे तो फिर शरीरान्त भी हो सकता है। योगियों ने इस पर बहुत कार्य किया है।

महापुरुष जब यह बताने लगे तो वह वृद्ध महिला पुनः बोल पड़ी। कहने लगी, महाराज जी! हमें तो श्वास के भी आने-जाने का पता नहीं लगता है।

महापुरुष बोले अच्छा फिर ऐसे करना कि तुम नेत्र तो बन्द करते ही हो साथ ही नाक भी बन्द कर लो। जब उसने नाक बन्द किया तो वह कितनी देर बन्द हो सकता था, फलस्वरूप उसने एकदम से छोड़ दिया। महापुरुष बोले, बस इसी के द्वारा बैखरी वाणी, उसके बाद मध्यमा और फिर पसन्ती में करना शुरू करो, सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाता है। यदि यह भी नहीं कर पाओ तो फिर यह कर लो कि जब श्वास अन्दर को जाता है तो 'सतिनाम' कहो और जब बाहर को जाता है तो 'वाहिगुरू' कहो।

जब हम इस प्रकार से पूरी युक्ति के साथ अभ्यास करते हैं तो फिर हमें लक्ष्य स्वतः ही प्राप्त हो जाता है।

महापुरुष स्वयं जब साइकिल चलाया करते थे तो आप एक पैडल दबाते समय सतिनाम तथा दूसरा पैडल दबाते समय वाहिगुरू का सिमरन किया करते थे। महापुरुष ऐसा नहीं करते हैं कि वे संसार से किनारा करके बैठ जाएँ। वे तो -

सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु ॥

अंग - 62

चरित्रपूर्ण जीवन उन्होंने जी कर दिखलाया। जब आप खेती किया करते थे या नौकरी किया करते थे तो उसमें भी आप छः बजे चले जाते थे। समय तो 9.00 से 5.00 ही होता था। लेकिन आप रात के 11.00 बजे तक अपने कार्यों में व्यस्त रहते थे। आपकी ड्यूटी प्राकृतिक आपदा विभाग में पंजाब सचिवालय में सुपिरन्टेडेंट की होती थी और आपने यह नौकरी पंजाब सचिवालय में सन् 1952 से लेकर सन् 1966 तक की । उससे पहले आप दस वर्षों तक फौज में भी रहे। आपने चौबीस वर्षों तक सरकारी नौकरी की। नौकरी के दौरान भी आप समाज की सेवा में पूर्णरूपेण समर्पित रहे। जहाँ भी आपकी ड्यूटी लगी तो उसे आपने सेवा ही समझ कर किया।

एक अंग्रेज अधिकारी था जिसका नाम फ्लैचर था। वह कहने लगा, जनाब! अन्य सभी कर्मचारी तो अपने-अपने घरों को जा चुके होते हैं लेकिन आप बैठे रहते हो और प्रातःकाल में भी अभी कोई भी कर्मचारी आया नहीं होता है लेकिन आप सबसे पहले आकर अपने कार्यों में व्यस्त हो जाते हो, इस सबका क्या कारण है?

आपने जवाब दिया कि श्रीमान जी! यह मेरा सारा कार्यक्षेत्र जो है यह मेरा गुरुद्वारा है। यदि किसी के ऊपर

प्राकृतिक आपदा आ गई तो मेरे ऊपर दोष आएगा जिसके लिए फिर मैं अपने आप को भी कैसे माफ कर सकूँगा?

अब यह उनकी कितनी बड़ी सोच थी। फिर जब बड़े महाराज जी ने आपको वचन कर दिया कि आप नौकरी छोड़ दो तो उस समय आपने किसी भी फंड या पैंशन आदि का कोई ख्याल नहीं किया। बस, उस समय तो आपने महापुरुषों के वचन को कमाने को ही तरजीह दी और नौकरी छोड़कर यू.पी. आ गए।

आप बताया करते थे कि महाराज जी (सन्त बाबा ईशर सिंह महाराज, राड़ा साहिब वाले) ने मुझसे कहा था कि यहाँ पर संगत इतनी अधिक हो जाएगी कि तुम उसे सम्भाल नहीं पाओगे और बाद में ऐसा ही हुआ। आप बताया करते थे कि जब हम ट्रैक्टर चलाया करते थे तो उसकी धुक-धुक के साथ स्वतः ही वाहिगुरू-वाहिगुरू होना शुरू हो जाया करता था। आप ऐसा नहीं करते थे कि मैं काम को बन्द करके नाम सिमरन करूँगा बल्कि आप युक्ति के अनुसार सिमरन के साथ जुड़े रहते। खाली मन तो शरारत का घर होता है। इसका तो तरीका यही है कि आप जो भी कार्य करो उसे सेवा समझ कर ही करो -

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥
ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥
कहु नानक बाह लुडाईऐ ॥ *अंग - 26*

आपने गमरुति के अनुसार जीवन को जीकर दिखलाया कि इस प्रकार से तुम लोग भी जियो। आप तो इस प्रकार के बहुपक्षीय शख्सियत के स्वामी थे कि -

राज महि राजु जोग महि जोगी ॥
तप महि तपीसरु ग्रिहसत महि भोगी ॥
धिआइ धिआइ भगतह सुखु पाइआ ॥
नानक तिसु पुरख का किनै अंतु न पाइआ ॥
अंग - 284

वास्तविकता तो यही है कि प्रयोगात्मक जीवन के बिना तो बस केवल भेष वाला जीवन ही बनकर रह जाता है -

भेख दिखाए जगत को लोगन को बसि कीन॥
अंति कालि काती कटियो
बासु नरक मो लीन॥56॥

बचित्र नाटक, अ. 6-56 (2)

फिर वह भेष दिखाकर लोगों को अपने वश में करने वाली बात तो हो सकती है, आन्तरिक उच्चावस्था नहीं। जिसकी आन्तरिक उच्चावस्था हो तो उसके ऊपर बाहरी रंग-रूप व वेश-भूषा का कोई फर्क नहीं पड़ता है। उस समय आप पूरे सरदारी ठाठ-बाठ से रहा करते थे क्योंकि धन्य गुरू गोबिन्द सिंह पातशाह जी ने ऐसा ही आदर्श जीवन अपने सिक्खों को प्रदान किया है -

इन गरीब सिखन को बखशहु पातशाही
याद राखहि हमरी गुरिआई।

कितनी महान कृपा गुरू जी ने अपने सिक्खों पर की है। महाराज राड़ा साहिब वालों ने वचन किया कि नौकरी छोड़ दो, उस समय आपने किसी लाभ हानि की बात का ध्यान नहीं किया और आप नौकरी छोड़कर महापुरुषों के हुकमानुसार यू.पी. के कृषि फार्म में चले गए और कृषि फार्म के साथ-साथ सत्संग भी करने लग पड़े। फिर जब बड़े महापुरुषों ने वुल्वर हैम्पटन (इंग्लैंड) में अपने शरीर का परित्याग किया तो उस समय आपकी बहुत ही वैराग्यमयी अवस्था थी, फलस्वरूप आपने एक ही वचन में सारा फार्म बेच दिया और आप चण्डीगढ़ आ गए। चण्डीगढ़ से ही बड़े महाराज जी ने आपको भेजा था। उस समय जब आप छोटे महाराज जी बाबा किशन सिंह जी के पास गए तो आपने वचन किया कि चलो यदि आपको बड़े महाराज जी ने कहा था कि चण्डीगढ़ नहीं रहना है तो आप मोहाली निवास रख लो। उनके वचनों का पालन करते हुए आपने फिर 781, फेज 3बी1 में निवास रखा और रोपड़ के तथा समीपवर्ती क्षेत्र में गुरमति के प्रचार व प्रसार की दरगाही ड्यूटी निभाई यानि कि घर-घर जाकर नाम व वाणी के साथ लोगों को जोड़ा। यहाँ पर तो लोगों को गुरमति के बारे में पता ही नहीं था। रोपड़ का सारा ही क्षेत्र तम्बाकू की बोआई किया करता था, जहाँ पर कि गुरू महाराज जी ने कितने कार्य किए। खालसा पन्थ का सृजन भी इसी क्षेत्र में हुआ था। सन् 1699 ई. की बैसाखी को खण्डे-बाटे का अमृतपान भी यहीं करवाया था। इस सबके बावजूद यह सारा क्षेत्र सिक्खी की दृष्टि से अत्यन्त पिछड़ा क्षेत्र कहा जा सकता था। जब महापुरुष अपने सारे फार्म को बेचकर चण्डीगढ़ आ गए तो उसके बाद आपने अपना सारा तन, मन व धन इसी तरफ लगा दिया। आपने ट्रस्ट बना दिया जिसका नाम रतवाड़ा साहिब ट्रस्ट रखा। रतवाड़ा, पैंतपुर व चाहड़माजरा के कुछ लोगों ने यहाँ पर जमीन भी दान की। अब तो यहाँ गुरू जी की अपार कृपा की बदौलत स्कूल, कालेज व अस्पताल आदि भी बन गए हैं। सन् 1995 ई. में आत्म मार्ग पत्रिका की शुरूआत की गई क्योंकि महापुरुषों का वास्तविक कार्य होता है नाम जपना तथा जपाना। अन्य कार्य तो सारी दुनियां करती ही है -

किनही बनजिआ काँसी ताँबा किनही लउग सुपारी॥
अंग - 1123

सारी दुनिया तो सोने-चांदी का ही व्यापार करती है जबकि सन्तजन नाम का ही व्यापार करते हैं और यही जन

साधारण को सिखाते हैं।

आपि जपहु अवरह नामु जपावहु ॥ अंग - 290

हम सब यही कार्य करने के लिए संसार पर आए हैं, अन्य कार्य तो होते रहते हैं और होते ही रहेंगे। लेकिन गुरू जी का फुरमान है -

अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥ अंग - 12

महापुरुषों ने बड़े महापुरुषों का वचन कमा लिया और उसी समय चण्डीगढ़ से चले गए। छोटे महाराज जी ने युक्ति बतला दी। आपने मोहाली में अपना निवास रख लिया।

रतवाड़ा साहिब आपने स्थान बना लिया। यह वह धरती है जहाँ पर कि धन्य गुरू गोबिन्द सिंह जी के चरण पड़े हुए हैं और यहाँ पर श्री कृष्ण महाराज जी के भी चरण पड़े थे। जिस समय पांडवों ने अपना अज्ञातवास का समय व्यतीत किया था तो उस समय श्री कृष्ण भगवान जी भी यहाँ पर आए थे।

महापुरुषों ने इस धरती का भाग्योदय किया। चलो यह सब तो महापुरुषों द्वारा किए गए वे परोपकार हैं जो हमें प्रत्यक्ष रूप से दिखाई पड़ते हैं लेकिन आन्तरिक तौर पर तो महापुरुष हमें उस अवस्था पर पहुँचाना चाहते हैं जहाँ पर कि कोई दुख नहीं है -

बेगम पुरा सहर को नाउ ॥ अंग - 345

आप तो सच्चिदानन्द की, प्रेम-प्यार की बात करते हैं। आपके प्रेमपूर्ण व्यवहार का ही परिणाम था कि डाक्टर स्वामी राम जी भी आपके प्रेम में बँधकर रह गए। डा. स्वामी राम जी वे महान योगी थे जिन्होंने हिमालय की बर्फ में 45 वर्षों तक तपस्या की। आप विश्व-विख्यात योगी थे और बहुत बड़ा अनुभव आपका था। पेनसलवानिया (अमेरिका) में एक श्वेत महिला ने आपको 600 एकड़ जमीन दान में दी थी, जिस पर आपने बहुत बड़ा आश्रम बनाया। वे महापुरुषों को बहुत अधिक प्यार करते थे। दो उदाहरण इतिहास में मिलते हैं। एक उदाहरण मस्तूआणे वाले महापुरुषों का है और दूसरा अपने महापुरुषों का है। मस्तूआणे वाले महापुरुषों के पास मदन मोहन मालवीय आया जिसने कि आपसे संस्कृत कालेज का शिलान्यास वाराणसी में करवाया। बाद में वह हिन्दू विश्वविद्यालय बन गया। दूसरी मिसाल अपने महापुरुषों की है। स्वामी राम जी, रतवाड़ा साहिब आए उन्होंने महापुरुषों को विनती करके मैडिकल कालेज का शिलान्यास करवाया। वह कालेज भी आजकल मैडिकल यूनिवर्सिटी देहरादून बन गई हैं अन्यथा किसी सिक्ख शख्सियत का हिन्दू समाज के अन्दर इतना सम्मान कम ही देखने में मिलता है। अमेरिका में भी जब महापुरुष आए तो एक मन्दिर के बहुत बड़े हाल में प्रबन्ध रखा गया। सनीवेल में जब महापुरुषों ने दीवान लगाए थे तो उस समय आप लोगों ने रौनकें देखी ही हैं। वहाँ पर सभी वर्गों के लोग महापुरुषों को खूब प्यार करते थे। आपकी सोच ही विश्व बन्धुत्व वाली थी। वे प्रत्येक के अन्दर परमात्मा को ही देखते थे, परमात्मा के बिना वे दूसरा देखते ही नहीं थे। वे हम सबको भी उसी अवस्था पर ले जाना चाहते थे। वे हमेशा पूजा अकाल की, दीदार खालसे का, पर्चा शब्द का डालते थे तथा शब्द के साथ ही जोड़ते थे क्योंकि शब्द की धुन है और धुन में ध्यान जाता है। हम लोग बाजे के द्वारा बाहरी धुन बनाते हैं। महापुरुष प्रतीक ध्यान में बताया करते हैं क्योंकि यहाँ पर अब तरंगें हैं, महापुरुष निवास रखते हैं, यहाँ पर ओरा काम कर रहा है, फलस्वरूप वातावरण शुद्ध हो गया है -

जिथै बैसनि साध जन सो थानु सुहंदा ॥
अंग - 319

यह सारा परिवार ही सेवा में लगा हुआ है, अन्यथा आजकल बच्चे किस के कहने में चलते हैं क्योंकि कल्युग का समय है माया (अज्ञानता) का प्रभाव अत्यधिक बढ़ चुका है, लेकिन ये बच्चे कल्युग के प्रभाव से बचे हुए हैं। ये किस प्रकार से बचे हुए हैं? जब महापुरुषों द्वारा दर्शाई हुई युक्ति के अनुसार सत्संग होता है तो फिर माया का प्रभाव नहीं पड़ता है। इसीलिए महापुरुषों ने वचन किया था कि कभी भी सत्संग नहीं छोड़ना। जब आप मिलजुल कर सत्संग करोगे तो फिर वहाँ पर पावन आत्माओं का निवास हो जाता है। इसके विपरीत यदि घर में अण्डा, मीट व शराब का सेवन किया जाता है तो फिर वह भूत-रसोई बन जाती है, यानि कि वहाँ पर भूत-प्रेतादि का निवास हो जाता है -

कली अंदरि नानका जिंनाँ दा अउतारु ॥
पुतु जिनूरा धीअ जिंनूरी जोरु जिंना दा सिकदारु ॥
अंग - 556

फिर भूत व प्रेत एक दूसरे से लड़ाई-झगड़ा करते हैं, कलह-क्लेश रहता है, दूसरी तरफ जब सत्संग का वातावरण होगा तो फिर -

सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥
कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥ अंग - 262

महापुरुषों ने बताया कि तुम लोग याद में बैठा करना। युक्ति भी बतला दी कि श्वासों के माध्यम से किस प्रकार अभ्यास करना है। अतः आप सब उस युक्ति को अमल में लाओ और अपने जीवन को सफल करो।

वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतहि।

प्यारे महापुरुष सन्त बाबा वरियाम सिंह जी तथा माता रणजीत कौर जी की मधुर स्मृति में आयोजित महान गुरमति समागम

(30-31 अक्टूबर, 1-2 नवम्बर)

दिनांक 30 अक्टूबर - प्रथम समागम (समस्त शहीदों की याद)

शहीद कौम की अमूल्य निधि होते हैं

दिनांक 30 अक्टूबर 2018 को रतवाड़ा साहिब में हो रहे चार दिवसीय (30, 31 अक्टूबर तथा 1, 2 नवम्बर) समागम के दौरान समस्त शहीदों को श्रद्धाजलियां भेंट की गईं। कथा कीर्तन व भाषणों के माध्यम से शहीदों की याद मनाई गई। ब्रह्मबेला में 'आसा दी वार' के बाद श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी में निर्धारित रागों के अनुसार कीर्तन आरम्भ हुआ। भाई दिलीप सिंह जी, रागी बन्धु, के द्वारा रसीले कीर्तन के बाद रतवाड़ा साहिब के स्कूलों व कालेज के बच्चों, ज्ञानी विरसा सिंह जी 'मक्खन', रागी भाई बलविन्दर सिंह जी पट्टी वाले, बाबा पूरन सिंह जी दिल्ली वाले, सन्त बाबा गुरदीप सिंह जी खुबिया नंगल (यू.पी.) ने कथा-कीर्तन द्वारा शहीदों की याद में जुड़ी हुई संगत को कृतार्थ किया। इस समागम में बाबा हरपाल सिंह जी रतवाड़ा साहिब, बाबा परमजीत सिंह जी हंसाली वाले, बाबा अवतार सिंह जी टिब्बी साहिब (रोपड़), भाई हरभाग सिंह देसूमाजरा, तथा स. इन्द्रजीत सिंह रन्धावा तथा प्रिंसिपल डा. जगजीत सिंह मुख्य सम्पादक 'आत्म मार्ग' हाजिर थे। आज के समागम में गुरू महाराज जी की अनेकों कुर्बानियाँ, साहिबजादों की महान शहादतें, बाबा बन्दा सिंह बहादर तथा अनेक सिंहों व सिंहनियों की शहादत को नमस्कार करते हुए तथा इस अनुभव को दृढ़ करवाते हुए यह विचारें की गईं कि शहीद, सिक्ख, कौम की अमूल्य धरोहर हैं।

वर्तमान ट्रस्ट मुखी बाबा लखबीर सिंह जी ने शहीदों के प्रति सिजदा करते हुए वचन किए कि शहीद, कौम की अमूल्य धरोहर हैं, जिन्होंने कि धर्म, देश व कौम के लिए अपने जीवन को न्यौछावर कर दिया। उनके द्वारा देश, कौम तथा सम्पूर्ण मानवता के लिए बहाए गए खून की एक-एक बूँद में से हजारों व लाखों योद्धाओं ने जन्म लिया और शहादतें प्राप्त कीं, जिनके ऊपर सम्पूर्ण मानवता फख्र करती है। आप जी ने अपने वचनों में श्री गुरू अरजन देव जी की शहादत से शुरू करके समस्त शहीदों का जिक्र किया, जिन्होंने असह्यनीय व अकथनीय कष्टों को सहन किया लेकिन सत्य के मार्ग पर अडिग रहे। अपने लिए तो प्रत्येक व्यक्ति जीता है, लेकिन शहीदों का एक-एक श्वास धर्म, देश व कौम के लेखे में होता है।

मंच संचालन की सेवा स. जसवन्त सिंह तथा प्रो. गुरदेव सिंह न बाखूबी निभाई तथा अरदास की सेवा डा. (भाई) सुखविन्दर सिंह ने निभाई तथा दिन के समागम की सम्पूर्णता हुई।

समागम में देश-विदेश से आई संगत ने हजारों की संख्या में हाजिरी भरी। समागम के दौरान (दिनांक 27 से 31 तक) आँखों के शिविर, 30 व 31 अक्टूबर को कैंसर के परीक्षण तथा 1 नवम्बर को रक्तदान शिविर एवं नवयुवकों के लिए दस्तार प्रशिक्षण शिविर लगाए गए। 1 और 2 नवम्बर को विशाल अमृत संचार हुए। रात्रि के दीवान में भाई मलकीत सिंह ढाडी, भाई हरजीत सिंह हरमन, गढ़ी भोरखा, बाबा सिकन्दर सिंह माणकपुर शरीफ, बाबा चरनजीत सिंह भेडवाल वालों ने कीर्तन की हाजिरी भरी। अगले दिन के समागम रतवाड़ा साहिब के मुखी महापुरुष सन्त बाबा वरियाम सिंह जी की पावन याद में हुए। इस समागम के दौरान समस्त श्रद्धालुजन देश व विदेशों से बड़ी संख्या में पहुँचे।

दिनाँक 31 अक्टूबर द्वितीय समागम (प्यारे महापुरुषों की पावन याद)

साहिब श्री गुरू नानक देव जी के सिद्धान्त किरत करो, नाम जपो तथा मिल बाँट कर ग्रहण करो पर अमल करते

हुए सन्त बाबा वरियाम सिंह जी द्वारा पृथक-पृथक क्षेत्रों में किए गए परोपकारी कार्य मानवता के लिए वरदान - सन्त बाबा लखबीर सिंह जी

दिनाँक 31 अक्टूबर 2018 को रतवाड़ा साहिब में बड़े दीवान हाल में हजारों की संख्या में एकत्र हुई संगत को सम्बोधन करते हुए सन्त बाबा लखबीर सिंह जी ने उपर्युक्त विचार संगत के साथ साझे किए। उन्होंने बताया कि आज महापुरुष सन्त वरियाम सिंह जी की पावन व मधुर स्मृति के साथ-साथ समस्त सम्प्रदायों, व टकसालों के महापुरुषों की मधुर स्मृति भी मनाई जा रही है। समस्त सम्प्रदायों के परम पिता श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी तथा माता साहिब कौर जी हैं। श्री गुरू गोबिन्द सिंह महाराज जी से आशीर्वाद प्राप्त भाई साहिब भाई दया सिंह जी से प्रारम्भ हुए सम्प्रदाय से ही राड़ा साहिब तथा रतवाड़ा साहिब के सम्प्रदाय क्रियाशील हुए। शहीद बाबा दीप सिंह जी, भाई कन्हैया जी, कार सेवा वाले, अखण्ड कीर्तनी जत्थे तथा अन्य टकसालों का जिक्र करते हुए बाबा जी ने बताया कि ये सभी गुरू घर के साथ जुड़े हुए हैं। प्यारे महापुरुष सन्त बाबा वरियाम सिंह जी को श्रद्धांजलि भेंट करते हुए आप जी ने बताया कि उन्हें महापुरुषों की रूहानी संगत 32 वर्षों तक प्रत्यक्ष रूप में प्राप्त होने का गौरव प्राप्त है। आज मेरी जो कुछ भी प्राप्ति है वह सब गुरू महाराज जी तथा महापुरुषों की अपार बख्शीश की बदौलत ही है। महापुरुषों ने देश व विदेश में निवास कर रहे अनेकों प्राणियों को गुरमति मार्ग का अनुसरणकर्ता बनाया तथा नाम वाणी के साथ जोड़ा। जहाँ कहीं भी लोग मन मति में लगे हुए थे, उन सबको गुरु शब्द के साथ जोड़कर उन्हें नया रूहानी जीवन प्रदान किया। महापुरुषों ने आज के दिन 2001 में दोपहर के 1.13 बजे अपने शरीर का परित्याग किया था। उनके द्वारा दर्शाई गई विधि के अनुसार समस्त संगत अपरान्ह 1.13 बजे 'वाहिगुरू' की ऊँची धुन के साथ जुड़ी।

दिनाँक 31 अक्टूबर 2018 को द्वितीय समागम परम्परानुसार प्रातः 4.00 बजे रागी राजबीर सिंह खडूर साहिब द्वारा गायन की गई 'आसा दी वार' के साथ प्रारम्भ हुआ। समागम में भाई प्रभजोत सिंह रतवाड़ा साहिब, भाई गुरदेव सिंह जी यू.पी., भाई कुलतार सिंह, भाई रुपिन्दर सिंह, रागी राजबीर सिंह खडूर साहिब, भाई जतिन्दर सिंह पट्टी, भाई साहिब भाई राय सिंह, हजूरी राग श्री दरबार साहिब, अमृतसर, ज्ञानी रतन सिंह जी यू.पी., भाई जसविन्दर सिंह घोला, बाबा गुरपाल सिंह यू.पी., बाबा हरपाल सिंह जी रतवाड़ा साहिब, सन्त गुरदीप सिंह जी यू.पी. वालों ने संगत को कथा कीर्तन द्वारा कृतार्थ किया।

समागम के अन्त में बाबा लखबीर सिंह जी ने बड़े ही विस्तारपूर्ण ढंग से महापुरुषों द्वारा किये गए परोपकारों का वर्णन किया, विशेष तौर पर गुरमति अनुसार नाम सिमरन की विधि बतलाते हुए संगत को रूहानी सहजता वाला व आनन्दमयी जीवन जीने की कला बतलाई तथा अन्ध विश्वासों, फोकट कर्मकाण्डों, वहमों व भ्रमों से निजात की प्रेरणा दी।

स्टेज की सेवा स. जसवन्त सिंह तथा प्रो. गुरदेव सिंह जी ने बाखूबी निभाई तथा अरदास की सेवा डा. भाई सुखविन्दर सिंह जी ने निभाई। इस प्रकार से दिन के समागम की सम्पूर्णता हुई। इस दिन के समागम में हल्के के विधान सभा सदस्य कंवर सन्धू तथा स. हरभाग सिंह देसूमाजरा ने हाजिरी भरी। रात्रि के समागम में श्रीमती जसप्रीत कौर आस्ट्रेलिया, बाबा गुरचरन सिंह मरदांपुर, ज्ञानी जगदेव सिंह 'जाचक' ढाडी, सन्त सुरन्दिर सिंह - धन्ना भक्त, सन्त महिन्दर सिंह लम्बियां, जत्थेदार ज्ञानी रणजीत सिंह, सन्त प्रताप सिंह इंगलैंड, भाई हरपाल सिंह सनेही, भाई मक्खन सिंह मनीला, ढाडी अमर सिंह नूर ने हाजिरी भरी।

दिनांक 1 नवम्बर - तृतीय समागम (गुरू घर में माताओं/बहनों का योगदान/कुर्बानियां तथा सम्माननीया माता रणजीत कौर जी की याद में)

कौम, देश तथा मानवता के कल्याणार्थ सिक्ख कौम के सिंहों के साथ-साथ माताओं व बहनों की सेवा व कुर्बानियाँ भी किसी दृष्टिकोण से कम नहीं हैं - बाबा लखबीर सिंह जी

रतवाड़ा साहिब में चार दिवसीय महान सालाना समागम का दिनांक 1 नवम्बर 2018 शनिवार तीसरा समागम बड़ी ही सफलता व बुलन्दावस्था में सम्पन्न हुआ। आज का समागम प्यारे महापुरुषों (सन्त वरियाम सिंह जी) की जीवन संगिनी माता रणजीत कौर जी की याद में तथा समस्त नाम अभ्यासी व निष्काम सेवा में सलंग्न गुरू घर की महिलाओं के प्यार व सम्मान को समर्पित था। ट्रस्ट रतवाड़ा साहिब के वर्तमान मुखी सन्त बाबा लखबीर सिंह जी ने अपने प्रवचनों में गुरू घर में माताओं व बहनों की सेवा, सिमरन व कुर्बानियों पर प्रकाश डाला। जहाँ पर गुरू घर में सिंहों की बड़ी-बड़ी

कुर्बानियाँ तथा परोपकार हैं, वहीं पर माताएँ व बहनें भी किसी भी दृष्टिकोण से कम नहीं हैं। उन्होंने भी धर्म, कौम तथा समाज के लिए बहुत बड़ा योगदान किया है। उन बहनों की कुर्बानियाँ कितनी महान हैं, जिन्होंने अपने पिता, पति, पुत्र, परिवारों व स्वयं को भी कौम तथा देश के लिए शहीद करवा दिया। इसी परम्परा में महापुरुषों की जीवन संगिनी माता रणजीत कौर जी ने महापुरुषों का प्रत्येक क्षेत्र में पूरा पूरा सहयोग दिया। किरत करते हुए, नाम जपते हुए, मिल बाँट कर ग्रहण करते हुए, सेवा सिमरन करते हुए, सहज स्वभाव ही आपने क्षेत्र की असंख्य महिलाओं को गुग्गा माड़ी की पूजा से रोक कर, गुरू घर के साथ जोड़ा। रतवाड़ा साहिब की संस्था के निर्माण में उनका बहुत बड़ा योगदान है।

नित्य की परम्परा के अनुसार आज का तीसरा गुरमति समागम, बह्मवेला में बहन चरनजीत कौर जी के जत्थे द्वारा 'आसा दी वार' के मनोहर कीर्तन के माध्यम से आरम्भ हुआ। इसके बाद बाबा लखबीर सिंह जी ने गुरमति विचारें संगत के साथ सांझी कीं। दिन के समागम में महापुरुषों तथा कीर्तनी जत्थों ने हाजिरी भरी, जिनमें बहन जसप्रीत कौर आस्ट्रेलिया, भाई भाग सिंह जी लुधियाना, भाई मक्खन सिंह मनीला, भाई इन्द्रजीत सिंह रागी, भाई साहिब सिंह जी यू.एस.ए. वाले तथा जत्था बाबा हरनेक सिंह जी लंगर वालों के नाम, विशेष तौर पर उल्लेखनीय हैं। महान महिलाओं व बहनों को समर्पित दीवान में, बहनों का ढाडी जत्था बहन गुरविन्दर कौर लोहियां वालों ने 'गुरमति वारों' का गायन किया। इसके उपरान्त गुरमति विचारों में सन्त महापुरुषों, विद्वानों तथा गुरू घर के प्रेमीजनों ने गुरमति की व्याख्या करते हुए गुरू घर में महिलाओं व बहनों की साधना, सेवा व कुर्बानियों की व्याख्या की, जिसकी संसार भर में कहीं भी तुलना नहीं मिलती है। विशेष वक्तागण थे सन्त प्रताप सिंह जी यू.के., सन्त गुरविन्दर सिंह जी मांडी वाले, सन्त कश्मीरा सिंह जी अलहौंरा, बाबा मनवीर सिंह जी राड़ा साहिब, बाबा सेवा जी रामपुर खेड़ा, बाबा गुरदेव सिंह बनूड़, डा. सरबजिन्दर सिंह जी पटियाला, बाबा सुखजीत सिंह जी संगरूर, बाबा हरपाल सिंह जी रतवाड़ा साहिब तथा सन्त हरी सिंह जी रन्धावा वाले। बाबा बचन सिंह जी कार सेवा वालों ने 'वाहिगुरू' गुरमन्त्र के जप के माध्यम से संगत को गुरु चरणों के साथ जोड़ा।

रात्रि के दीवान में बाबा मनजीत सिंह मुल्लांपुर, बाबा गुरदीप सिंह बटाले वाले, कवीशर भाई महिल सिंह, भाई जसविन्दर सिंह घोला, भाई बलजिन्दर सिंह यू.के., भाई सतनाम सिंह यू.एस.ए., बाबा गुरपाल सिंह जी तथा बाबा हरपाल सिंह जी ने कीर्तन तथा कथा की हाजिरी भरी। दीवान में देश, परदेश से आए हुए हजारों श्रद्धालुजनों ने शबद-कीर्तन तथा विचारों का रस्सावादन किया। अनेकों प्रेमीजनों ने रक्तदान किया। अमृत संचार में अनेकों प्रमीजनों ने अमृतपान ग्रहण करके खालसा पन्थ में दाखिला लिया। अनेकों प्रेमीजनों ने आत्म मार्ग तथा महापुरुषों की पुस्तकें अर्द्धशुल्क पर प्राप्त कीं। स्टेज की सेवा स. जसवन्त सिंह तथा प्रो. गुरदेव सिंह ने तथा अरदास की सेवा भाई (डा.) सुखविन्दर सिंह ने निभाई।

रतवाड़ा साहिब में 2 नवम्बर को हुआ चौथा समागम - श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी की गुरगद्दी दिवस को समर्पित

सिक्ख कौम के मूल केन्द्र श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी का पंजाब की धरती पर घोर अपमान सम्पूर्ण मानवता के लिए असह्यनीय कारनामा, सरकार दोषियों पर सख्त एक्शन ले - (सन्त समाज)

रतवाड़ा साहिब में 2 नवम्बर को रूहानी गुरमति समागम के चौथे और अन्तिम दिन सन्त समाज के साथ जुड़े हुए समस्त महापुरुषों तथा विद्वानों ने सम्पूर्ण तौर पर यह भावना प्रकट की कि जिस प्रकार से सन् 1984 के सिक्ख कत्लेआम का 35 वर्ष बीतने के बाद भी सिक्ख कौम को इन्साफ नहीं मिला, इसी प्रकार से विगत तीन वर्षों से श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी की हुई घोर बेअदबी तथा सिक्ख संगत पर जुल्म ढाने वालों के विरुद्ध कोई कारवाई नहीं हुई। सन् 1984 की तरह से बरगाड़ी घटनाक्रम पर इन्साफ के प्रति हो रही देरी, सिक्ख मानसिकता पर गहरी चोट है। सिक्ख पन्थ आज भी बरगाड़ी में संघर्ष कर रहा है, इसलिए पंजाब सरकार तथा केन्द्र सरकार तुरन्त कारवाई करके अपना नैतिक दायित्व अदा करे। बाबा लखबीर सिंह जी ने कहा है सारे पन्थ को एक निशान साहिब के नीचे एकत्र होना चाहिए। हमारी एक मर्यादा तथा एक कैलंडर हो। आज के समागम में जेलों में सजा पूरी कर चुके सिंहों की रिहाई की माँग के लिए सरकारों को पुरजोर अपील की गई। यह प्रकटीकरण आज सिक्ख पन्थ की प्रसिद्ध संस्था रतवाड़ा साहिब में, बाबा लखबीर सिंह जी की देखरेख में हो रहे गुरमति समागम में प्रकट किए। इस समागम के अन्तिम दिन सन्त समाज की प्रसिद्ध शख्सियतों ने एक स्वर में अपनी आवाज को बुलन्द

करते हुए सरकार के लिए सन्देश दिया है। समागम के प्रमुख संचालक तथा संस्था के मुखी बाबा लखबीर सिंह जी ने वैराग्यमयी कीर्तन करते हुए जहाँ पर एक तरफ नाम की बरकत सेवा सिमरन तथा महापुरुषों के आदर्शमयी जीवन पर प्रकाश डाला, वहीं साथ ही साथ आपने श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी की घोर बेअदबी के लिए दुख भी जाहिर किया। उन्होंने पुरजोर तरीके से मांग करते हुए कहा कि सरकार गुरू साहिब के दोषियों के शिलाफ सख्त कारवाई करे ताकि भविष्य में इस प्रकार का कारनामा करने का कोई साहस ही जुटा न पाए।

सन्त समाज की प्रमुख शख्सियतें बाबा हरी सिंह जी रन्धावे वाले, बाबा सेवा सिंह जी रामपुर खेड़ा ने समागम को सम्बोधन करते हुए एक मत होकर श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी की बेअदबी तथा बहिबल कलां में शहीद किए गए सिक्खों के कातिलों को सख्त सजाएँ देने की माँग की। उन्होंने यह घोषणा की कि हमें इस बात का सदैव गर्व रहेगा कि जब पंजाब की धरती पर श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी की मान-मर्यादा की बात आई तो बाबा लखबीर सिंह जी ने डट कर पन्थक हितों की पहरेदारी की और पन्थ को प्राथमिकता दी। उस समय लिए गए स्टैंड की बदौलत आज पूरे सिक्ख जगत में आप जी का विशेष सम्मान है तथा यह आने वाले इतिहास का हिस्सा बनेगा। जब श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी की बेअदबी तथा सिक्खों पर समय की सरकार ने जुल्म व अत्याचार किया उस समय कौन कहाँ पर खड़ा था, इसका निर्णय आने वाला इतिहास करेगा। इस संघर्ष में बाबा लखबीर सिंह जी ने अपने बड़े महापुरुषों तथा इस संस्था का नाम विशाल स्तर पर रौशन किया तथा इतिहास में एक सम्माननीय जगह बनाई।

आज श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी हमसे पूछ रहे हैं कि तुम लोगों ने मेरे लिए क्या किया? बेअदबी होने पर अभी तक इन्साफ नहीं मिला, पिछले दशक में सरकारी समागमों में एकत्रता करने के लिए मुबई से नर्तकियाँ बुलाई गईं। इतिहास साक्षी है कि महाराजा रणजीत सिंह ने नर्तकी का नृत्य करवाया बदले में उसे कोड़ों की सजा मिली। संगत को चाहिए कि वह गुरू का दर्द रखने वालों को आगे लाए। शिरोमणि अकाली दल बहुत बड़ी कुर्बानियों के द्वारा बना है, इसलिए इसमें ऊँचे चरित्र वाले लोग आगे आने चाहिए। धर्म तथा राजनीति पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि धर्म केन्द्र में होना चाहिए और राजनीति उसके चारों तरफ घूमती रहे। श्री गुरू नानक साहिब के 550 वर्षीय दिवस मनाने की खुशी तो तभी हो सकती है जबकि श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के दोषियों को सजा मिले।

आज के समागम में बाबा सुखजीत सिंह संगरूर, बाबा महिन्दर सिंह भड़ी, रागी दविन्दर सिंह सोढी, स. मनजीत सिंह जालन्धर, ढाडी तरसेम सिंह मोरांवाली, डा. बलविन्दर कौर चाहल, बाबा गुरपाल सिंह, सन्त गुरनाम सिंह यू.पी, सन्त बाबा हरी सिंह रन्धावे वाले, बाबा हरपाल सिंह जी ने विशेष तौर पर हाजिरी भरी। स्टेज की सेवा भाई जसवन्त सिंह तथा प्रो. गुरदेव सिंह ने बाखूबी निभाई। कैबिनेट मन्त्री स. बलवीर सिंह सिद्धू, स. रणजीत सिंह गिल, बन्नी कंग तथा स. हरभाग सिंह देसूमाजरा ने भी संगत के दर्शन किए। आज ट्रस्ट रतवाड़ा साहिब के स्कूलों के छः अध्यापकों को भी 'सर्वोत्तम अध्यापक पुरुस्कार' देकर सम्मानित किया गया। अरदास की सेवा डा. (भाई) सुखविन्दर सिंह ने निभाई तथा समागम की सम्पूर्णता सच्चे पातशाह जी के हुक्मनामे के द्वारा हुई।

आवश्यक निवेदन

रिन्युवल का चन्दा भेजने के लिए मेंबरशिप नम्बर (सदस्यता संख्या) तथा रिन्युवल तारीख (पुनर्नवीनीकरण तिथि) का व्यौरा अवश्य दिया जाए तथा यह भी बतलाया जाए कि चन्दा, रिन्युवल के लिए है अथवा नई मेंबरशिप प्राप्त करने के लिए प्रेषित किया गया है।

यदि किसी प्रेमी पुरुष ने आत्म मार्ग मैगजीन के लिए चन्दा जमा करवाया हो और उसे मैगजीन न पहुँच पा रहा हो, तो उसे जमा करवाई गई रकम का रसीद नम्बर आदि लिखकर आत्म मार्ग कार्यालय से सम्पर्क करना चाहिए।

'आत्म मार्ग' एक धार्मिक मैगजीन है, इसके अन्तर्गत श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी की वाणी छपी हुई होती है, इसलिए समस्त पाठक बन्धुओं से अनुरोध है कि कृप्या इसका प्रयोग रद्दी पेपर की भांति न किया जाए। यदि आप पुराने मैगजीन को रखना नहीं चाहते हैं तो उन्हें हमारे किसी भी वितरण केन्द्र पर सहर्ष वापिस कर सकते हैं।

गुरबाणी अर्थ भण्डार

सन्त हरी सिंह जी रन्धावे वाले

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक नवम्बर, पृष्ठ - 50)

सिरीरागु महला 3
बहु भेख करि भरमाईऔ
मन हिरदै कपटु कमाइ॥

जेकर = यदि बहु = बहुत तरह के भेख-लिबास धारण करके तीर्थों आदि पर शरीर को तो भरमाइऔ = भ्रमण करवाया जाए लेकिन हार्दिक तौर पर कपुं = छल कमाइ = करते रहें तो फिर -

हरि का महलु न पावई
मरि विसटा माहि समाइ॥1॥

इस प्रकार करके हरि = प्रभु जी के महलु = स्वरूप को न पाइई = प्राप्त नहीं किया जा सकता है बल्कि इस विधि से तो नर्को आदि में अथवा गर्भ की विसटा = गन्दगी माहि = में ही समाइ = समा जाना पड़ता है अथवा गन्दगी के कीड़े बनकर गन्दगी में ही बने रहने वाली योनियों की प्राप्ति होती है। इसलिए अपने मन को यह शिक्षा दें कि -

मन रे ग्रिह ही माहि उदासु॥

मन रे = ऐ मन! ग्रिह = गृहस्थ मे रहते हुए ही उदासु = निर्लिप्त रहें।

सचु संजमु करणी सो करे
गुरमुखि होइ परगासु॥1॥रहाउ॥

सचु = सच्चा संयम अथवा संजमु = इन्द्रियों का दमन तथा भक्ति रूपी करनी = कमाई सो = वही मनुष्य करते हैं, जिनके हृदयों में गुरमुखि = मुखी द्वारा ज्ञान का परगासु = प्रकाश हो जाता है।

गुर कै सबदि मनु जीतिआ
गति मुकति घरै महि पाइ॥

जिन्होंने गुरू के सबदि = उपदेश के द्वारा मन को जीतिआ = जीता है भावार्थ मन के बुरे स्वभाव को नियन्त्रण में कर लिया है उन्होंने मुक्ति की गति = प्राप्ति घर माहि = में बैठकर ही पाइ = पा ली है अथवा सत्संग रूपी घर में से ही प्राप्त कर ली है अथवा अन्तःकरण रूपी घर में ही मुक्ति प्राप्त कर ली है।

हरि का नामु धिआईऔ
सतिसंगति मेलि मिलाए॥2॥

हे भाई! हरि जी का अमृत रूपी नाम धिआइऔ = सिमरन करें और अपने मन को सत्संग के मेल में मिलाएँ, यही मुक्ति का साधन है लेकिन इसके विपरीत -

जे लख इसतरीआ, भोग करहि
नव खंड राजु कमाहि॥

जे = यदि लाखों इसतरिआ = कामिनियों के साथ विषय-भोग करहि = कर लो तथा नव = नौ खण्डों का राजु = राज भाग भी कमाहि = कमा लो -

बिनु सतगुर सुखु न पावई
फिरि फिरि जोनी पाहि॥3॥

तो भी बिना सतगुरू जी के उपदेश के आत्मिक सुख की पावई = प्राप्ति नहीं होती है और बल्कि कर्म फल भोगने के लिए फिरि फिर = बार-बार जुनीआ पाहि = योनियों को धारण करना पड़ेगा।

हरि हारु, कंठि जिनी पहिरिआ
गुर चरणी चितु लाइ॥

जिन्होंने हरि = प्रभु जी के नाम रूपी हार को अपने हृदय रूपी कंठ में पहिरिआ = पहना हुआ है भावार्थ अपने हृदय में धारण किया हुआ है तथा गुरू जी के चरण कमलों के साथ अपने चित्त को लगाया हुआ है -

तिना पिछै रिधि सिधि फिरै
ओना तिलु न तमाइ॥

तिना = उनके पीछे रिधि = रिद्धियाँ तथा सिधि = सिद्धियाँ दासियाँ होकर पीछे-पीछे फिरै = घूमती रहती हैं भावार्थ उन्हें कभी रिधि = खाद्यान्नों आदि की कभी भी कोई कमी नहीं आती है तथा सिधि = धन की कमी नहीं होती है। यही नहीं बल्कि उनके पास गुप्त व प्रकट होने की

अनेकानेक शक्तियाँ आ जाती हैं लेकिन उन्हें तथाकथित शक्तियों के प्रति तिल के समान भी तमाहि = लालच नहीं होता है भावार्थ वे तो स्वाभाविक रूप से परमात्मा की तरफ से प्रदत्त वस्तुओं में ही सन्तुष्ट रहते हैं अथवा उन्हें तिल के समान भी तमाहि = (तम + आइ) तम = क्रोध नहीं आइ = आता है अथवा उनके अन्दर तिल जितना भी तम = अन्धकार या अज्ञान नहीं रहता है।

जो प्रभ भावै सो थीऐ
अवरु न करणा जाइ॥

हे बन्धु! जो उस प्रभ = परमात्मा को भावै = अच्छा लगता है, सो = वही थीऐ = होता है तथा अल्पज्ञ जीव कुछ अवरु = अलग या अन्य नहीं करणा = कर सकते हैं।

जनु नानक जीवै नामु लै
हरि देवहु सहजि सुभाइ॥

सतगुरू जी फुरमान करते हैं कि हे बन्धु! आओ! उस प्रभु जी के आगे यह विनती करें कि हे प्रभु जी! हम सारे जनु = दास आपके नाम का जप करके ही जीते हैं इसलिए हे प्रभु जी! आप कृपा करके सहजि सुभाइ = स्वाभाविक रूप से ही कृपा करो भावार्थ हम लोग आठों पहर अजपा जाप करते रहें तथा प्रत्येक रोमकूप के माध्यम से आपकी आराधना करते रहें।

सिरीरागु महला 3 घरु 1
जिस ही की सिर कार है
तिस ही का सभु कोइ॥

हे भाई! जिस परमात्मा का हुक्म ही सारे जीवों पर चलता है अथवा रजो, तमो व सतो गुणों का हुक्म सारे जीवों के सिर पर है जिसके अनुसार जीव विभिन्न प्रकार के कार्यों में लगे हुए हैं तथा विभिन्न प्रकार के फलों की कामना रखते हैं जिस = उस परमात्मा के द्वारा है प्राणि मात्र को पैदा किया हुआ है अथवा जिस परमात्मा की ही समस्त जीवों पर सिरकार = हुकूमत है उसी के द्वारा प्राणिमात्र को उत्पन्न किया हुआ है।

गुरमुखि कार कमावणी
सचु घटि परगटु होइ॥

हे बन्धु! जो गुरमुख होकर भक्ति रूपी काम करना है अथवा जो गुरू साहिब मुखी है उनकी कार = सेवा या भक्ति करनी है वही सफल कार्य है जिसके द्वारा सचु = सच्चा प्रभु घटि = हृदय में से ही प्रकट हो जाता है अथवा जो गुरमुखों वाली जीवन शैली है वही सफल है क्योंकि उसके माध्यम से ही प्रभु जी की प्राप्ति होती है। जिस प्रकार से गुरमुख सेवा व सिमरन में लगे रहते हैं यानि कि जिस प्रकार से वे दूसरों के दुख को देखकर दुखी तथा सुख को देखकर सुखी होते हैं यानि कि किसी के बढ़ते हुए प्रताप को देखकर प्रसन्न होते हैं। जो बात नहीं मानता है भावार्थ हठ नहीं छोड़ता है, वे उसकी प्रारब्ध समझ कर चुप हो जाते हैं। यह गुरमुखों की जीवन शैली है जो कि सफल है तथा परमात्मा के साथ मिलाप करवाने वाली है।

अंतरि जिस कै सचु वसै सचे सची सोइ॥

जिस कै = जिनके अन्दर प्रभु जी का सच्चा नाम बसता है अथवा जिनके अन्दर सच्चा प्रभु निवास करता है अथवा जिनके अन्दर श्रवण, मनन व चिन्तन की सच्चाई विद्यमान है उस सचै = सच्चे पुरुष की लोक व परलोक में सच्ची सोइ = शोभा होती है -

सचि मिले से न विछुड़हि
तिन निज घरि वासा होइ॥

जो सच्चे प्रभु जी के नाम के साथ मिले हैं से = वे कभी भी परमेश्वर के साथ से बिछुड़हि-बिछुड़ते नहीं हैं। तिन = उनका निज घरि = निज स्वरूप रूपी घर अथवा तुरिया पद रूपी घर में वासा = निवास होइ = होता है।

मेरे राम; मै हरि बिनु अवरु न कोइ॥

हे भाई! हमारा तो केवल एक प्रभु ही है हमारे लिए तो प्रभु जी के बिना अबरु = अन्य कोई भी नहीं है।

सतगुरु सचु प्रभु निरमला
सबदि मिलावा होइ॥1॥रहाउ॥

हमारे लिए तो सतगुरू जी ही सच्चे प्रभु जी का रूप हैं जो कि मैल से रहित हैं और उज्जवल स्वरूप हैं क्योंकि सतुगरू जी के सबदि = उपदेश द्वारा ज्ञान को कमाकर सत्य स्वरूप का मिलावा = मिलाप होइ = होता है।

सबदि मिलै सो मिलि रहै
जिस नउ आपे लए मिलाइ॥

जो मन, वाणी के कर्म के तौर पर सतगुरू जी के सबदि = उपदेश के साथ मिले हुए हैं सो = वे वाहिगुरू जी के साथ भी मिले रहै = रहते हैं अथवा वे सांसारिक लोगों को मिलने से रहै = रह जाते हैं, भावार्थ वे लोगों को मिलने की इच्छा नहीं रखते हैं लेकिन शब्द के साथ वही मिलते हैं

जिनको वाहिगुरू जी कृपा करके स्वयं ही मिलाइ = मिला लए = लेता है।

दूजै भाइ को ना मिलै
फिरि फिरि आवै जाइ॥

दूजै भाइ = द्वैत भाव अथवा दूजै = अन्य चीजों के साथ भइ = प्रेम करने अथवा अन्य देवी-देवताओं की उपासना करने से को = कोई भी प्रभु जी के साथ नहीं मिल सकता है बल्कि वह तो चौरासी के फिरि = फेरों में घूमते हुए आवै जाइ = आते जाते रहते हैं अर्थात जन्म लेते व मरते रहते हैं।

सभ महि इकु वरतदा
एको रहिआ समाइ॥

हे भाई! एक अद्वैत रूप प्रभु ही सबमें वरतदा = व्याप्त है और सारे खण्डों व ब्रह्मांडों में एक प्रभु ही समाया हुआ है -

जिस नउ आपि दइआलु होइ
सो गुरमुखि नामि समाइ॥

जिसके ऊपर प्रभु स्वयं दइआलु = दयावान हो जाता है वह गुरुमुखों की संगत के द्वारा गुरुमुख बनकर प्रभु जी के अन्दर समाइ = समा जाता है अथवा नामी, नाम में लीन हो जाता है।

पड़ि पड़ि पंडित जोतकी
वाद करहि बीचारु॥

लेकिन जो कमाई से हीन पुरुष हैं जो बड़े-बड़े पण्डित तथा जोतकी = ज्योतिषी ग्रन्थों को पढ़ पढ़ कर अपने आपको विद्वान कहलाते हैं भावार्थ जो भूत व भविष्य के बारे बतलाते हैं कि भविष्य में क्या होने वाला है वे अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार शास्त्रों और ग्रहों आदि के वाद-विवादों व बहसों वाले विचार करहि = करते हैं।

मति बुधि भवी न बुझई
अंतरि लोभ विकारु॥

उनकी मति या बुद्धि भवी = उल्टी हो गई है और वह परमार्थ के ज्ञान को समझती नहीं है बल्कि ऐसी मति को धारण करने वाले तो सांसारिक ज्ञान में ही उलझे रहते हैं क्योंकि उनके अन्दर लोभ का विकार टिका हुआ है भावार्थ वे लोभ के वशीभूत होकर, जिस किसी से कुछ प्राप्त हो जाता है उसी के पक्ष की बात करने लगते हैं और जिससे कुछ न मिले उसके सच्चे पक्ष को भी त्याग कर विकारु = विगाड़ खड़ा कर लेते हैं।

लख चउरासीह भरमदे
भ्रमि भ्रमि होइ खुआरु॥

इसी कारण से वे चौरासी लाख योनियों में चक्कर काटते रहते हैं भावार्थ भटकते रहते हैं तथा योनियों में भटक-भटक कर खुआरु = दुखी हो होइ = होते रहते हैं।

पूरबि लिखिआ कमावणा
कोइ न मेटणहारु॥

वे बेचारे तो पुरबि = पूर्वजन्म के कर्मों के अनुसार ही लिखे हुए लेख कमावणा = कमाते हैं। उसे कोई भी मेटणहारु = मिटाने वाला नहीं है।

सतगुर की सेवा गाखड़ी; सिरु दीजै आपु गवाइ॥

लेकिन सतगुरू की सेवा बहुत ही गाखड़ी = कठिन है भावार्थ अपनी मति में फँसा हुआ जीव गुरू जी की सेवा और आज्ञा को कमा नहीं पाता है। यह सेवा तो अपने सिर को अपने गुरू को सौंप कर यानि कि अपने अहंभाव को गवाहि = गंवा कर ही होती है।

सबदि मिलहि ता हरि मिलै
सेवा पवै सभ थाइ॥

जो गुरू साहिब के सबदि = उपदेश के साथ मिल जाते हैं तो उन्हें हरि = प्रभु जी भी मिल जाता है। उनके द्वारा की गई सेवा भी थाइ = लेखे में पड़ जाती है।

पारसि परसिऐ पारसु होइ
जोती जोति समाइ॥

सतगुरू जी तो पारस के समान है और फिर सतगुरू जी और पारस में भी बहुत अन्तर है क्योंकि पारस के साथ अन्य धातुएँ मिल कर सोना तो बन सकती हैं लेकिन पारस नहीं दूसरी तरफ सतगुरू रूपी पारस के साथ परसिऐ = स्पर्श करके सिक्ख, पारस रूप भावार्थ गुरू रूप हो जाते हैं।

जोती = प्रभु जी की अद्वैत स्वरूप ज्योति में जीव की प्रत्यक्ष ज्योति समा जाती है।

जिन कउ पूरबि लिखिआ
तिन सतगुरु मिलिआ आइ॥

जिन = जिनके मस्तिष्क पर पूर्व जन्म के निष्काम कर्मों के फलस्वरूप परमेश्वर ने गुरू जी की प्राप्ति का लेख लिख दिया है उन्हें मनुष्य जन्म में आइ = आकर सतगुरू जी की प्राप्ति हो पाती है, वे अपने मन को यह शिक्षा देते हैं कि -

मन भुखा भुखा मति करहि
मत तू करहि पूकार॥

हे मन! तुम आशा व तृष्णा की भूख के अधीन होकर भूखा-भूखा मति = न करहि = करो तथा तुम किसी के पास जाकर पूकार = फरियाद न करो कि मेरी भूख मिट जाए भावार्थ तृष्णा रूपी भूख के अधीन जीव कभी भी तृप्त नहीं हो पाता है। इस संसार के ही नहीं बल्कि यदि ब्रह्मपूरी के पदार्थ भी इस जीव को प्राप्त हो जाएँ तो भी यह भूखा ही रहता है। अतः इस मनुष्य को तृप्ति तो केवल नाम के माध्यम से सन्तोष ही करवा सकता है –

लख चउरासीह जिनि सिरी
सभसै देइ अधारु॥

जिनि = जिस प्रभु जी ने चौरासी लाख योनियों वाली सृष्टि का सिरी = सृजन किया है वही सबको अधारु = सहारा देइ = दे रहा है।

निरभउ सदा दइआलु है
सभना करदा सार॥

वह निरभउ = भय रहित वाहिगुरू जी हमेशा ही दयालु है तथा सबकी सार = सम्भाल करता है वह तो इतना बड़ा बख्शनहार कि वह अकृत्घ्न लोगों का भी पालन कर रहा है।

नानक गुरमुखि बुझीऐ पाईऐ मोखु दुआरु॥

सतगुरू जी फुरमान करते हैं कि गुरमुख की संगत करके अथवा गुरू जी के मुख के द्वारा ही उस प्रभु जी को बुझीऐ = समझा जाता है, उसके बाद ही संसारु रूपी दुआरु = दरवाजे में से मोख = मुकित पाइऐ = प्राप्त कर ली जाती है अथवा दुआरु = द्वारों वाले शरीर से मुक्ति पाईऐ = प्राप्त हो जाती है अथवा दुआरु = साधु संगत रूपी दर अथवा ज्ञान रूपी द्वार के माध्यम से मोख = मुक्ति पाईऐ = प्राप्त हो जाती है।

(पृष्ठ 34 का शेष)

सीसु दीआ पर सी न उचरी।।

धारना - वाहवा-वाहवा बई सीस दे के हिंद रख लई।

बहुत बड़ा साका करके भारतवर्ष को बचा लिया क्योंकि ऐसा इतिहास में आता है कि उस दिन के बाद औरंगजेब को नींद आनी बन्द हो गई थी। सिक्खों में इतनी जागृति आ गई थी कि औरंगजेब घोड़े पर जा रहा है, एक सिक्ख ने जोर से ईंट मारी। जगह-जगह बगावत हो रही है। इसे प्रत्येक समय डर लग रहा है कि अब मुझे मार दिया जाएगा। दक्षिण में जाकर दिन काटने लगा। ऐसा भी बताते हैं कि जो भी खाता था, वही उल्टी कर देता था। बहुत दुखी होता था क्योंकि एक महान पुरुष को शहीद किया था।

अतः साधु संगत जी! गुरू तेग बहादुर महाराज ने ऐसी शहादत किस लिए दी? इसलिए दी ताकि हिन्दुओं को पूजा पाठ करने का अधिकार मिल सके क्योंकि सब को बेदीन किया जा रहा था। अतः जिसे आज हम मनुष्य का अधिकार कहते हैं, उसके आधार पर आप ने दूसरों की रक्षा करने के लिए तिलक जनेऊ को प्रफुल्लित किया। स्वयं के शरीर का बलिदान दे दिया। अपने रक्त से कल्प वृक्ष को सींचा। दुनिया में ये बहुत बड़ी बात हुई।

गुरू दसवें पातशाह ने भी जितने युद्ध किए, वह स्वयं के लिए नहीं थे, न ही इसलिए थे कि ये चढ़ाई कर के आते हैं, तो अपनी रक्षा करें। महाराज दक्षिण में चले जाते। यहाँ रहने की क्या आवश्यकता थी, इतने जंग युद्ध करने ही क्यों थे। महाराज जी का तो ये था कि जो दूसरों के हकों को जबरदस्ती से रोकते हैं, उन्हें आराम से नहीं रहने देते, तो उनसे युद्ध किए। राजभाग पाने के लिए नहीं। राजभाग लेना होता तो, पांवटा साहिब की लड़ाई में सब राजा हार गए थे। तो राजभाग ले लेते। गुरू महाराज उस समय श्रीनगर पर कब्जा कर लेते, इधर बाईधार के राजाओं की ताकत अकेले-अकेले की थी, बहुत राजा गुरू साहिब के साथ मिल जाते। पूरे पहाड़ी क्षेत्र पर कब्जा कर लेते। यदि महाराज जी की जगह कोई और होता तो वह ऐसा ही करता लेकिन महाराज जी ने सत्य का जीवन व्यतीत किया। हमें भी सत्य के मार्ग पर चलना बताया।

अतः इस प्रकार से आज के दिन को समझने की कोशिश करो कि ये दिन हमें प्रेरणा देता है कि स्वयं के लिए नहीं जीना, दूसरों के लिए जीना है। जब हम किसी के लिए जियेंगे, तो वाहिगुरू जी के द्वारा बहुत वरदान प्रदान होंगे। स्वयं के लिए जीना बहुत छोटी बात होती है, कौम के लिए जीना बहुत बड़ी बात होती है।

नूरानी मिलाप - 5

(डा.) भाई सुखविन्दर सिंह

(श्री गुरू नानक देव जी महाराज जी के 2019 में 550 वर्षीय प्रकाश शताब्दी को समर्पित)

मै मूरख की केतक बात है कोटि पराधी तरिआ रे॥
गुरु नानकु जिन सुणिआ पेखिआ से फिरि गरभासि न परिआ रे ॥

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक अक्टूबर, पृष्ठ - 45)

दुनिया का शौक तथा मौत का डर

पण्डित गोपाल को जिन्दगी के वास्तविक लेखे-जोखे समझाने के बाद बाल गुरू नानक देव जी अब मुल्ला जी को ज्ञान करवाने हेतु दर्शन देते हैं। आज आपका बहाना था मुल्ला जी से विद्याध्ययन करने का। सतगुरू सच्चे पातशाह जी तो स्वयं सारी विद्याओं के स्वामी थे। वे तो स्वयं सारी दुनिया को मानवता का पाठ पढ़ाने के लिए संसार में आए थे, परमात्मा के ज्ञान का विधान समझाने आए थे। आप जी प्रायः एकान्त ही पसन्द करते थे। आपके पिता मेहता कल्याणदास जी आपके इस प्रकार से एकान्तवास रहने के तौर तरीके को सांसारिक दृष्टि से देखते थे। आप सोचते थे कि कहीं इस पर किसी अदृश्य आत्मा का प्रभाव तो नहीं है। मुल्ला जी ने विनती की कि हे नेक बालक! परवरदिगार की कृपा की बदौलत आप जी मुझे बतलाओ कि आपके एकान्तवास रहने का क्या कारण है? खुदा का वास्ता है कि आप मुझे इसका कारण बतलाओ? मुझे भी आन्तरिक इलाही नाद के बारे में समझाओ। किसी दिव्य लय से शरशार सतगुरू जी इलाही नाद का फुरमान करते हुए बोले -

दुनीआ मुकामे फानी तहकीक दिल दानी ॥
मम सर मूइ अजराईल गिरफतह दिल हेचि न दानी ॥
अंग - 721

हे मुल्ला जी! यह दुनिया तो आने-जाने वाली है, नाशवान है और मौत का भय प्रत्येक मनुष्य को है। मृत्यु अटल है और यह तो आनी ही आनी है, भले ही कोई बालक, युवा या वृद्ध हो। इससे तो कोई भी बच नहीं सकता है। बड़े-बड़े पीर, पैगम्बर, औलिए व ऋषि-मुनि नेकी करने वाले अथवा बदी करने वाले यानि कि जो भी इस संसार पर आया है शारीरिक तौर पर उसे एक दिन जाना ही पड़ा। जीवन की असली सच्चाई को सुनकर मुल्ला जी ने जवाब दिया कि आप जी इस उम्र में यह बात मत सोचो क्योंकि यह उम्र तो हँसने-खेलने, नाचने-कूदने, खाने-पीने व मौज-मस्ती की होती है। महाराज जी ने फुरमान किया कि -

यक अरज गुफतम पेसि तो दर गोस कुन करतार ॥
हका कबीर करीम तू बेऐब परवदगार ॥ अंग - 721

इसलिए मन को सदैव प्रभु जी की याद में जोड़कर रखना ही मनुष्य का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए लेकिन मुल्ला जी की सीमित सांसारिक सोच होने के कारण वह इस अगम्य बात को समझने में असमर्थ है। आप पुनः बोले कि ऐ परमात्मा के नूर! घर जाओ और घर में सबके साथ मिलकर कारोबार करो तथा आनन्दमयी जीवन व्यतीत करो। इलाही नाद पुनः गुंजायमान हुआ -

जन पिसर पदर बिरादराँ कस नेस दसतंगीर ॥
आखिर बिअफतम कस न दारद चूं सवद तकबीर ॥
अंग - 721

हे मुल्ला! किसी सांसारिक रिश्ते वाले सगे सम्बन्धी ने वहाँ पर तुम्हारी बाँह नहीं पकड़नी है क्योंकि वहाँ पर तो केवल परमात्मा का नाम ही रखवाला है।

अब मुल्ला पर उस समय का आगाज हुआ जिसके बारे मं गुरवाणी का फुरमान है -

पूरब करम अंकुर जब प्रगटे भेटिओ पुरखु रसिक बैरागी ॥ मिटिओ अंधेरु मिलत हरि नानक जनम जनम की सोई जागी ॥ अंग - 204

मुल्ला जी भी इलाही रंग में रंगे गए। चन्दन की खूशबू की भांति सुगन्ध लेने की उत्सुकता उनके अन्दर जागृत हुई और पूर्वजन्म का अंकुर प्रकट होने के लिए उतावला होने लगा फलस्वरूप भाग्य जागृत हो गए। अब गुरू जी ने पुनः शबद का उच्चारण किया -

बदबखत हम चु बखील गाफिल बेनजर बेबाक ॥
नानक बुगोयद जनु तुरा तेरे चाकराँ पा खाक ॥
अंग - 721

यह मनुष्य सदैव ही ईर्ष्यालु तथा भूल जाने वाला है जबकि परमात्मा सदैव ही दयालु है। वह इस मनुष्य के अवगुणों के बारे में कभी भी विचार नहीं करता है, बशर्ते उसकी शरण ग्रहण कर ली जाए। इस दिव्य नाद को सुनकर मुल्ला जी ने नमस्कार की। अपने द्वारा बोले गए शब्दों के लिए क्षमायाचना की। धन्य गुरू नानक! धन्य गुरू नानक! की धुन स्वतः ही मुल्ला जी के हृदय में से निकल पड़ी।

स्वामी राम जी के प्रेरणात्मक विचार
(Inspired Thoughts of Swami Ram)

डा. स्वामी राम जी

अनुवादक - शमशेर सिंह 'कोमल'

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक अक्टूबर, पृष्ठ - 54)

वास्तव में संवेग तथा भावनाएँ मन की झील में एक मछली की भांति हैं। जब मछली अशान्त होती है, व्याकुल होती है तो सारी झील ही अशान्त हो जाती है। जब हम भावुक होते हैं, तो उस समय हम तर्कहीन हो जाते हैं और ऐसा सभी के साथ होता है, इसी प्रकार से जब हम क्रोधावेश में होते हैं तो उस समय हम तर्कहीन हो जाते हैं। दरअस्ल जब हम भावुक हो जाते हैं, तो उस समय हमारा सारा व्यवहार असंगठित हो जाता है क्योंकि इसका प्रभाव हमारे नाड़ी तन्त्र पर पड़ता है। जब हम गुस्से में होते हैं तो हमारा सारा नाड़ी तन्त्र काँपने लग जाता है। जब हम बार-बार क्रोधावेश होते हैं तो हम अपने नाड़ी प्रबन्ध पर चोट कर रहे होते हैं यानि कि हम उसे घायल कर रहे होते हैं। इसीलिए मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि अपने गुस्से को बाहर निकाल दो लेकिन यह बात भी सत्य है कि यदि तुम गुस्से को विधिपूर्वक बाहर नहीं निकालोगे तो वह लाभकारी नहीं होगा। जब हम गुस्से में होते हैं तो इसका प्रभाव नाड़ी प्रबन्ध पर बहुत बुरा पड़ता है। यह हमारी शारीरिक समानता को समाप्त कर देता है। जब हम गुस्से में होते हैं तो हमारे अन्दर से हमारी शारीरिक समानता इसलिए नहीं रह पाती है क्योंकि हमारे मन की शक्तियों से सम्बन्ध टूट जाता है और इसीलिए संगठनहीनता आ जाती है।

हम अपनी भावनाओं को रचनात्मक किस प्रकार से बना सकते हैं और उनका रचनात्मक प्रयोग किस प्रकार से कर सकते हैं, इसके लिए हमें अपने मनोभावों को और भावनाओं की शक्ति को समझना पड़ेगा। संस्कृत में इस शब्द को भाव कहा जाता है। वास्तव में भाव, जीवन का सार है। यदि हमारे अन्दर भाव ही न हों तो हम खुश नहीं रह सकते हैं। हम अपने आचार व्यवहार में चाहे कितने भी अधिक निपुण क्यों न हों, मानसिक तौर पर हम चाहे कितने भी अधिक खुश क्यों न हों लेकिन सत्य बात यह है कि यदि हम भावों से रहित हैं तो हम जीवन का आनन्द नहीं ले सकते हैं। भावों के बिना हम यह नहीं जान सकते हैं कि जीवन रूपी फूल कैसे खिलता है और किस प्रकार से मानवता को भी खुशी व उल्लास की आवश्यकता है। यदि मनोवैज्ञानिक भावों को समझने लग पड़ें यानि कि वे सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार के भावों को समझने लग पड़ें और इन्हें समझने के बाद अपने मरीजों को देखने लग पड़ें तो उन्हें बहुत सफलता ही नहीं अपितु बहुत अधिक प्राप्ति हो सकती है।

अतः हम यह कैसे जान सकते हैं, कैसे समझ सकते हैं? हम अपने अन्दर को कैसे जान सकते हैं। हमें अपने अन्दर को जानने के लिए अपनी क्रिया तथा अपने कार्यों को समझना पड़ेगा। हमारे भाव, सदैव हमारे कार्यों के माध्यम से हमारी क्रियाओं के माध्यम से प्रकट होते हैं। जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु।। (अंग - 134) यह कर्मों का नियम है और सारे मजहबों में इसी तरह से समझाया गया है तथा सारे ग्रन्थों में इसी प्रकार से बताया गया है। कारण तथा उसके परिणाम व प्रभाव ये वास्तव में जुड़वां नियम हैं जो कि हमारे जीवन का आधार हैं। ये उसी प्रकार से हैं जैसे कि एक ही सिक्के के दो पहलू होते हैं, हम इस सत्य से मुनकर नहीं हो सकते हैं। भले ही बहुत सारे दार्शनिक इस बात को ढकने की कोशिश करते हैं लेकिन इससे दूर हो पाना असम्भव है। कोई इन्सान किस प्रकार का है, यह उसके आचार व व्यवहार से जाना जा सकता है इसलिए हम समाचित मनुष्य को देख कर व उस पर विचार करके बहुत कुछ सीख सकते हैं कि वह किस प्रकार से विचरण करता है। वह किस प्रकार से रहता है, किस प्रकार से उठता-बैठता है, किस प्रकार से चलता है, किस प्रकार से कार्य करता है, इन सब बातों को देखकर हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। हम अपने व्यवहार व आचार को देखकर अपने विचारों को जान सकते हैं, अपने भावनाओं को जान सकते हैं। यह कार्य एक विचार की तरह से ही है क्योंकि एक कार्य एक विचार ही होता है। वास्तव में हमारे सारे व्यक्तित्व का विश्लेषण कुछ मिनटों में ही हमारे

कामकाज व हमारे व्यवहार से ही हो जाता है, हमारी सारी क्रियाओं को कौन नियन्त्रित कर रहा है? किस प्रकार से नियन्त्रित कर रहा है? हमारे मन को, हमारी सोच के ढंग को कौन नियन्त्रित कर रहा है? हमारे सोचने के ढंग को क्या होता है, हमारे ज्ञान व हमारी शिक्षा को क्या हो जाता है, जब हम अशान्त हो जाते हैं? इसलिए हमें यह जान लेना चाहिए कि भावना की शक्ति बहुत गहरी है। हमें यह भी जान लेना चाहिए कि भाव क्या हैं? और ये किस प्रकार के हैं?

इच्छा! भावना का श्रोत

भावना का मूल प्रेरक है, काम जो कि मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है। एक बार गाँधी के एक लेखक ने पूछा, मुझे एक वाक्य में बतलाओ मैं परम सत्य की प्राप्ति किस प्रकार से कर सकता हूँ। गाँधी कहने लगा धीरे-धीरे व्यवस्थित रूप से अपनी इच्छाओं को कम करो और तब तक करते रहो, जब तक कि तुम जीरो तक नहीं पहुँच सकते हो। ऐसा करके तुम सारी समस्याओं से मुक्त हो जाओगे। इस धरती पर रहते हुए इच्छाओं से मुक्त होकर रहना असम्भव नहीं। अत: गाँधी जी कहने लगे, अपनी सारी इच्छाओं व सारे श्रोतों को सत्य की तरफ लगाओ, ऐसा करके तुम मुक्त हो जाओगे। ऐसे करने से पहले हमें यह जान लेना चाहिए कि इच्छाएं दो प्रकार की होती हैं। एक होती है सकारात्मक तथा दूसरी - नकारात्मक। हमें इन दोनों में अन्तर सीखना पड़ेगा। सकारात्मक इच्छा कौन सी है? मुझे इस बात की चेतना हो रही है, मेरी कुछेक समस्याएँ एक ही प्रकार की हैं, लेकिन मेरे अन्दर वह सामर्थ्य भी है कि मैं उन्हें ठीक कर सकता हूँ, मैं अपनी प्रारब्ध को स्वयं बना सकता हूँ, मैं अपनी समस्या को स्वयं सुलझा सकता हूँ। मेरे अन्दर सामर्थ्य है और मैं कर सकता हूँ, मेरी इच्छा है मैं कर सकता हूँ, मेरे अन्दर दृढ़ता है, मैं कर सकता हूँ, ये सब सकारात्मक इच्छा के चिन्ह हैं।

सकारात्मक इच्छा सृजनात्मक होती है, जबकि नकारात्मक इच्छा विनाशकारी होती है। नकारात्मक इच्छा, नकारात्मक वृत्ति, आदि नकारात्मक भाव का श्रोत है। मैं कुछ नहीं कर सकता हूँ, मुझे कोई प्यार ही नहीं करता है, मैं अकेला हूँ, मैंने जल्दी ही मर जाना है, मेरे बच्चों का क्या होगा? मेरे परिवार का क्या होगा? मेरे धन का क्या होगा? आदि सभी नकारात्मक बातें हैं। ये तुम्हें उदासी देती हैं। जब हम उदास होते हैं तो हमारा रक्तचाप नीचे चला जाता है। हमारा जीवन ही ठीक कार्य नहीं करता है, हमारी दाईं नाड़ी ठीक कार्य नहीं करती है, हमारे हृदय ठीक कार्य नहीं करता है, हमारा दिल व दिमाग कुछ भी ठीक कार्य नहीं करता है। यदि हम बहुत अधिक ही नकारात्मक हो जाएँ तो हमारा रक्तचाप बढ़ जाता है। यह कभी भी मत सोचो कि तुम्हारा मन, तुम्हारे शरीर पर या तुम्हारे श्वासों पर प्रभाव नहीं डालता है। यदि तुम ई.सी.जी., ई.एस.जी., ई.के.जी. अपने साथ लगाकर रखो और तुम्हें आकर कोई बताए कि तुम्हारा मित्र परलोक सिधार गया है, तुम देखोगे कि तुम्हारे श्वास मद्धम पड़ गए हैं, तुम्हारे फेफड़ों की गति एक समान नहीं रही है, तुम्हारा हृदय अशान्त हो गया है, तुम्हारा मन अशान्त हो गया है, तुम्हारी दाहिनी नाड़ी अशान्त हो जाएगी, तुम्हारी सारी पाचन शक्ति ठीक नहीं रहेगी और तुम पूरी तरह से अशान्त हो जाओगे। किसी के साथ भी इसी प्रकार से होगा। इस प्रकार ही हमारी भावना हमारे शरीर व मन को उथल पुथल कर देती है।

वास्तव में हम प्रत्येक समय संसार की सलाह मान-मान कर दुखी होते रहते हैं। यदि कोई कह देता है कि तुम बहुत सुन्दर लग रहे हो तो हम खुश हो जाते हैं। यदि कोई कह दे कि वाह! स्वामी जी! तुम तो बहुत महान हो, तुम बहुत ऊँचे हो तो फिर स्वामी जी सोचने लग जाते हैं कि शायद मैं सचमुच ही बहुत महान हूँ। लोग इस प्रकार की बातें करके बहुत अधिक भाव खाने लगते हैं और फलस्वरूप बहुत अहंकारी बन जाते हैं। यदि अखबार कहता है कि तुम बहुत बड़े हो, यदि लोग कहते हैं कि तुम तो बहुत कमाल के व्यक्ति हो, तो तुम उस बात को बिल्कुल भी मत मानो और स्वयं को देखो तथा समझो। यदि तुम अच्छे इन्सान हो, ठीक मार्ग पर चल रहे हो, किसी को दुख नहीं दे रहे हो, तरक्की कर रहे हो तो फिर तुम बड़े बन ही रहे हो। दूसरी तरफ वास्तविकता यह है कि परमात्मा ही बड़ा है, वही सत्य है, वही चेतनता का बिन्दु है, तुम बड़े नहीं हो। तुम तो उस 'बड़े' के एक यन्त्र हो, साधन हो। जिस दिन तुम यह समझ जाओगे, उस दिन संसार की सारी सालाहें पूर्णत: व्यर्थ हो जाएँगी। फिर वे तुम्हारे ऊपर कोई भी प्रभाव नहीं डाल सकेंगी। असली बात यह है कि तुम्हें संसार की सालाहें सुनने की, उनके विचार सुनने की आदत पड़ चुकी है, जो कि ठीक बात नहीं है। तुम बहुत सुन्दर लग रहे हो, तुम तो अजीब लग रहे हो, तुम तो बहुत ही बुरे व्यक्ति हो, तुम तो बहुत ही अच्छे व्यक्ति हो, आदि सभी विचार तुम्हारे लिए एक नकाब या एक मुखौटा बना देते हैं। यही सच्चाई है कि हम लोग न जाने कितने प्रकार के मुखौटे पहन कर बैठे हुए हैं और हमारी सारी शख्सियत इन मुखौटों का ही मिश्रण है।

आवश्यक निवेदन

आत्म मार्ग मैगज़ीन की मैंबरशिप/रिन्यूिवल या दसवंद पंजाब एंड सिंध बैंक की किसी भी शाखा द्वारा निम्नलिखित बैंक खातों में भेजी जा सकती है।

भारत (INDIA)

आत्म मार्ग मैगज़ीन की मैंबरशिप/रिन्यूिवल भेजने के लिए -

VGRMCT / Atam Marg Magazine
S/B A/C No. 12861000000003 RTGS/IFSC Code - PSIB0021286
Branch Code - C1286

दसवंद भेजने के लिए -

Vishav Gurmat Roohani Mission Charitable Trust
SB A/C No. 12861100000005 RTGS/IFSC Code - PSIB0021286
Branch Code - C1286

विदेश (ABROAD)

Vishav Gurmat Roohani Mission Charitable Trust
Punjab National Bank SB A/C No. 0779000100179603
RTGS/IFSC Code - PUNB0077900 Branch Code - 077900

यदि चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा राशि भेजनी हो तो ऊपरलिखित खातों अनुसार Gurdwara Ishar Parkash Ratwara Sahib, P.O. Mullanpur Garibdas. Distt S.A.S. Nagar (Mohali) - 140901 पर भेजने की कृपा करें। यदि Online राशि भेजनी हो तो राशि की जानकारी देते समय अपना नाम व पूरा पता मोबाइल नं. +91-98889-10777 पर SMS भेजें जी।

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि यदि आपने अभी तक आत्म मार्ग मासिक पत्रिका की सदस्यता ग्रहण नहीं की है तो आप कृप्या अधोलिखित प्रारूप पत्र को भरकर सदस्यता ग्रहण करने की कृपा करें। यदि आप पहले से ही सदस्यता ग्रहण कर चुके हैं, तो पुनर्नवीनीकरण हेतु इस प्रारूप पत्र के साथ आवश्यक चैक/ड्राफ्ट "VGRMCT/ATAM MARG MAGAZINE" के नाम पर प्रेषित करने की कृपा करें।

Subscription form ☐ नई सदस्यता ☐ पुनर्नवीनीकरण ☐ आजीवन सदस्यता

within India

Subscription Period	By Ordinary Post/Cheque	By Registered Post/Cheque
1 Year	Rs. 300/320	
3 Year	Rs. 750/770	
5 Year	Rs. 1200/1220	
Life	Rs 3000/3020	

	Annual	Life
U.S.A.	60 US$	600 US$
U.K.	40 £	400 $
Europ	50 Euro	500 Euro
Australia	80 Aus $	800 Aus $

जनवरी ☐ फरवरी ☐ मार्च ☐ अप्रैल ☐ मई ☐ जून ☐ जुलाई ☐ अगस्त ☐ सितम्बर ☐ अक्तूबर ☐ नवम्बर ☐ दिसम्बर ☐

नाम/Name पता/Address..

....

..............Pin Code............. Phone .... E-mail :..........................

सन्त वरियाम सिंह चैरिटेबल अस्पताल, रतवाड़ा साहिब

समय - सुबह 9.30 बजे से 2.00 बजे तक (रविवार से शुक्रवार)

डाक्टरों का समय - सुबह 10.00 बजे से 12.00 बजे तक

दूरभाष नं. 98786-95178, 92176-93845

डा. का नाम	विशेषज्ञ	दिन
1. डा. जसबीर कौर	जनरल मैडिसन	सोमवार
2. डा. गुरिंदर कौर कंग	एम. डी. (गाइनी)	सोमवार
3. डा. कुलदीप सिंह कंग	एम. डी. (आँखों के विशेषज्ञ)	सोमवार
4. डा. हरबंस सिंह	अस्थि रोग तथा जनरल मैडिसन	मंगलवार
5. डा. तेजिंदर सिंह	जनरल मैडिसन	मंगलवार
6. जे.पी.आई. अस्पताल मोहाली के डाक्टर	आँखों के विशेषज्ञ	मंगलवार
7. डा. जतिन्दर सिंह तथा डा. कोमलप्रीत कौर	दाँतों के विशेषज्ञ	मंगलवार
8. श्री माइकल जी	एक्स-रे विशेषज्ञ	मंगलवार तथा वीरवार
9. डा. भगत सिंह मक्कड़	जनरल मैडिसन/ई.एन.टी./ब्लॅड शूगर आदि	बुद्धवार
10. डा. जे. एस. गुजराल	जनरल मैडिसन/शिशु रोग विशेषज्ञ	बुद्धवार
11. डा. आर. एस. संधू	अस्थि रोग तथा जनरल मैडिसन	वीरवार
12. डा. संतोष अनेजा	जनरल मैडिसन	वीरवार
13. डा. एस. के. बांसल	जनरल मैडिसन	शुक्रवार
14. डा. बरिन्दर सिंह	जनरल मैडिसन तथा त्वचा रोग विशेषज्ञ, एअरो स्पेस मैडिसन	शुक्रवार
15. डा. भगत सिंह मक्कड़	जनरल मैडिसन/ई.एन.टी./ब्लॅड शूगर आदि	रविवार
16. डा. जिंदल	जनरल मैडिसन	रविवार
17. डा. गुरप्रीत कौर गिल	होम्योपैथिक	बुद्धवार
18. बीबी हरनीत कौर	फिजियोथैरेपिस्ट	सोमवार तथा शुक्रवार

-: लैबोरेटरी टैस्ट तथा अन्य सुविधाएँ :-

1. खून टैस्ट, 2. सारे खून सैल काउंट टैस्ट 3. ब्लड शुगर टैस्ट, 4, किडनी टैस्ट, 5. लीवर टैस्ट, 6. लिपिड परोफाइल टैस्ट, 7. थायराइड टैस्ट, 8. हिमोग्लोबिन टैस्ट, 9. पेशाब टैस्ट, 10. स्टूल टैस्ट, 11. ई.सी.जी., 12. एक्स-रे (क्ष-किरण)

सारे लैबोरेटरी टैस्ट आधे शुल्क पर किये जाते हैं तथा मरीज को दवाई मुफ्त दी जाती है।

प्रत्येक रविवार को अस्पताल खुला रहेगा। समय 11.00 से 1.00 बजे तक। प्रत्येक शनिवार को अस्पताल बन्द रहेगा।

विश्व गुरमत रूहानी मिशन चैरिटेबल ट्रस्ट

के मुख्य संस्थापक प्यारे महापुरुष सन्त बाबा वरियाम सिंह जी द्वारा लिखित व प्रकाशित पुस्तकें

यह पुस्तकें श्री गुरू ग्रन्थ साहब जी के गूढ़ सिद्धान्तों को सरल रूप में स्पष्ट करके जिज्ञासुओं के समक्ष प्रस्तुत करती हैं। इनकी विषय वस्तु के रूप में नाम, सेवा व स्मरण की विधियों को प्रस्तुत करते हुए जन साधारण की भाषा का अत्यन्त सरल, मार्मिक व हृदयस्पर्शी प्रयोग किया गया है। यह दुर्लभ पुस्तकें, प्रत्येक जिज्ञासु व साधक के लिए एक अमूल्य निधि के रूप में हैं। अध्यात्मिक सुख व शान्ति प्राप्त करने हेतु आप इन्हें प्राप्त करके स्वयं पढ़ें तथा अन्य श्रद्धालुजनों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें। यह सभी पुस्तकें गुरुद्वारा ईशर प्रकाश रतवाड़ा साहब में आपकी सेवार्थ उपलब्ध हैं -

हिन्दी	
1. सुरति शबद मार्ग	70/-
2. किव कुड़ै तुटै पालि	35/-
3. बात अगंम की - सात भागों में	400/-
4. किव सचिआरा होइए - भाग पहला	35/-
5. किव सचिआरा होइए - भाग दूसरा	65/-
6. किव सचिआरा होइए - भाग तीसरा	100/-
7. होवै आनन्द घणा	30/-
8. बाबाणियाँ कहानियाँ	50/-
9. सुरतिआं उपजै चाउ	40/-
10. सर्व प्रिय गुरू गोबिंद सिंह जी	10/-
11. भक्त प्रहलाद	10/-
12. अमृत फुहार	10/-
13. अगम अगोचर का मार्ग	70/-
14. जपुजी साहिब सटीक	15/-
15. अमर ज्योतियाँ	15/-
16. अमर गाथा	100/-
17. वैशाखी	10/-
18. साजन चले प्यारिआ	10/-
19. अविनाशी ज्योति - भाग 1	90/-
20. रूहानी गुलदस्ता	70/-
21. चउथै पहरि सबाह कै	60/-

English Version	Price
1. Baisakhi	Rs. 5/-
2. How Rend The Veil of Untruth	Rs. 70/-
C. Discourses on the Beyond -1	Rs 50/-
4. Discourses on the Beyond -2	Rs. 50/-
5. Discourses on the Beyond -3	Rs. 50/-
6. Discourses on the Beyond -4	Rs. 60/-
7. Discourses on the Beyond -5	Rs. 60/-
8. The way to the imperceptible	Rs. 80/-
9. The Lights Immortal	Rs. 20/-
10. Transcendental Bliss	Rs. 70/-
11. How to Know Thy Real Self-(Vol-1)	Rs. 80/-
12. How to Know Thy Real Self-(Vol-2)	Rs. 80/-
13. How to Know Thy Real Self-(Vol-3)	Rs. 110/-
14. The Dawn of Khalsa Ideals	Rs. 10/-
15. A Glimpse of His Holiness - Baba ji	Rs. 5/-
16. Divine Word Contemplation Path	Rs. 150/-
17. The Story of Immortality	Rs. 260/-
18. Why not Contemplate the Lord	Rs. 200/-

ऊपरलिखित पुस्तकें आप जी मनीआर्डर, चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा रतवाड़ा साहिब से मंगवा सकते हैं या ट्रस्ट के अकाउंट में राशि जमां करवा कर मोबाइल नं. 9417214391, 9592009106, 9417214379 पर सूचित कर सकते हैं। **Bank Name : Pb & Sind Bank, A/c Name. VGRMCT/Atam Marg Magazine, S/B A/C No. 12861000000003, RTGS/IFSC Code - PSIB0021286, Branch Code - C1286**

आत्म मार्ग रूहानी प्रचार फेरी

सन्त बाबा हरपाल सिंह जी जत्थे समेत कनाडा तथा अमेरिका प्रचार फेरी

CANADA - 4 JANUARY TO 28 JANUARY 2019

Place	Date & time	Contact
Toronto, Ontario	4th-7th January	
Gurdwara Nanaksar - Brampton 64 Timberlane Dr, Brampton, ON L6Y 4V7, Canada, Ontario	4th,5th January 6.00pm to 7.00pm	Bhai Avtar Singh +1-647-968-5039 Jatinder Kaur +1-416-277-1375 Bhai Jatinderpal Singh +1-647-720-4100
Edmonton, Alberta	7th to 20th January	Bhai Raghubir Singh +1-431-336-4555 Bhai Hardeep Singh Lall +1-780-990-6738 Bhai Malkit Singh Khabra +1-780-340-3851
Calagary Alberta	21st January	Bhai Gurmej Singh Bains +1-403-589-7311
Vancuvar, Kelowna Prine Rupert, Terrice	22nd-28th January	Bhai Paramjeet Singh +1-260-600-3072 Bhai Jasbir Singh Ranu +1-758-240-4610 Bhai Amit ji +1-604-767-4781 Bhai Harjeet Singh +1-778-987-4701

Any time you need any information or booking for program, should you contact this number
Bhai Raghubir Singh Raju
+1-431-336-4555

- : USA : -

1 February 2019 to 15 March 2019

Place	Date & time	Contact
Indiana, ohio Maryland, California	1 February 2019 to 15 February 2019	Bhai Manjit Singh +1-317-488-8831
California	16 February 2019 to 15 March 2019	Bhai Amardip Singh +1-408-393-8199

आवश्यक निवेदन - आत्म मार्ग रूहानी पत्रिका की नई सदस्यता तथा महापुरुषों द्वारा लिखित पृथक-पृथक विषयों पर आधारित पुस्तकों का विशेष प्रबन्ध करें।

विश्व गुरमति रूहानी मिशन चैरिटेबल ट्रस्ट

रतवाड़ा साहिब के वर्तमान मुखी सन्त बाबा लखबीर सिंह जी द्वारा अमेरिका में गुरमति प्रचार फेरी का कार्यक्रम

दिनांक 1 दिसम्बर से 17 दिसम्बर 2018 तक

दीवानों का कार्यक्रम

2 दिसम्बर 2018 से 9 दिसम्बर 2018

सिक्ख गुरुद्वारा साहिब सनहोजे

3636**Gurdwara Ave, San Jose, CA95148** (408.274.9373)

सम्पर्क नं.

1) भाई अमरजीत सिंह धनौता	-	+1(408)-644-3820
2) भाई जतिन्दर सिंह (chera)	-	+1(408)-460-8492
3) भाई हरी सिंह बब्बी	-	+1(408)-425-1459
4) भाई सुरिन्दर सिंह टरेसी	-	+1(209)-481-6477
5) बहन जसविन्दर कौर	-	+1(408)-903-8978
6) भाई कुलजीत सिंह न्यू जर्सी	-	+1(336)-681-4255

रतवाड़ा साहिब में महापुरुषों के प्रवचनों का कार्यक्रम

प्रत्येक रविवार रतवाड़ा साहिब - (12.00 बजे से 4.00 बजे तक)

पूर्णमाशी - 22 दिसम्बर, दिन शनिवार।

(रात्रि 07.00 बजे से 10.00 बजे तक)

संक्रान्ति - पोखि (पूस), 16 दिसम्बर, दिन इतवार (प्रातः 5.30 बजे से 8.00 बजे तक)

अमृत संचार - माह के प्रथम रविवार को दिन के 11.00 बजे होता है।

INTERNET MEDIA AND LIVE TELECAST

Website : www.ratwarasahib.in
Website : www.ratwarasahib.org
Instagram : RATWARA SAHIB (https://instagram.com/ratwara.sahib/)
You Tube : https://www.youtube.com/user/babalakhbirsingh
Facebook : https://www.facebook.com/ratwarasahib1
Twitter : https://mobile.twitter.com/ratwarasahib13
Live Audio Link 1 - https://www.awdio.com/Ratwara Sahib
Live Audio Link 2 - https://mixlr.com/ratwara-sahib
E-mail :- sratwarasahib.in@gmail.com

Contact - 9569455861, 9417912900, 9814612900

रतवाड़ा साहिब में आयोजित महान गुरमति समागम के समय कीर्तन का रसास्वादन करते हुए आनन्द में भाव-विभोर श्रद्धालुजनों की विशाल एकत्रता ।

रतवाड़ा साहिब में 'वार्षिक गुरमति समागम' के दौरान सन्त बाबा लखबीर सिंह जी संगत को कीर्तन द्वारा कृतार्थ करते हुए। मंच पर सुशोभित सन्त बाबा हरी सिंह जी - रन्धावे वाले, बाबा हरपाल सिंह जी तथा अन्य महापुरुष